धीने आपकाल पकर इसलोकसंबंधी या परलोकसंबंधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण नगवान् वीत
राग नी हे न पुरुष (हे बडे आयुवाले) गौतम ऐसा कहके आपको सब गुणों से बडा दिखलाया है,
और नी मनुष्यजन्म के प्राप्त मे और शुनकर्म के उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु
और उसके वचन का सुनना मिलजाने पर नी देव गुरु धर्म रूप तत्वपर सच्ची श्रद्धा होना बहुत दुर्लन
है, निश्चय सत्यपर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियो की नी होताहै, यह
सब मनुष्यजन्म के कम होजाने और शुनकर्म बढने से जीव को मिलते हैं, इस हेतु अशुनकर्म का क्षय और
शुनकर्म के बढाने में यत्न करना अवश्य है, अशुनकर्मका क्षय और ज्ञान को बढाने के लिये धर्म के सेवा
य और कोई नी यत्न नही है, इस हेत धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध
करने में अनेक तरह के परिश्रम करते हो कुछ काल धर्म के वास्ते नी परिश्रम करते रहो, कारण के धर्मी
पुरुष (धर्म करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता नी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और नक्ति करके आप
को धन्य मानते हैं, इतनी ऋद्धि पाके नी उन को धर्म का सेवन करना दुर्लन है और नी धर्मी को
त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिन्तामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र
घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बडी चीज है ? धर्म सेवन करने वाले का दो घडी का जीना नी
सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, नक्ष्य

श्रौर श्रजक्ष्य इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि वर्ष जीना ज्ञी निष्फल श्रौर श्रकिंचित्कर है , पशुवत् श्रपना श्रायु पूर्ण कर मरता है, इंद्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण श्रौर सुगति का कारण, जवसागर तरन के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुश्रा केवल धर्म ही है श्रौर धर्म का मूल दया "वि ना मतलब पराये दुख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति श्रौर धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है। जैनदर्शन मे दया के श्रनेक " स्वदया परदया द्रव्यदया जावदया नि श्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया श्रनुबंधदया,, जेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग रखत हैं परन्तु सर्वांशे दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही मैं स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ ज्ञी कहाता है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे जोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री श्रवश्य श्रपेक्षित होती है सामग्री होनेपर ज्ञी यथाविधि यथार्थ ए कत्रा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा पक्वान्न नहीं होता तैस ही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय, यद्यपि सर्वदर्शनो मे दयाका मान है परतु उसके स्वरूप मे फेरफार करदेने से गतप्राय (श्रर्थात् श्रकिंचित्कर वृथा) है, जव के उनका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नही जानसक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो सकै, फेरफार श्रैसा के कोई कहते हैं पशुप्राणघात श्रर्थात् पशुजन्म से छोडाना दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

गुणी न होय मयुन दूषित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो श्रैसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर देना नी दया ही है, कोइ सूक्ष्म श्रथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोइ यागि यागादिक में प्राणिवधकरने से नी पुण्य मानते हैं श्रीर कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया का उपयोग श्रन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह ज्रम हैं, श्रीर एकरीत से-श्राचारधर्म दया धर्म क्रियाधर्म श्रीर वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारों धर्मो के दान शील तप श्रीर जाव चार कारन हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीरबल होय तो तप होय, श्रीर सम्यग्ज्ञान होय तो जाव होय, यह जावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के जा वधर्म का कारन ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उस्को ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी श्रात्मधर्म की वृद्धि श्रीर संरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमा ण, चार श्रनुयोग का विचार, सप्तजंगी, षट्द्रव्यविचार, श्रादिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के-ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है श्रर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है श्रीर जरतचक्री तथा जरत महाराज वैसी श्रवस्थामें जी रहके जो कर्म विमुक्त जए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही श्रयथचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि करनेमे जी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एक स्वासोस्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

ग्रौर क्रियागुरु को पीपल के पान ग्रैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त ग्रहिसा ग्रौर सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते यह कारण ज्ञानोपार्जन के लिए ग्रवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—म ति श्रुत ग्रवधि मनपर्यव ग्रौर केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे ग्रधिकोपयोगी है क्यो कि यह पदार्थमान लोकालोक स्वमत परमत का प्रकाशक ग्रज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य ग्रौर दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश ग्राज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इस्से शुद्धात्माका आचरण ग्रासेवन ग्रनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्त्तमान मे महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, ग्रागामिकालमे पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोसे सुन ग्रनेक जीव मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्तना ग्रनु प्रेक्षा ग्रौर धर्मकथा होती है, श्रीउवाई सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी ग्रौर सवेदिनी, जिस्से तत्वमार्ग में प्रवृत्ति होय उस्को ग्राक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उस्को विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की ग्रमिलाषा होय उस्को निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उस्को सवेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री ग्ररिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमे बैठ "उपन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं ग्रौर त्रिपदी से ही गणधर द्वादशाग

गुगी न होय अपुन दुःगित होय व्याधिग्रस्तादि दोष युक्त होय तो श्रैसे प्राणीको ताढ्त्रा शरीर से मुक्तकर देना जी दया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई पाप पागानिक मे प्राणिवधकरने से जी पुराय मानते हैं श्रौर कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते हैं लेकिन यह भ्रम हैं, श्रौर एकरीत से—श्राचारधर्म दया धर्म क्रियाधर्म श्रौर वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप श्रौर जाव चार कारण हैं, जब धनबल होय तो दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीरबल होय तो तप होय, श्रौर सम्यग्ज्ञान होय तो जाव होय, यह जावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के जावधर्म का कारण ज्ञानबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उस्को ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि श्रौर संरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमान, चार अनुयोग का विचार, सप्तजंगी, षट्द्रव्यविचार, श्रादिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है श्रर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, श्रौर मरुदेवी तथा जरत महाराज वैसी श्रवस्थामें जी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही श्रवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि कर लेवे जी नष्ट नही होता वह ज्ञानी के एक स्वासोस्वास में नष्ट होसक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

भूमिका।

—०—

पन्नवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै। प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्ररूपसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्–समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्ते केवल तीर्थंकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योकी बुद्धि मे आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से यह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि मे आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाथ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थंकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै।

समवायाङ्ग मे कहे हुए पदार्थो का निरूपण इसमे है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥

कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

को रचना करते हैं (उनको सूत्र कहते हैं) इस कालमे जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान महाउपकारी है इसलिए इसकी वृद्धि और संरक्षण के हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमे जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट तथा सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बडे परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है , यही सब कारण सोच श्रीमुर्शिदाबाद निवासी श्रीराय धनपतिसिह बहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका।

—०—

परणवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै। प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्ते केवल तीर्थंकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योकी बुद्धि मे आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की बुद्धि मे आरोपण करते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थंकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की बुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै। समवायाङ्ग मे कहे हुए पदार्थो का निरूपण इस्मे है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥

कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

की रचना करते हैं (उसको सूत्र कहते हैं) इस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान महाउपकारी है इसलिए इसकी वृद्धि और संरक्षण के हेतु अवश्य यत्न करना चाहिये वर्त्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट तथा सुगम रीति को स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रंथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको देना इस्से अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है , यही सब कारण जान श्रीमुर्शिदाबाद निवासी श्रीराय धनपतिसिंह बहादुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के करने को प्रवृत्त होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर

मानक चन्द्र यती

भूमिका।

—०—

पणवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द सस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै।
प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिय (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्–समस्त दशनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्ते केवल तीर्थंकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण कर्के शिष्योकी वुद्धि मे आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोको शिष्य की वुद्धि मे आरोपण कर्ते हैं परन्तु यथाथ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थंकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यो की वुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै।
समवायाङ्ग मे कहे हुए पदार्थो का निरूपण इसमे है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यो कि कहे पदार्थो को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

[illegible] वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है इससे सार्थक है निरर्थक नहीं । ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी जीव अजीव आदिक पदार्थों के शासन (कहने) से शास्त्र है और शास्त्र की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा कण्टकशाखामर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा ॥

इसका प्रयोजन दो प्रकार है, येक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्रोतागत होने से दो प्रकार है, तहां द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य मानने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैसा के कहा है–यह द्वादशांगी कभी नहीं थी कभी नहीं है कभी न होगी ऐसा नहीं (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शास्वती है,, ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्त्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिए अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥ ॥

सूत्रकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है "कहाहै–के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो थोडेही काल में मुक्त हो जाते हैं,, अर्थ के कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये ऐसा न कहो , कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकम क विपाक का उदय से होता है " कहा है के–तीर्थंकरनामकर्म अग्लान धर्मदेशना के देने ही से भोगाजाता है,, अर्थात्–तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदेशनाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है कोई प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नहीं है । ॥

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उस्के अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता वियक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होके ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं , यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उस्से सकल कर्मक्षय और उस्से मोक्षप्राप्ति होती है , लिखा है के–सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आसक्त और क्रिया मे आसक्त होने से परमगति को पहुचते हैं ॥ इस ग्रन्थ मे अभिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है । ॥

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय भावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण , तहा पहिला नैयायिक के–जैसे कि वचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के–जैसा के सूत्रकार आगे कहैंगे , जानना चाहिये ॥

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है इससे सार्थक है निरर्थक नहीं।

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी जीव अजीव आदिक पदार्थों के शासन (कहने) से शास्त्र है और शास्त्र की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा फटकशाखामर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा ॥

यहां प्रयोजन दो प्रकार है, येक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्रो[ता]गत होने से दो प्रकार है, तहां द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैसा के कहा है—यह द्वादशांगी कधी नहीं थी कधी नहीं है कधी न होगी ऐसा नहीं (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शास्वती है,, ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिए अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्यानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है "कहाहै—के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं सो थोडेही काल में मुक्त हो जाते हैं,, ॥ अर्थ के कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के यह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नही होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये अैसा न कहो , कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है " कहा है के—तीर्थंकरनामकर्म अग्लान धर्मदेशना के देने ही से भोगाजाता है,, अर्थात्—तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदेशनाव्यापार होता है उसकर्म का यह भोगही है कोई प्रयोजन अस्मदादिवत् उनको नही है । ॥

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उस्के अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होके ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं , यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उस्से सकल कर्मक्षय और उस्से मोक्षप्राप्ति होती है , लिखा है के—सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आशक्त और क्रिया मे आशक्त होने से परमगति को पहुचते हैं ॥ इस ग्रन्थ मे अभिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है । ॥

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय भावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण , तहा पहिला नैयायिक के—जैसे कि वचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के—जैसा के सूत्रकार आगे कहेंगे , जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वय श्रेयरूप है तोभी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त मे मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि मे मङ्गल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अयगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रशिष्यों के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

छत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमे जीव अजीव आश्रव बन्ध सवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तहा प्रज्ञापना बहुवक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सज्ञक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रव (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद में सवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमें कहीं किसी की प्रज्ञापना कीहै, ॥ ॥

अथवा इसम द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंके इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नही है इन्ही पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इस्के पढने पढाने मे अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उस्को है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इस्के देने का अवसर भी यही है। इतिशम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचद यती ।

॥ विज्ञापनम् ॥

आसीद्वृषभगोत्रपृथुयशाः श्रीवीरदासाभिधस्तत्पुत्रो गुणसिन्धुरूर्जितयशास्सुमुखदीयोगुणैः । ख्यातः श्रीलप्रतापसिंहविजयी मार्योतुरीयासती तस्यश्रीमत्तापनामविदिताकुलसदीयादभूत् ॥ १ ॥ उद्धारकीर्तिसदारथमदृवधी संल्मीपते: सादर श्रीमद्राययशादुरोघनपति सिद्धीगुणग्रामणी । श्रीजैनागमसङ्ग्रहं समकरोत्सोत्कोपकर्त्यैचिरम् टीकावार्त्तकसयुतसुलिपिभिःसंमुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ तस्यापश्यसतस्यसेपुत्रपुस्तावस्यहोपुस्तका गाराश्येवुत्तपुस्तकाभिधकलान्यस्यापयत्सादरम् । कुवन्त्वागमपाठनञ्चपठनं सस्थापयःश्रावकाः स्थिरयेश्रीजिनशासनस्यचपुनर्विघ्नानधर्मेद्रये ॥ ३ ॥ नामःपञ्चदशयतस्यगुरुकःप्रज्ञापनास्योपमा नानापुस्तकपाठभेदयुतोसेसप्रमादादपि । दुर्वाच्यःसनुवृत्तिवार्त्तकघृतपाठन्तथाप्राक्तन श्रीमत्पूजित रामचन्द्रगणिभिनिर्णीतम्बुध्यामया ॥ ४ ॥ सद्योध्यासिपरिश्रमेणनितरां चार्वक्षरैर्मुद्रयते स्यात्तत्रापिचकिञ्चिदीक्षणगतोत्सादाद्दशुद्धयदि । चाग्स्या शाध्यसुदारयुक्तिविभवैर्विबुधैःकृपादृष्टिवो सिध्यासुपकृतसत्सुमस्ववचसासम्प्रार्थय सज्जनान् ॥ ५ ॥

———o———

बनारस
जैनप्रभाकर
मानकचन्द् यती

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वय स्वयं मंगल है तोभी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त मे मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अवगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रशिष्यों के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

छत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आस्रव बन्ध सवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तथा प्रज्ञापना वक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सज्ञक पाच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आस्रव (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद मे सवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमे कहीं किसी कीसी प्रज्ञापना कीहै, ॥ ॥

अथवा इसम द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंके इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नही है इन्ही पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इस्के पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उस्को है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इस्के दने का अवसर भी यही है। इतिशम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचन्द यती ।

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच २ सौ छापी जावैं और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हों सो यह अति आनन्दकी बातहै परंतु जिन महाशयों को द्रव्य दके पुस्तक लेने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञाहो तो बेचने के वास्ते पांचसौ छापी जैनबुकसुसाइटी की ओरसे भी छपवा ली जावैं यह पुस्तकें में अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अपरं शुभम्, सम्वत् । १८५३ । मि० । चै० । शु० । ११

द० जैन बुक सुसाइटी

कार्यसम्पादक

शहर मुरशीदाबाद

अजीमगंज

बुधसिंह सेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैनबुकसुसाइटी कार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि यह आपका द्रव्य देके खरीदनवाले लोगों के,लिये सुसाइटी की ओरसे पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेन की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करताहूं कि आप जैनबुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें बेचन के वास्ते छपवा लेवें परन्तु पांचसौ से अधिक छपनकी आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा ललेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टरी हुईहै, अपरं शुभम् ।

सम्वत् । १८५३ । मि० । चै० । शु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरशीदाबाद

अजीमगंज

॥ ४ ॥

॥ ए ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
ग्रह दो है, एव तेइदीय चौरिदीय में इद्रिय वढाय के कहना, चौरिंदीय को व्यञ्जनावग्रह तीन अर्थावग्रह चार है, शेष जैसे नारकी को कहा तैसे वैमानिक तक	४४५	एकेक नारकी के अनता द्रव्येंद्रिय अतीत है। वद्ध आठ है। पुरस्कृत ८।१६।१७। सख्यात असख्यात और अनत भी होते हैं	४४७
द्रव्य और भाव भेद से दो तरह की इद्रिय है, आठ द्रव्येद्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीभ स्पर्श ८, नारकी को आठों है, एव असुर यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक। पृथिवी काय द्रव्यें १ स्पर्श यावद्वनस्पति पर्यंत। द्वीन्द्रिय को द्रव्ये स्पर्श १ जिह्वा २ दो है, तेरिंद्री को दो नाक जीभ और स्पर्श ए ४ हैं। चौरिंद्री को द्रव्यें दो नेत्र दो नाक जीभ ५ स्पर्श ए ६ हैं। शेष को जैसे नारकी को कहा	४४६	एकेक असुरकुमार के कितने द्रव्येंद्रिय अतीत अनत। वद्ध ८। पुरस्कृत ८।९। सख्यात असख्यात अनत। एव स्तनितकुमार तक	४४७
		एव पृथिवीकाय अप्काय कहा, वनस्पतिकाय को वद्ध एक स्पर्श द्रव्येंद्रिय है, तेजो वायु भी ऐसे ही है भेद यह के पुरस्कृत ९। १० है, एव द्वीन्द्रिय भी भेद यह के वद्ध दो है, त्रीन्द्रिय को वद्ध चार, चौरिन्द्री को वद्ध ६ है, पचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईसान देव जैसे असुरकुमार, भेद	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत हैं भी नही भी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म लान्तक शुक्र सहस्रार आनतप्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक देव को जैसे नारकी को, पधानुसर देव को अतीत अनन्त बद्ध ८। १६। २४। संख्यात, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त बद्ध ८। पुरस्कृत ८, नारकी को द्रव्येन्द्रिय अनन्त अतीत बद्ध असख्यात पुरस्कृत अनन्त	११८	कितने द्रव्येंद्रिय अतीत, एव नारकी के असुरपणें में अतीत बद्ध पुरस्कृत द्रव्येंद्रिय कहे	११९
एव ग्रैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को बद्ध कदाचित् सख्यात असख्यात भी है, पधानुसर देव को अतीत अनन्त बद्ध और पुरस्कृत असख्य है, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त बद्ध पुरस्कृत सख्यात है, एकेक नारकी के नारकी पर्णे में		एकेक नारकी को एकेन्द्रिय पने मे कितने अतीत बद्ध पुरस्कृत हैं, द्वीन्द्रियपने में कितने हैं, त्रींदीय पने में कितने है इत्यादि निर्णय	१५०
		एव चौरिन्दिय भी पर पुरस्कृत ६। १२। १८ सख्यात असख्यात अनन्त है, पचेंदीय तिर्यचपने में जैसे असुरकुमार पने में कहा, एव मनुष्यपनें में भी पर पुरस्कृत ८। १६। २४। सख्यात असख्यात अनन्त है, वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म देव ग्रैवेयकदेवपने मे अतीत अनन्त बद्ध नही पुरस्कृत कदाचित्, एकेक नारकी को पधानुसर देवपने में अतीत नही	

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्वैमानिक एव२४ दडक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत अन्तक्रिया करै	५७५	मनुष्य दश मनुष्यणी वीश वानव्यतर दश व्यतरी पाच जोतिपी वीस इत्यादि	५७६
तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्तक्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मे जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तक्रिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनतरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न	५७५	नारकी नरक से निकल नरक मैं उपजै नही नारकी नरक से निकल असुरकुमार में उपजै नही यावत् चउरींद्रिय	५७६
अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अप्कायिक भी वनस्पति कायिक छ पचेद्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश		नारकी नरक से निकल पञ्चेद्रिय तिर्यञ्च मैं उपजै इत्यादि	५७७
		नारकी नरक से निकल व्यतर जोतिपी वैमानिक मैं उपजै नही असुरकुमार असुरकुमार से निकल नारकी मे उपजै नही असुरकुमार मर के असुरकुमार मैं उपजै नही एव यावत् स्तनितकुमार	५७९
		असुरकुमार मरके पृथिवीकाय मैं उपजै कदाचित्	

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त नी इसीतरह	५६७	एव नारकी असुरकुमार याव स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि होहै, एव वनस्पतिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिश्रदृष्टि नही है एव चौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पचेंन्द्रिय तिर्यच जोतिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक तीनो है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि हैं	५७३
छद्मस्थ आहारक प्रश्न, केवलि आहारक तथा अनाहारक काल	५६८	(१९ वा सम्यक्त पद कहा)	
ज्ञापक अज्ञापक प्रश्न, काय परित्त अपरित्त काल निर्णय	५६९	॥ २० वा पद कहते हैं ॥	
पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त सूक्ष्म बादर सज्ञी असज्ञी	५७१	नेरइय अतकिरिया यह द्वार गाथा—जीव अत क्रिया करे एव नारकी यावद्वैमानिक, नारकी नारकी में अन्तक्रिया करे नही	५७५
भवसिद्धिक अभवसिद्धिक चरम अचरम काल निर्णय	५७२	नारकी असुरकुमार में अन्तक्रिया करे एव याव	
(१८ वा पद समाप्त हुआ)			
॥ १९ कहते हैं ॥			
जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि है,			

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
एव अप् वनस्पति में भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरींद्रिय में न उपजे शेष पाच में उपजे इत्यादि	५८०	असुरकुमारचवके तीर्थंकर पणा पावे नही, एव यावत् अप्, तेजस्काय तेजस्काय से निकल तीर्थंकर होय नही धर्मसुने एव वायु भी, वनस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थंकर न हो, पञ्चेंद्रिय तिर्यञ्च मनुष्य वानव्यंतर जोतिषी अतक्रिया ही करे	५८५
जैसे पृथिवीकाय कहा तैसे अप् वनस्पति भी कहना, तेजसकाय से निकल तेजसकाय में उपजे यावत् स्तनितकुमार	५८१	सोधर्म देव चवके तीर्थंकर होय कोई एक जैसे रत्नप्रभा नारकी एव यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव	५८५
जैसे तेज तैसे वायु, बेरींद्री बेरींद्री से निकल नारकी में उपजे इत्यादि पञ्चेंद्रिय तियच पचेंद्री तियच से निकल नारकी में उपजे इहा तक	५८२	रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय, शर्कराप्रभा का न होय एव यावत्सातमी का नारकी, तिर्यच मनुष्य भी नही, भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक से होय, एव बलदेव भेद यह के शर्करापृथिवीका नारकी भी होय, एव वासु	
रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर होय, कोइ एक, एव यावत् वालुकाप्रभा पकप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर न होय धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी	५८४		

॥ ३२ ॥

॥ ३३ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
॥ ३२ कहते हैं ॥	
जीव संयत के असंयत के संयतासंयत, एवं नारकी प्रश्न, यावच्चतुरिन्द्रिय, पचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य प्रश्न एवं सिद्धतक	७६१
(३२ वा पद कहा)	
॥ ३३ कहते हैं ॥	
भेद विषय संठाणे यह गाथा	७६५
दो प्रकार अवधि कही भवप्रत्यय क्षायोपशमिक भेद से, देव नारकी को भवप्रत्यय, मनुष्य तिर्यंच को क्षायोपशमिक	७६७
नारकी जघन्य अर्द्ध कोश उत्कृष्ट चार जाणे अवधि से, रत्नप्रभा का नारकी अढाई जघन्य	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
उत्कृष्ट चार जाणे, शर्करा का जघन्य तीन उत्कृष्ट साढे, वालुका नारकी जघन्य ढेढ– उत्कृष्ट तीन, पंकप्रभा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट अढाइ, धूमप्रभा नारकी जघन्य डेढ उ० दो तमा का नारकी कोश जघन्य उत्कृष्ट डेढ, नीचे सातमी का जघन्य अर्द्ध कोश उत्कृष्ट कोश। असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टवही, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त, पचेंद्रिय तिर्यंच जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उ० असंख्यात द्वीपसमुद्र, मनुष्य अंगुल असंख्यातभाग जघन्य उत्कृष्ट असंख्यात अलोक में लोक प्रमाण खंड, वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट	७६८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
असख्यात द्वीप	७६९	नीचे का चरमान्त, तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर स्वविमान	७७०
सौधर्म देव जघन्य अगुल असख्यातभाग उ०—नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान। एव इशानदेवभी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे शर्करा का नीचला चरमान्त, एव माहेन्द्रदेव भी, ब्रह्म लान्तकदेव सिर्फ नीच तीसरी का नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्त्रार चौथीके नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत आरण अच्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का चरमान्त,-नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे छठी के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव ज० अगुल असख्यात भाग उ० सातमी के		अनुत्तरोपपातिक देव सभिन्नलोक नाडी जाणे, नारकी का अवधि क्षुरप्राकार, असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार का पल्यक के आकार, पचेंद्रिय तिर्यंच का नानाकार है, मनुष्य का भी एव, वानव्यन्तर का पटहाकार, जातिषी का झालराकार। सौधर्म देव का ऊर्द्धमृदगाकार एव अच्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुष्पचगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जवकी नाली के आकार	७७१
		नारकी यावत् स्तनितकुमार अवधि के भीतर है के बाहिर, भीतर है, पचेन्द्रिय तिर्यच या	

॥ ३४ ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देशावधि है, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पर्चेंद्रिय तिर्यच भी एव, मनुष्य दोनू। व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी। नारकी का अवधि आनुगामिक अप्रतिपाती अवस्थित है। एवं स्तनितकुमार पर्यन्त।	७७२	अणतरागयाहारे इह गाथा २	७७३
पर्चेंद्रिय तिर्यच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एव मनुष्य भी, वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी	७७३	नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता यावत् २४ दंडक मे	७७४
(३३ वा पद पूर्ण हुआ)		नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अनाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता	७७५
॥ ३४ वा पद कहते हैं ॥		नारकी जिन पुद्गलो को आहारपणे ले उनको जाणे देखे इत्यादि निर्णय	७७६
		नारकी को असख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोभीहै	७७७
		नारकी सम्यक्ताभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्यक्मिथ्यात्वाभिगमी भी है, एव वैमानिक पर्यन्त एकेंद्रिय विकलेंद्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भग	

विषय और प्रश्नादि	पत्राङ्क	विषय और प्रश्नादि	पत्राङ्क
एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदे और नही, साता असाता सातासात एव तीन प्रकार वेद नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सब जीव यावद्वैमानिक पर्यन्त	७८९	पंच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा	७११
दुख सुख मिश्र एव तीन प्रकार वेदना है, नारकी को कौन वदना यावद्वैमानिक पर्यन्त	७९०	ज्योतिपी का प्रश्न,	७१२
अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना है नारकी से चौरिन्द्री तक औपक्रमिकी है, तिर्यच मनुष्य में दो, व्यन्तर जातिपी वैमानिक को जैसे नारकी को कही तैसे कहा	७९०	(३५ या पद कहा) ॥ ३६ कहते हैं ॥ वेदन कपाय मरणे इह गाथा सग्रहणी, कितने समुद्घात कहे	७१३
निदा अनिदा भेद स दो वेदना, नारकी को कौन वदना है इत्यादि निर्णय, एव स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एव चौरिन्द्री, ति		वेदना समुद्घात असख्य त सामयिक आन्तर्मुहूर्तिक, एव आहारक तक, केवलिसमुद्घात आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात, असुरकुमार को पाच समुद्घात, एव स्तनित कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एव चौरिन्द्री पर्यंत, वायुकाय को चार समु०	७१५

॥ चतुर्थ उपांग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त हुई ॥

ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतितिविहेण । वंदामिजिणवरिंद तेलोक्कगुरुमहावीरं ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाणजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण । उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाण ॥ २ ॥ वायगवरवंसाउ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविणेऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्नं । सीसगणस्सभगवउ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्त सुयरयणदिट्ठिवायणीसंद । जहवन्नियभगवया अहमवितहवन्नइस्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा १ ठाणाइ २, वक्तव्व ३ ठिई ४ विसेसाय ५ । वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२ परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ पओगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २० ॥ २ ॥ ओगाहणसंठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६ वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

व्यपगतजरामरणभयाम् सिद्धानभिवन्द्य त्रिविधेन । वन्दे जिनवरेन्द्रं त्रैलोक्यगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानञ्जिन वरेणभव्यजननिर्वृतिकरेण । उपदर्शिताभगवता प्रज्ञापनासर्वभावानाम् ॥ २ ॥ वाचकवरवंशात्त्र योविंशतितमेनधीरपुरुषेण । दुर्द्धरधरेणमुनिना पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिमा ३ ॥ श्रुतसागराद्वीनयित्वा येनश्रुतरत्नमुत्तमदत्त । शिष्यगणायभगवते तस्मैनमआर्यश्यामाय ॥ ४ ॥ अध्ययनमिदञ्चित्रं श्रुतरत्नदृष्टिवादनिस्यन्दं । यथा वर्णितंभगवता इममपितथावर्णयिष्यामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापनास्थानानिवक्तव्यस्थितिर्विशेषश्च । व्युत्क्रान्तिश्चोच्छ्वासः सञ्ज्ञायोनिश्चचरमाणि ॥ ६ ॥ भाषाशरीरपरिणामः कषायेन्द्रियेप्रयोगश्च । लेश्याकायस्थितिर्वा सम्यक्त्वमन्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अवगाहनासंस्थान क्रियाकर्माथकर्मणः । बन्धको वेदकचैव वेदस्यबन्धक ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार श्चोपयोगीच दर्शनम् । सञ्ज्ञासंयमश्चैवा अवधिप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वेदनाच समुद्घात पद्त्रि

॥ ३७ ॥

परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किलवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया
ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा
तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जेफासपरि
णया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफा
सपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसंठाणपरि
णया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउर
संसठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भि
गंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरितावि अंबिलरसपरिणता
वि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु

तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणताः कषा-
यरसपरिणता आम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता । ये स्पर्शपरिणता स्ते ऽष्टविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुस्पर्शपरिणता गुरु
कस्पर्शपरिणता लघुकस्पर्शपरिणताः शीतस्पर्शपरिणता उष्णस्पर्शपरिणताः स्निग्धस्पर्शपरिणता रूक्षस्पर्शपरिणता । ये संस्थानपरिणता स्ते
पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा परिमण्डलसंस्थानपरिणता वृत्तसंस्थानपरिणता त्र्यस्रसंस्थानपरिणता चतुरस्रसंस्थानपरिणता आयतसंस्थानप-
रिणताः । ये वर्णतः कालवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुक
रसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुकस्पर्शपरिणता

से, यणा ३५ यतसोसमुग्घाए ३६ ॥ १ ॥ से किं तं पण्णवणा ? पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—जीवपण्णवणाय अजीवपण्णवणाय। सेकिंतं अजीवपण्णवणा? अजीवपण्णवणा २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—रूविअजीवपण्णवणा अरूविअजीवपण्णवणाय। सेकिंतं अरूविअजीवपण्णवणा? अरूविअजीवपण्णवणा दसविहा पण्णत्ता तंजहा—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए १० सेत्तंअरूविअजीवपण्णवणा॥ सेकिंतं रूविअजीवपण्णवणा रूविअजीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—वण्णपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया। जेवण्णपरिणया ते समासओ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—कालवण्ण

शरणमितम्परम्। अथ प्रज्ञापना व्याख्यायते द्विधाप्रज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च। सा कतिविधा अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापना अरूप्यजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा धर्मास्तिकायः धर्मास्तिकायस्य देशः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः अधर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायस्य देशो ऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशाः अद्धासमयः। समाप्ता ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना ॥ अथ का सा रूप्यजीवप्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्कन्धाः स्कन्धदेशाः स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः ; ते समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा वर्णपरिणता गन्धपरिणता रसपरिणताः स्पर्शपरिणता संस्थानपरिणताः। ये वर्णपरिणता स्ते समासत पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणताः शुक्लवर्णपरिणताः। ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता

॥ मूल ॥

परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अम्बिलरसपरिणतावि मधुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जेवण्णओ हालिद्दवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणतावि मधुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जेवण्णओ सुक्किलवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंध

॥ प० ॥

न्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयत संस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतः शुक्लवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणताः कषायरसपरिणता अम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता अपि । स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि सठाणतो परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जे वण्णतो नीलवण्णपरिणता ते गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणतो परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जे वण्णतो लोहियवण्णपरिणता ते गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरस

अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतः लोहितवर्णपरिणता ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतो हारिद्रवर्णपरिणता ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिग

चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जे गधओ दुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि०
नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरस
परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ
कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरि०
उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणतावि
वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जे रसओ
तित्तरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहियवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्ण
परिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप

अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये गन्धतो दुरभिगन्धपरिणता ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता
अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरस
परिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता
अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता
अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतस्तिक्तरसपरि
णताः ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्ध
तः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि

परिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लहुयफासपरिणतावि सीयफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधउ सुब्भिगंधपरिणता ते वण्णउ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणयावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासउ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि

स्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये गन्धतः सुरभिगन्धपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता

ह्यवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफास परि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ अंबिलरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि। संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ महुररसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्ण०

॥ वृ०

द्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतोऽम्लरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण
फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठा
णपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरस
परिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि
सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफा
सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिण
तावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप
रिणतावि। जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालि

लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परि
मण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि।
ये रसतः कटुकरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्ल
वर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरु
कस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता
अपि संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयत
संस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कषायरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारि

फासपरिणतावि, सठाणउ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासउ मउयफासपरि० ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासउ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाण० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासउ गरुयफासपरिणता ते वण्णउ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसउ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस

णता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो मृदुस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो गुरुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटु

लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासओ कक्खडफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, गुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरि

लवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गन्धतो सुब्भिगन्धपरि० दुब्भिगन्धप रिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासप रिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयत संठाणपरिणतावि । जेफासतो उसिणफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गन्धतो सुब्भिगन्धपरि० दुब्भिगन्धपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफा

अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्ण परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि' गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुरर सपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्श परिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि च- तुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः उष्णस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अ पि। रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः

परि० ऋणिलरसपरि० मङ्गररसपरिणतावि, फासद्घ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय
फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणद्घ परिमडलसठाणपरि०
वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० ऋायतसठाणपरिणतावि । जे फासद्घ लहुयफासपरि
णता ते वण्णद्घ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किलवण्णपरिणतावि ,
गधद्घ सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसद्घ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० ऋणिलर
सपरि० सङ्गररसपरिणतावि, फासद्घ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि०
णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणद्घ परिमडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि०
चउरससठाणपरि० ऋायतसठाणपरिणतावि। जे फासद्घ सीतफासपरिणता ते वण्णद्घ कालवण्णपरि० नी

रसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरि
णता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थान
परिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो
लघुस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरि
णता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरि
णता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि
उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण
तावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण
फासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि०
आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहित
वण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, र
सओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खड
फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास
परि० लुक्खफासपरिणतावि । जंसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता
अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता
अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुक
स्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि
त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्ण
वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरि
णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण
तावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण
फासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि०
आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहित
वण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, र
सओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खड
फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास
परि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता
अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता
अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुक
स्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि
त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्ण
वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरि
णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

तयखपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ तंससंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि०

मुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो चउरंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि , फासतो कक्खडफासपरि०

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्श

तवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो ति
त्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासप०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख
फासपरिणतावि । जे संठाणतो तंससंठाणपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि०
हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तर
सपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श
परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्ण
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता
अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्क
शस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता
अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि
रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्प
र्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्श परिणता अपि

गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा। से किं तं परंपरसिद्धअसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ? परंपरसिद्धअसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा अणेगविहा प० तंजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्तं परंपरसिद्धअसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा। सेत्तं असंसारसमावण्णजीवपण्णवणा। से किं तं संसारसमावण्णजीवपण्णवणा ? संसारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा एगिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा बेइंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा तेइंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा चउरिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा। से किं तं एगिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा ? एगिंदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुढविकाइया

अनेकसिद्धाः सिद्धाः १५। सैषा ऽनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धाः, द्विसमयसिद्धाः, त्रिसमयसिद्धाः चतुःसमयसिद्धाः, यावत् सङ्ख्येयसमयसिद्धाः, असङ्ख्येयसमयसिद्धाः अनन्तसमयसिद्धाः, सैषा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ?। संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजः कायिकाः वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः पृथिवीकायिकाः ?। पृथ्वीकायिकाः

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि ॥ सेत्त रूविअजीवपन्नवणा ॥ सेत्त अजीवपन्नवणा ॥ से किंत जीवपन्नवणा ? जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संसारसमावन्नजीवपन्नवणाय असंसारसमावन्नजीवपन्नवणाय । से किंत असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंत अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता, तंजहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२

परिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि ॥ सैषा रूप्यजीव प्रज्ञापना ॥ सैषा ऽजीव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना । ? जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा असंसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधानन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । ? अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा तीर्थसिद्धाः १ अतीर्थसिद्धाः २ तीर्थकरसिद्धाः ३ अतीर्थकरसिद्धाः ४ स्वयंबुद्धसिद्धाः ५ प्रत्येकबुद्धसिद्धाः ६ बुद्धबोधितसिद्धाः ७ स्त्रीलिङ्गसिद्धाः, ८ पुरुषलिङ्गसिद्धाः, ९ नपुंसकलिङ्गसिद्धाः, १० स्वलिङ्गसिद्धाः ११ अन्यलिङ्गसिद्धाः १२ गृहिलिङ्गसिद्धाः १३ एकसिद्धाः १४

गिहिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्त अणतरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से त परपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा? परपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव सखेज्जसमयसिद्धा असखेज्जसमयसिद्धा अणतसमयसिद्धा, सेत्त परपरसिद्धअससारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्त अससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से कित ससारसमावन्नजीवपन्नवणा? ससारसमावन्नजीवपन्नवणा पचविहा पन्नत्ता, तजहा एगिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा चउरिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा पचिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा। से कित एगिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा? एगिदियससारसमावन्नजीवपन्नवणा पचविहा पन्नत्ता, तजहा—पुढविकाइया

अनेकलिङ्गसिद्धाः, १५। सैषा ऽनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धा द्विसमयसिद्धाः, त्रिसमयसिद्धाः चतुःसमयसिद्धाः, यावत् सख्येयसमयसिद्धाः, असख्येयसमयसिद्धाः, अनन्तसमयसिद्धाः, सैषा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजःकायिकाः, वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः पृथिवीकायिकाः? । पृथ्वीकायिकाः

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया। से किंत पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तंजहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया । से किंत सुहुमपुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य, सेत्तं सुहुमपुढविकाइया । से किंत बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सण्हबादरपुढविकाइया य खरबादर पुढविकाइया य। से किंत सण्हबादरपुढविकाइया२ सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किलमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया । सेत्तं सण्हबादरपुढविकाइया । से किंत खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुढवीयसक्करावा लुयायउवलेसिलायलोणूस । अयतंबतउयसीस रुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासा

द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः बादरपृथिवीकायिकाः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः । तदेताः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः । अथ कतिविधा बादर पृथिवीकायिकाः ? । बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः खरबादरपृथिवीकायिकाश्च । अथ कति विधाः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः ? । श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा कृष्णमृत्तिका नीलमृत्तिका लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका पनकमृत्तिकाः । तदेताः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः । अथ कतिविधाः खरबादरपृथिवीकायिकाः ? । खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुकाः उपलः शिला लवणमूषम् । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानि प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालहिङ्गुलके मनःशिला सीसकमञ्जन---म । अभ्रपटलाभ्रवालुका बादरपृथिवीकायमणिभेदाः ॥ २ ॥ गोमेदक

गजणपवाले। अब्भपडलब्भवालुय बादरकाए मणिविहाणा ॥२॥ गोमेज्जए य रुयए अंके फालिहे य लोहियक्खे य। मरगयमसारगल्ले भुयमोयग इंदनीले य ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलए सोगंधिए य बोधव्वे। चंदप्पभवेरुलिए जलकंते सूरकंते य ॥ ४ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। सेत्तं खरबादरपुढविकाइया। सेत्तं बादरपुढविकाइया॥ सेत्तं पुढविकाइया ॥ से किं तं आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमआउकाइयाय बादरआउकाइयाय। से किं तं सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुम

रुचकोऽङ्कः स्फटिकलोहिताक्षइति ॥ मरकतमसारगल्लौ भुजमोचकमिन्द्रनीलो च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहंसाः पुलकसौगन्धिकयोर्द्रव्ये ॥ चन्द्रप्रभवैडूर्यो जलकान्तः सूर्यकान्तश्च ॥ ४ ॥ ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पर्याप्तकाः, अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते ऽपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः। तत्र ये एते पर्याप्तका एतेषां वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि। योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः। त एते खरबादरपृथिवीकायिकाः। त एते बादरपृथिवीकायिकाः। त एते पृथिवीकायिकाः॥ अथ कतिविधाः अप्कायिकाः ?। अप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सूक्ष्माप्कायिकाः बादराप्कायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्माप्कायिकाः ?। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकाः, अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकाः। एते सूक्ष्माप्कायिकाः॥ अथ कतिविधा बादराप्कायिकाः ?। बादराप्कायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—अवश्याय, हिमं महिका, करको,

आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय ॥ सेत्त सुहुमआउकाइया ॥ से कित बादरआउकाइया ? बादर आउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा ओसा हिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्ने तहप्पगारा तेसमा सओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्ता एएसिणं वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ संखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थनियमा असंखेज्जा । सेत्त बादर आउकाइया ॥ सेत्त आउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमतेउ काइयाय बादरतेउकाइयाय, से कित सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्त

हरतनुः शुद्धोदकं शीतोदकम् उष्णोदकं क्षारोदकम् खट्टकोदकम् अम्लोदकं लवणोदकं, वारुणोदकं क्षीरोदकं क्षोदोदकं, रसोदकं, ये चाऽन्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च तत्र ये एते अपर्याप्तकास्ते ऽसंप्राप्ताः । तत्र ये एते पर्याप्तास्तेषां वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः । त एते बादराप्कायिकाः । त एते अप्कायिकाः ॥ अथ कतिविधास्तेजः कायिकाः ? । तेजः कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सूक्ष्मतेजः कायिका बादरतेजः कायिकाश्च । अथ कतिविधाः सूक्ष्मतेजः कायिकाः ? । सूक्ष्मतेजः कायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । त एताः सूक्ष्मतेजःकायिकाः । अथ कतिविधा बादरतेजःकायिकाः । बादरतेजःकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अङ्गारः, ज्वाला, मुर्मुरः, अर्चिः, अलातं शुद्धाग्निः, उल्का, विद्युत्, अशनिः, निर्घातः, संघर्षसमुत्थितः सूर्य

गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुहुमतेउकाइया । से किंत बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा
इंगाले जाला मुमुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणि
स्सिए, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते
अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसाएसणं फासादेसेणं सह
स्सग्गसोयिहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो
तत्थ णियमा असंखिज्जा ॥ सेत्त बादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया? वाउकाइया दुवि
हा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया? सुहुमवाउकाइया
दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय । सेत्त सुहुमवाउका
इया । से किंत बादरवाउकाइया? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा पाईणवाए पडीणवाए दाहि

तत्र ये पर्याप्तकास्ते एषा
कान्तमणिप्रसूता, ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये पर्याप्तकास्ते एषा
प्राप्ताः । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि । योनि प्रमुखाणि शतसहस्राणि
पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येया । तदेते बादरतेजःकायिका । तदेते तेजःकायिका ॥ अथ कतिविधा
वायुकायिकाः? । वायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–सूक्ष्मवायुकायिका बादरवायुकायिकाश्च । अथ कतिविधाः सूक्ष्मवायुकायिका? ।
सूक्ष्मवायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाश्च । तदेते सूक्ष्मवायुकायिका । अथ कति
विधा बादरवायुकायिकाः । बादरवायुकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–प्राचीनवायुः, प्रतीचीनवायुः, दक्षिणवायुः, उदीचीनवायुः, ऊ

णवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेवा उक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसिण वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्त बादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से किंत वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंत सुहुमवणस्सइकाइया२ दुविहा पण्णत्ता, तं० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय। सेत्त सुहुमवणस्सइकाइया। से किंत

पूर्ववायुः पश्चिमवायुः तिर्यग्वायुः विदिग्वायुः, वातोद्भ्रामः, वातोत्कलिका, वातमण्डली, उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो गुञ्जावातो झञ्झावातो संवर्तवातो घनवाततनुवातः शुद्धवातः ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । तत्र च एते अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः । तत्र च एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्यातानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकः तत्र नियमा असंख्येयाः । तदेते बादरवायुकायिकाः । तदेते वायुकायिकाः ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिकाः ? । वनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका बादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः ? । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः, तदेते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा बादरवनस्पतिकायिकाः ? बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः

यादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरवादरवणस्सइकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पण्णत्ता, तजहा रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंत रुक्खा२ दुविहा पण्णत्ता, तजहा एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंत एगट्ठिया२ अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा निंबवजंबुकोसंबसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवअरिट्ठे विभेलएहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरिणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सण्हातहसीसवायअसणेय । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवण्णीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणमूलाविअसंखिज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥

प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः, साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा वृक्षा गुच्छा गुल्मा लता वल्लयः पर्वगाश्चैव ॥ तृणवलयहरितौषधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्याः ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षाः ? । वृक्षा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा एकास्थिका बहुबीजकाश्च । अथ कतिविधाः एकास्थिकाः ? । एकास्थिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा निम्बाम्रजम्बूकोशम्बशालाङ्कोठपीलुशेलवश्च्याः ॥ सल्लकीमोचकमालकबकुलपलाशकरञ्जभेदात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिष्ठाः बिभीतकहरीतकभल्लातकाः ॥ उम्बेभरिकाक्षीरणी बोद्धव्याधातकीप्रियालौ ॥ २ ॥ पूतिकनिम्बकरञ्जाः श्लक्ष्णशिंशपाशनभेदात ॥ पुन्नागनागवृक्षौ श्रीपर्णीतथाशोकः ॥ ३ ॥ येपि चान्ये तथाप्रकारा एतेषां मूलानि असंख्येयजीवकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि । पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकास्थिकानि । उक्ता एकास्थिकाः ।

णआए उदीणआए उड्ढआए अहोयाए तिरियवाए विदिसीआए वाउब्भामेआ उक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियाआए मंडलियावाए गुंजाआए झंझावाए संवट्टयाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एएसिण वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्त बादरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से किंत वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंत सुहुमवणस्सइकाइया? दुविहा पण्णत्ता, तं० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय। सेत्त सुहुमवणस्सइकाइया। से किंत

र्ध्ववायुः अधोवायुः, तिर्यग्वायुः विदिग्वायुः वातोद्भ्रामः, वातोत्कलिका, वातमण्डली उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो; गुञ्जावातो झञ्झावातो संवर्तवातो, घनवाततनुवातः शुद्धवातः ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तकाः अपर्याप्तकाश्च। तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ताः। तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्यातानि। योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति। यत्रैक तत्र नियमा असंख्येयाः। तदेते बादरवायुकायिकाः। तदेते वायुकायिकाः॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिकाः?। वनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका बादरवनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः?। सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः, तदेते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधा बादरवनस्पतिकायिकाः? बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः

ना ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअद्दरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपत्तिली गयमारिणिकुव्वकारियाभंडी । जावइकेयइतहग जपाकुलाडासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से कित गुम्मा२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सेरियएणोमालिय कोरिंटयवंधुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जायतहसिंदुवारेय ॥१॥ जाईमोग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवासंती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चंपगजाइणवणी इयायकुंदेतहामहाजाई । एवमणेगागारा हवंतिगुम्माभुणयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्त गुम्मा ॥ से किंतं लयाओ लयाओ अणेगविहाओ पन्नताओ, तंजहा—पउमलयानागलया असोगचंपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त लयाओ ॥ से कित वल्ली२ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय

वंधूसाख्या करवीररावणमहाख्या ॥ ४ ॥ जाउलतमालपिरलीमझ मारककुब्बकारिकाभिपत्री ॥ पायककतकियूकी गवक्रपालोव्यपाङ्कास ॥ ५ ॥ येचान्य तथाप्रकारास्ते गुच्छाः । अथ केतिविधा गुल्माः ? । गुल्मा अप्यनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा सरिसनामानवमालिका कोरण्टकबन्धुजीवकमनोज्ञ ॥ मीतकरमायतरी करवीरकुब्जकीसिंदुवही ॥ १ ॥ जातीमुद्गरयूथ्या मालकायतथावासन्ती ॥ वर्तुलकच्छोलगुल्मी शीघ्रालगणिठमणदन्तिकगाय ॥ २ ॥ चम्पकजातीमारङ्गा मुचुकुन्दस्तथामहाजाय ॥ एवमनेकाकारा भवन्तिगुल्माअनेकविधाः ॥ ३ ॥ तदेते गुल्मा ॥ अथ कास्ता लताः लता अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा पद्मलतानागलता अशोकचम्पकलताचूतलता । वनवासन्तीलतास्त अतिमुक्तककुन्दउयामलता ॥ १ ॥ याश्चान्यास्तथाप्रकारास्ता लताः । अथ कास्ता वल्लयः, वल्लयोनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पुंसफलीकालिङ्गी तुम्बीत्रपुसीएर्वालुङ्की । घोषातकीपटोलीपञ्चाङ्गुलसमानवासीच ॥ १ ॥ कङ्गूलवायकुटुकी कर्कोटकीकारियल्लीसुभगा । कुयवायवल्गुलीस्या त्यापावलोपदेवदालीचा ॥ २ ॥ आस्फोटाया

सेत्तं एगट्ठिया ॥ से किं तं बहुबीयगा? २ अणेगविहा प०, तं० अत्थियतेंदुकविट्ठे अंबाडगमाउलिंगबिल्ले य आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुक्खरुक्खेय । काउंबरि कुत्थुंभरि बोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएछत्तो हसिरीसेसत्तवन्नदहिवन्ने । लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकुडुगकयंबेय ॥३॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फाय अणेगजीविया, फला बहुबीया, सेत्तं बहुबीयगा॥ सेत्तं रुक्खा॥ से किं तं गुच्छा? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—वाइंगिणिसल्लइथुंडइ य तह कच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगीय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीबिल्लीयकायमाईय । चुच्चुपडोलाकंदलि वाउच्चावत्थुलेबदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे । णिग्गुंडिअक्कतूवरि आढईचेवतलउडा

अथ कतिविधा बहुबीजकाः ? । बहुबीजका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा अस्तिकतिन्दुककपित्था आम्राटकमातुलिङ्गबिल्वाश्च ॥ आमलकपनसदाडिम अश्वत्थोदुम्बरवटाश्च ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिवृक्षौ पिप्पलीशतावरीप्लक्षाः ॥ काकोदुम्बरिकुस्तुम्बरी बोद्धव्या देवदारुश्च ॥ २ ॥ तिलकलकुचच्छत्रौघशिरीषसप्तपर्णदधिपर्णाः ॥ लोध्रधवचन्दनार्जुन नीपकुटजकदम्बाश्च ॥ ३ ॥ ये चान्ये तथाप्रकारा एतेषां मूलान्यपि असंख्येयजीविकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वगपि शाखा अपि प्रवाला अपि पत्राण्यपि प्रत्येकजीविकानि, पुष्पाण्यनेकजीविकानि फलान्यपि बहुबीजानि । उक्ता बहुबीजकाः । उक्ता वृक्षाः ॥ अथ कतिविधा गुच्छाः ? । गुच्छा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा वृन्ताकसल्लकीथुण्डकी तथा कच्छुरिजासुमनसः ॥ रूपी आढकी नीली तुलसी तथा मातुलिङ्गी च ॥ १ ॥ कुस्तुम्बरिपिप्पलिका अतसीबिल्ली च काकमाची ॥ चुच्चुपटोलकन्दलिका वाउच्चा वस्तुलबदराः ॥ २ ॥ पत्रपूरसीयपूरकाः भवति तथा यवासकश्च बोद्धव्यः ॥ निर्गुण्डी अर्कतूवरिका आढकी चैव तलपुटा ॥ ३ ॥ शणपाणकाशमर्दा आघ्रातविन्दुवारकाः ॥ मरुक

री हियसिसुयवेयस्सीरनुसे ॥ १ ॥ एरण्डेकुरुविंदे करकरसुठेतहाविन्नगूय । मञ्जरतणबुरयसिप्पिय योधव्वे सुकलितणय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से किंत वलया? वलया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—ताले तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजायतिकेयइ, कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खे, लवगरुक्खेयहोइयोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, योधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त वलया । से किंत हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—अज्जोरुहवोदाणो, हरितगतहतंदुलेज्जगतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकएहउराले फणज्जुएअज्जएयभूयणए । चोरगदमणगमरुयग सतपुप्फिंदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त हरिया । से किंत ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ, तजहा—सालीवीहीगोहूम जयकलमसूरातिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसिंदसतीणएलिया ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोदूसा । सणसरिसमूलवीया जेयावन्ने तहप्प

तियोद्धव्यः ॥ पूगफलखर्जूरः योद्धव्यीनारिकेलय ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अनेकविधाः । तद्यथा अध्यारुहवोदा हरिततण्डुलीयकगतानेकः ॥ वस्तुलपोरगमज्जार पोइवल्लीचपालङ्किका ॥ दकपीपलिदर्वी स्वस्तिकाशाकस्तथैवमण्डूकी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बिल शाकद्वयमत्रवचैव ॥ तुलसीकृष्णोरालो फणुज्जकार्यभेदेन ॥ चोरकदमनकमरुचक शतपुष्पीन्दीवरंचतथा ॥ यचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिताः ॥ अथ काता ओषधयः । ओषधयो ऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । शालीव्रीहीगोधूमा यवकलममसूरतिलमुद्गाः ॥ माषनिष्पावकुलत्थाः अतसीदकधीयकालिङ्काः ॥ १ ॥ अपसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गूरालमासकोद्रवकाः ॥ शणसरिसवमूलवीजाः येचान्ये तथाप्रकारास्ताओ

एळयालुकी । घोसातईपक्रोला पचगुलिध्यायणालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकडुइया कक्कोफ़इकारियल्लईसुत्तगा । कुयवायग्रागळीपा वावल्लीतइदेयवालीय ॥ २ ॥ ध्युफ्फोध्याध्युइमुत्तय नागळयाकरएहसूरयल्लीय सघहसुमिण सायिय जासुमणकुविदयल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियध्युग्रायल्ली वीरयिरालीजियतिगोयाळी । पाणीसामायल्ली गुजा यल्लीपयत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोल्लफुसिया गिरिकध्यइमालुयायध्युजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गळीयतह ध्यक्कर्मोदीया ॥ ५ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त यल्लीओ॥ से कित पव्वगा २ ध्युणगयिहा पण्णत्ता, तजहा इस्कूयाउस्कुयक्रये वीरुणातहइक्कक्रेयमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणळे ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कका वसेयचवसेय । उदएकुक्रएयिमए कक्रावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त पव्वगा ॥ से कित तणा ? तणा ध्युणगयिहा पण्णत्ता, तजहा—सेक्रियगतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोक्रइला । ध्युज्जुणध्युसाढए

तिमुत्तक मामसतेक्ष्मसूरवल्ली च । नपपेसुमनसोपित्र चातसुमना कुविन्दवल्लीकाः ॥ ३ ॥ मुद्विकाम्बावल्ली वीरविरालीमपल्लीमीपासी । पाठी श्यामावल्ली गुञ्जावल्लीवत्याकी ॥ ४ ॥ सेपवतीपद्मिमोत्रा पुरसीगिरिकाविमासुकाञ्जनकी । द्विपुष्पकागविमोगरो तथैवचाम्पाकुशोदीकाः ॥ ५ ॥ या चाम्यास्तथा प्रकारास्ता वल्लयः । अथ के ते पर्वगा' पर्वगा अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा—इक्षुरिक्षुवाटिका वीरणीतथा इक्कामासच ॥ सुण्ठी सरेपवेत्रा तिमिरावतपोरनपासाच ॥ १ ॥ वंशोवेणूकनकाः कङ्कावंशतयैवचवंशः ॥ उदककुठकविमुकाः कण्ठावेलयकल्याणी ॥ २ ॥ येचान्ये त थामकास्ते पर्वगाः ॥ अथ कानि तृणानि तृणानि अनेकविधानि प्रज्ञप्तानि । तद्यथा—एरण्डः कुरुविन्दः करकवुण्ठीतथाविभङ्गुच ॥ मधुरवणु रकतथ्य मेरातवोर्ण्यचमुञ्चवन् ॥ १ ॥ यानिचान्यानि तथा प्रकाराणि तानि तृणानि । अथ कतिविधा वलयाः ? । वलया अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा तालतमालतक्को तत्कालितक्कारिकाचारकस्तचार ॥ चरतचासिनीकिवसी ॥ १ ॥ पूगफलोश्रिहूतको

री हियसिसुयवेयखीरजुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभंगूय । मझुरतणछुरयसिप्पिय योधव्वे सुंकलितणय ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से किंत वलया? वलया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—ताले तमालतक्कालि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजायतिकेयड, कदलितहपउमरुक्खेय ॥ १ ॥ जुयरुक्खहिंगुरुक्खे, लवगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त वलया । से किंत हरिया ? हरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोदाणे, हरितगतहतंदुलेज्जगतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणज्जुएअज्जएयभूयणए । चोरगदमणगमरुयग सतपुप्फिंदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त हरिया । से किंत ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—सालीवीहीगोहूम जवकलमसूरातिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसिंदसतीणएलिंघा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरहकोदूसा । सणसरिसमूलवीया जेयावण्णे तहप्प

तिबोद्धव्यः ॥ पूगफलंखर्जूरः बोद्धव्योनारिकेलय ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अप्यनेकविधाः । तद्यथा अध्यारूहोवोदा हरिततण्डुलोअलगतालेका ॥ वत्थुलपौरगमज्जार पौइवल्लीचपालक्का ॥ दकपीपलिआदर्वी स्वस्तिकाशाकस्तथैवमंडूकी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बिल शाकश्चयमलश्चैव ॥ तुलसोकष्णोरालो फणुनमूर्चमेदेन ॥ चोरदमनकपत्र शतपुष्पीन्दीवरंचतथा ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिताः ॥ अथ कास्ता औषधयः । औषधयो ऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । शालोव्रीहीगोधूमा यवकलममसूरतिलमुद्गाः ॥ मासनिष्पावकुलत्थाः अलसीदशवीयकालिङ्गाः ॥ १ ॥ अयसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गूरालमासकोद्रवकाः ॥ शणसरिसयमूलवीजाः येचान्ये तथाप्रकारास्ताओ

॥ सूत्र ॥

। अ० ॥

एठयालुकी । घोसातईपफोठा पचंगुठिश्चायणालीय ॥ १ ॥ फगूलयाफदुडया फक्कोफडफारियल्लइंगुजगा । कुयवायवागलीपा थायल्लीतहदेयदालीय ॥ २ ॥ श्चप्फोश्चाश्चइमुत्तय नागलयाफएहगूरवल्लीय सघट्टसुमिग सायिय जासुमणकुयिंदयल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियश्चंयायल्ली धीरयिराळीजियतिगोयाळी । पाणीमामायल्ली गुजा यल्लीपयत्याणी ॥ ४ ॥ ससयिदुगोसफुसिया गिरिफणाइमालुपायश्चजणई । दहफुडपफोगलिमा गठीपतह श्चक्कार्योंडीया ॥ ५ ॥ जेयायणो तहप्पगारा सेत्तं यल्लीउ॥ से फित पव्वगा २ श्चणगयिहा पणत्ता, तजहा इफ्कूयाडफुयफये धीरुणातहडक्काफेपमासेय । सुठेसरेयथेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ यसेयेलूफणए फफा यसेपयययसेय । उदएफुफएयिमए फफायेलूपफल्लाणे ॥ २ ॥ जेयायणो तहप्पगारा सेत्त पव्वगा ॥ से फित तणा ? तणा श्चणेगयिहा पणत्ता, तजहा—सेफियगतियहोतिय दब्भकुसेपव्वएयपोफइला । श्चज्जुणश्चसाढए

तिमुथच मामततेकप्पमूरवल्ली च । सचर्पेमुममणोपिच आतमुमना।कुविन्दवल्लीका: ॥ ३ ॥ मुद्विकाम्बावल्ली धीरविरालीजयन्तीगोपाली । पाथी श्यामावल्ली गुञ्जावल्लीचवत्यानी ॥ ४ ॥ सेपवतीचद्विगोश्र फुरमीगिरिकर्विमासुकाञ्जनकी । द्विपुष्पकागविमोगरो तथैवचाम्बाहुलोदीका: ॥ ५ ॥ मा चाम्यान्यथा प्रकारास्ता वल्लय: । अथ के ते पर्वका: पर्वका अनेकविधा: प्रज्ञप्तास्तद्यथा-इक्षुरिक्षुवाटिका वीरणीतथा इक्कडमाष ॥ सुण्ठी शरेयवेत्रा तिमिराशतपोरनलाश्च ॥ १ ॥ वंशोवेणूकनका: कर्काऽवंशश्चापवंश: ॥ उदकूष्ठकविमुका: कण्डाबेलकल्याणो ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते पर्वका: ॥ अथ कानि तृणानि तृणानि अनेकविधानि प्रज्ञप्तानि । तद्यथा-सेण्टक भक्तिकं होत्रिक दर्भ: कुशपर्वकपोटलाविमूल ॥ अर्जुनाषाढ रोहितांशु शुकवेदक्षीरबुसमेरण्ड ॥ १ ॥ ...

साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिभगा अस्सकण्णी सिहकण्णी सिउंढीतत्तोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुडरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिट्टीया हलिद्दासिंगवेरेय, आलुग्गमूलएइ यकबूय कण्णुकडूमज्जपोगलइतहेव मज्जसिंगी विरुहा सप्पसुगंधा छिन्नरुहा चेव बीयरुहा पाढामियवालुकी मज्जररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति चंडिकिहाति यावरा मासपण्णी मुग्गपण्णि जीवियरिसिके य रेणुया चेव काउली खीरकाउली तया भंगीणहीइयाकिमिरासिभद्दमुत्थाणंगलइपेलुगाईय किण्हे पउले य हढेहरतणुया चेव लोयाणी कण्हकंदेवज्जे सूरणकं तहेव खल्लूडे एए अणतजीवा जेयावण्णे तहाविहा ॥ तणमूलकंदमूलो वंसीमूलित्तियावरे । संखेज्ज मसंखिज्जा बोधव्वाणतजीवाय ॥१॥ सिंघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउ होंति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोण्णियजीवाइं फले

तद्यथा-पनक, पनक सेवाल, लोही थोहू, स्तिभका । अश्वकर्णी सिंहकर्णी सउंढि लतो, मुसुंढी ॥ १ ॥ तसमन्दकुन्द रिविसवीरविराली त थाकारता । हारिद्रश्रृंगवेर आलूमूलीकन्दु कण्मकन्दमधुपोलेव ॥ २ ॥ मधुमश्रृंगीविरुहो सर्पसुगन्धिच्छिन्नरुहा । बीजरुहापालाली मधुररसाराजलता ॥ ३ पद्मामाढरिदान्ती चंडीकिंपातिचावरामासपर्णी । मुद्गपर्णीजीवरसिका रेणुकाकाकोलीक्षीरकाकोली ॥४॥ भृङ्गीनमराशिर्भद्रमुस्ता गु लगुलयवालुका च । कृष्णपीलकहरकन्दी तथाहरतनुलोपाली ॥ ५ ॥ कृष्णकन्दवज्रकन्दौ सूरणकन्दःखल्लूकः । एते अनन्तजीवा ये चाप्यन्ये तथा भूताः ॥ ६ ॥ तृणमूलकन्दमूला वंशीमूलास्तथापरे । संख्येया असंख्येया बोद्धव्यानन्तथापरे ॥ १ ॥ शृङ्गाटकस्सगुच्छोप्य नेकजीवोभवतिविज्ञेयः । पत्राः प्रत्येकजीवा द्वौजीवौफलस्थितौ ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यभग्नस्य समोभङ्गस्तुदृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तन्मूले येचाप्यन्येतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तन्मूले येचाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

गारा सेत्तं वलया । से किं तं जलरुहा? जलरुहा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंबुया हढे कसेरुया कच्छभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभए सोगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयपत्ते सहस्सपत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरसे भिसे भिसमुणाले पोक्खले पोक्खलत्थिभुए जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं जलरुहा । से किं तं कुहणा? कुहणा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के दव्वहलिया सफाए सज्झाए छत्तोए वंसीणहिया कुरए, जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा । णाणाविहसंठाणा रुक्खाणं एगजीविया पत्ता । खंधोवि एगजीवो तालसरलनालिएरीणं ॥ १ ॥ जह सगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साण वट्टिया वट्टी । पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥ २ ॥ जह वा तिलपप्पडिया बहुएहिं तिलेहिं संहता संती । पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किं तं

वलयाः ॥ अथ कतिविधा जलरुहाः ? । जलरुहा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—उदकं अवकं पनकं शैवालं कलम्बुकं हढं ॥ कसेरुकाः कच्छभाणिकाः उत्पलपद्मकुमुदानि ॥ १ ॥ नलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्रकल्हारकोकनदारविन्दतामरस बिसबिसमृणाल पुष्कर पुष्करास्तिभेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते जलरुहाः । अथ कतिविधाः कुहणाः । कुहणा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—आय काय, कुहण कुणक्क द्रव्यहलिका, शफाय सज्झाय छत्रोक वंशीनहिका कुरकभेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते कुहणाः । नानाविधसंस्थाना वृक्षाणां एकजीविकाः पत्राः । स्कन्धोऽपि एकजीवोत्पलसरलनारिकेलीनाम् ॥ १ ॥ यथा सकलसर्षपाणां श्लेषमिश्राणां वर्तिता वर्तिः । प्रत्येकशरीराणां तथाभवन्ति शरीरसंघाताः ॥ २ ॥ यथा वा तिलपर्पटिका बहुभिस्तिलैः संहता सती । प्रत्येकशरीराणां तथा भवन्ति शरीरसंघाताः ॥ ३ ॥ तदेतत् प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः ।

हीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीवेउसेखघे जेयावक्षेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नग्गाए हीरोन्नगेपदीसई । परि
न्नजीवातयासाउ जेयावक्षातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले
जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीवेपवालेउ जेयावन्नेतहाविहा
६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीवेउसेपत्ते जेयावक्षेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नग्ग
स्स हीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीस
ई । परिन्नजीवेफलेसेउ जेयावक्षेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीवेउसे
वीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाद छल्लीवहलतरीन्नवे । अणतजीवाउसाछल्ली जायाव

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तस्कन्दे
ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त स्कन्ध ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भ
ग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास
शाले येचाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यस्प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तत्र स्यु ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्र ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पु
ष्पे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यस्फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फले ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्बीजे ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यामस्त्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त
त्वचि या चाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो त्वस्त्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्त जीवास्त्वचि ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य शा

न्नणिया ॥२॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स समोन्नगोयदीसए। छ्रणतजीवेउसेमूले जेयाग्रगोतहायिहा ॥१॥ जस्सकंदस्स न्नग्गस्स समोन्नगायदीसइ । छ्रणतजीवेउसेकदे जेयायन्नेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नग्गस्स समोन्नगोय दीसई । छ्रणतजीवेउमखधे जेयायन्नेतहायिहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नग्गाए समोन्नगोयदीमइ । छ्रणतजीया तयासाउ जेयायन्नातहायिहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई छ्रणतजीवेउसेसाले जेयायन्ने तहायिहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । छ्रणतजीवेपवालेसे जेयायन्नातहायिहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई। छ्रणतजीवउसेपत्ते जेयायन्नेतहायिहा ॥७॥ जस्सपुप्फस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । छ्रणतजीवेउसपुप्फे जेयायन्नेतहायिहा ॥८॥ जस्सफलस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । छ्रणतजीवफलेसेउ जेयायन्नेतहायिहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सन्नग्गस्स समोन्नगोपदीसई । छ्रणतजीवेउनवीए जेयायन्नेतहायिहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्त ।विउसेमूले जेयायन्नेतहायिहा १ जस्सकंदस्सन्नग्गस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकदे जेयायन्नेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नग्गस्स

सामूल पवाप्यय तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य शाखा भग्नस्य च समो भङ्गादि दृश्यते ॥ अनन्तजीवा तत्रत्या ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा तत्रत्यास्तु ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यस्य प्रवालस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रवाले अनन्तजीवाः सु ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा तत्पत्रे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा तत्पुष्पे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यस्य फलस्य च भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तु फले ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा तद्बीजे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य भग्न

हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेउसेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएजगाए हीरोज्जगेपदीसई । परि
हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले
त्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सजग्गस्स हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेपयालेउ जेयावन्नेतहाविहा
जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सजग्गस्स हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सजग्ग
६ ॥ जस्सपत्तस्सजग्गस्स हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सजग्गस्स हीरोज्जगेपदीस
स्स हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सजग्गस्स हीरोज्जगेपदीसई । परित्तजीवेउसे
ई । परित्तजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्समूलस्सकठाढे छल्लीबहलतरीजवे । अणतजीवाउसाछल्ली जायाव
बीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाढे छल्लीबहलतरीजवे । अणतजीवाउसाछल्ली जायाव

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये चान्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्दस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्स्कन्धे
ये चान्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त स्कन्ध य वान्यग्य तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भ
ग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये चान्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त
च्छाले येचान्यग्य तथाविधा ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येक जीवास्तत्र एतु यें चान्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यत ॥ प्रत्यकजीवा स्तत्पत्र ये चान्यग्य तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्यकजीवा स्तत्पु
ष्प ये चान्यग्य तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यत ॥ प्रत्येकजीवास्तु फल य वान्यग्य तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्बीज ये चान्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यास्तत्त्वक बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त
त्वचि या चान्या तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो त्स्तत्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्त जीवास्तत्त्वचि ये चान्य तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य शा

यातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाओ छल्लीबहलतरीभवे। थणतजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा २ ॥ जस्सखंधस्सकठाओ छल्लीबहलतरीभवे । थणतजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाओ छल्लीबहलतरीभवे थणतजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाओ छल्लीतणुयरीभवे। परित्तजीवाउसाछल्ली जायायथातहाविहा ॥ ४ ॥ चक्कागभज्जमाणस्स गंठीचुण्णघणोभवे । पुढवीसरिसभेएणअणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिरागपत्तं सच्छीरजंचहोइनिच्छीरं । जंपियपणठसंधि अणंतजीवंवियाणाहि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयाथलया

यस्य काष्ठेभ्य स्त्वक्तु बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्तास्त्वपि या चान्यस्या सथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येक जीवास्त्वचि तु या चान्यस्या तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्त्वचितु याचान्यस्यास्तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या चान्यस्या तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य शालस्य काष्ठेभ्यो त्वक्तनुतरी म ता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या चान्यस्या तथाविधाः ॥ ४ ॥ चक्राद्भज्यमानस्य ग्रन्थिश्चूर्णघनाभवेत् ॥ पृथिवी सदृश भेदेन अनन्त जीव विजा नीयात् ॥ गूढ शिराक पत्रं सक्षीरं यच्च निःक्षीरम् ॥ यदपि प्रणष्टसन्धि अनन्तजीवं विजानीयात् ॥ पुष्पं जलजं स्थलजं वृन्तबद्धमनालबद्धं च । संख्येय मसंख्येयमनन्तजीवञ्च ॥ १ ॥ येकेचिन्नालबद्धाः पुष्पाःसंख्येयजीविकास्तु । स्निग्धाश्चानन्तजीवा येचान्येतथाविधास्तु ॥ ४ ॥ पद्मेत्पलिकन्दो अन्तरकन्दस्तथैवझिल्ली च । एतेऽनन्तजीवा एकोजीवोबिसमृणाले ॥ ५ ॥ पलाण्डुलशुनकन्दौ कन्दुकुस्तुम्बकोपयोहन्तो । एवमन्येच

यिठयहासणालियरुाय । सखिज्जमसखेज्जा योघव्वाणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियावद्धा पुष्फासखेज्जजी
यिया । णिज्जयाञ्णतजीया जयावन्नेतहायिहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलि किठ छुतरकठनहेवज्झिली य । एते
ञ्णतजीवा एगोजीवोविसमुणाले ॥ ५ ॥ पलठूलहसुणकंदय कंदलीयक्कुयए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेत
हायिहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणालिणाण सुभगनोगधियाणय । छुरविंदकुकणाण सतयत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥
यिटयाहिरपत्ता यकाणियाचेवएजीवस्स । छुम्भितरगपत्ता पत्तेयकेसरामिजा ॥ ८ ॥ वगुनलइक्कुवाणिय
समासइक्कूयडक्कोरके । फरकरसु ठयिहगु तणाणतह्वपव्वगाणच ॥ ९ ॥ छुच्छि पव्वूपलिमा फत्तयएगस्सहो
तिजीयस्स । पत्तेयपत्ताइ पुप्फाइञ्णगजायाइ ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिग तुवतउसलुवालुक । घोसाल्य
पकाल तिदूयचेवतिदूस ॥ ११ ॥ वटमसकडाह एयाइहवतिएगजीवस्स । पत्तयपत्ताइ सकसरमकेसरामिजा
१२ ॥ सप्फाएसज्झाए उव्वेहलियायकुहणकुडुक्के । एएञ्णतजीया कुडुक्केहोइभयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिञ्भूएवीए

जीवा येषाप्यम्येतथाप्रकारास्ते ॥ ६ ॥ पद्मोत्पलनालानां सुभगसौगन्धिकानां च यादृशम् । अरविन्दकोकनदानां शतपत्रसहस्रपत्राणाम् ॥७॥ वलयवासपत्रबहिका येकजीवानि । याम्यन्तरपत्र प्रत्येकमसम्भाव ॥ ८ ॥ वेणुनडइक्षुवाटिसममासइक्कडरपत्रा । करकरसुपिठविहङ्ग तृणानिचपर्वगानिस्युः ॥ ९ ॥ याप्यपर्वप्रलिमो एकपत्रमेकजीवानि । पत्राणि प्रत्येकजीवस्य नेकजीवानिपुष्पाणि ॥ १० ॥ पुष्पफलकालिङ्गं तुम्ब त्रपुषमलविर्भटचैव । घोषातकपटोल तिन्दूकचैवातिन्दूसम् ॥ ११ ॥ वन्तसमांसकटाह एतानिभवन्तिएकजीवस्य । प्रत्येकपत्राणि सकेसराकेसरा मिञ्जा ॥ १२ ॥ सप्फाएसज्झाए उव्वेहलियाकुहणकुडुक्क । एतेऽनन्तजीवा कुडुक्केभवनाविकल्पना च ॥ १३ ॥ बीजयथामूल जीवाथ्यस्मात्तस्य वास्यो वा । यावत्मूलजीवः सोपिहिपत्रप्रथमतयेति ॥ १४ ॥ सर्वोपिकिसलयःखलु उद्गममान प्रत्येकमनन्तजीवा

जीयोवक्कमइसोवथ्योवा । जोविथ्मूलेजीयो सोयिऊपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलउखलु उग्गम माणोअणतउंनणिउं । सोचेवविवड्ढतो होइपरित्तोअणतोवा ॥ १५ ॥ समयवक्कताण समयंतेसिंसरीरणि व्वत्ती । समयंआणग्गहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण बहूणसाहारणाणतचेव । जबहु याणगहण समासउतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणच । साहारणजीयाण सा हारणलक्खणएय ॥ १८ ॥ जहअयगोलोधतो जाउंतत्ततवणिज्जसकासो । सव्वोअगणिपरिणउ णिउयजीवे तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोणहतिणहव सखेज्जाणयपासिउसक्का । दीसतिसरीराइं णिउयजीयाणणताण २० लोगागासपएस णिउयजीवठवेहिएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवंतिलोयाअणताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे परित्तजीवठविसुएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवंतिलोगाअसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसख भागमित्ताउ । लोगाअसखाअपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिसरीरेहि पच्चक्खंतेपरूवियाजीवा

ता ॥ १५ ॥ समकव्युत्कान्तानां समकंतेषांशरीरनिर्वृत्तिः । समकमाणापान ग्रहणमुच्छ्वासनिश्वासौ ॥ १६ ॥ एकस्ययद्ग्रहणं तद्बहूनांसाधारणा नाच । यद्बहूनांग्रहणं समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहारः प्राणापानादिग्रहणं सर्वं साधारणजीवानां साधारणलक्षणमेतत् ॥ १८ ॥ यथायोगोलोऽग्निना ध्मातस्तप्ततपनीयसङ्काशः । सर्वोऽग्निपरिणतःएवं जानीहिनिगोदजीवानेवम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोस्त्रयाणां संख्येयानांवोपल भ्यानि । शरीराणि नखलु दृश्यन्ते अनन्तानांनिगोदजीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशे निगोदजीवंस्थापयैकैकम् । एवम्मीयमाना भवन्तिलोकाअनन्ता सु ॥ २१ ॥ लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकजीवंस्थापयैकैकम् । एवम्मीयमाना भवन्तिलोकाअसङ्ख्याताः ॥ २२ ॥ पर्याप्तप्रत्येकजीवाः प्रतरस्यासङ्ख्यभागमि ता । असङ्ख्यलोकाअपर्याप्ताः साधारणाअनन्ताः ॥ २३ ॥ एभिःशरीरैः प्रत्यक्षंतेप्ररूपिताजीवाः । सूक्ष्माआज्ञाग्राह्याः चक्षुस्पर्शंनतयान्ति ॥ २४ ॥

सुक्षमाश्चाणागिज्जा चक्कुप्फासनतेइति ॥ २१ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, त० पज्जत्तगा य श्रपज्जत्तगाय, तत्थण जे ते श्रपज्जत्तगा तेण श्रसपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेसिण वन्ना देसण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए श्रपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय श्रसखिज्जा सियश्रणता एएसिण इमाओ गाहाओ श्रणुगतव्वाओ तजहा–कदायकदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणाणिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिघाडे हढेयसवालकिण्हएपणए। श्रवएयकच्छभाणी कदुक्केकूणवीसइमे ॥ २ ॥ तयछल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्झबीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया । सेत्तबादरवणस्सइकाइया॥ सेत्त एगिंदिया॥ से कित बेइंदिया? बेइंदिया श्रणेगविहा पण्णत्ता, तजहा–पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

येपिचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च, तत्र येऽपर्याप्तकास्ते ऽसम्प्राप्ताः, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषा वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि (भेदाः) सख्येयानि योनिप्रमुखशतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रमन्ते यत्रैकस्तत्र स्यात्सख्येयाः स्यादसख्येयाः स्यादनन्ताः। एतेषामिमा गाथा अनुगन्तव्या तद्यथा–कन्दाश्चकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचापरे। गुच्छागुल्माश्चवल्लयश्च वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि हढसवालकृष्णपनकाश्च। अवनकाश्चकच्छभाणि कन्दुकयोनविंशतिकः ॥ २ ॥ त्वक्छल्लिप्रवालेषु पत्रपुष्पफलेषुच। मूलाग्रमध्यबीजेषु योनिःकस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ एताः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका । एता बादरवनस्पतिकायिका । समाप्तानि एकेन्द्रियाणि । अथ के ते द्वीन्द्रिया द्वीन्द्रिया अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कृमिकाः कुक्षिकृमि

इंमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खंधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कल्लुयावासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा प०, त०—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एएसिणं एयमादियाणं बेइंदियाणं पज्जत्त पज्जत्ताणं सत्तजाइकुलकोडी जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ॥ सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किंतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—ओवइया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उद्देसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पाडा तणहारा कट्ठहारा पत्तहारा मालुया तणविंटिया पत्तविंटिया पुप्फविंटिया फलविंटिया बीयविंटिया तेंदुरणमिंजिया तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाहुया लहुया सु

का: नवहृयणा मोसोमा लहुसा घनकुल्लणा वल्लीमरा: सूचीमुखा गाजलौका: जलौका अलसा: [illegible] मातृमवा गवा संखा: सखा करा यो
[illegible] मौक्तिकं मुक्तापत्रासा एकोपपुला द्विपोवपुल। [illegible] सपुखा मायाखा सारका [illegible] समुद्रलीना: यथाप्यन्य तथाप्रकारा
सर्वे ते सम्मूर्च्छिमा नपुंसकास्त समासतो द्विविधा: प्रज्ञप्ता:। तद्यथा पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च। एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तका
प्रकादीनां सप्तजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम्। तदेतत् द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना:। अथ कास्ता
त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा: प्रज्ञप्ता:। तद्यथा औपयिका रोहिणिका कुन्थवः पिपीलिका
उद्देशका उद्देहिका उत्कलिका उत्पादा उत्पाटा तृणाहारा: काष्ठाहारा: मूलाहारा: पत्राहारा: [illegible] पुष्पवृन्तिका फलवृन्तिका बीजवृन्तिका [illegible]
[illegible] त्रपुसमिञ्जिका: कर्पासास्थिमिञ्जिका हिल्लिका झिल्लिका झिङ्गिरिका किङ्गिरिटा बाहुका लघुका सुभगा: सौवस्तिका: शुकवृन्ता: इन्द्रकायिका

न्नगा सोवत्थिया सुयवेटा इदकाइया इंदगोवया तुरतुवगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत वाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते समूच्छिमनपुंसगा त समासउ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। एएसिण एवमाइयाण तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अट्ठजाइकुलकोडिजोणि प्पमुहसयसहस्सा हवतीति मक्खाय। सत्त तेइंदियससा०। से किंत चउरिंदियससारसमावन्नजीवपन्नव णा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मगसिरकीड तहा पयग य। ढंकण कुकुड कुक्कुह, नदावत्तेय सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचारिया गभीरा णीणिया तंतवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्टा विंछुया पत्तविंछुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंगला कणगा गोमयकीडा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा त समासउ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अप

का इन्द्रगोपाः तुरुतुम्बकाः कुलस्थवाहगा यूका हालाहलाः पिशुका सप्तवापकाः कर्णोपाला हस्तिशौण्डा ये चान्ये तथाविधास्ते सर्वे समूर्छिमा नपुंसकलिङ्गाः ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। एतेषामेवमादिकानां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानामष्ट जातिकुलकोटीयोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम्॥ तदेते त्रीन्द्रियाः॥ अथ कतिविधाश्चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ?। चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अन्धिकपुत्तिकमक्षिका मशकाः कीटास्तथा पतङ्गाश्च॥ मत्कुणकुक्कुटकुक्कुहनन्द्यावर्तशृङ्गिरिटकाश्च॥ १॥ कृष्णपत्रा नीलपत्रा लोहितपत्रा हारिद्रपत्रा शुक्लपत्राश्चित्रपक्षा विचित्रपक्षा ओहंजलिका जलचारिका गम्भीरा नीणिकास्तन्तवोऽक्षिरोडा अक्षिवेधाः सारङ्गा नूपुरा दोला भ्रमरा भ्रमर्यो जरुला तोट्टा वृश्चिकाः पत्रवृश्चिकाः गोमयवृश्चिकाः जलवृश्चिका

ज्जत्तगाय। एएसिण एयमाइयाण चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण नयजाइकुडकोडि जोणिप्पमुहसयसह स्साइ नयतीति मक्खाय। सेत्त चउरिंदियससारसमावण्णजीयपण्णवणा। से किंत पंचिंदियससारसमावण्ण जीवपण्णवणा? पंचिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियससारस मावण्णजीवपण्णवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा मणुस्सपंचिंदियससारसमावण्ण जीवपण्णवणा देवपंचिंदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा। से किंत नेरइया २? सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा रयणप्पभा पुढवीनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तम प्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्त गाय। सेत्त णेरइया। से किंत पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदि

रिमपतङ्गाः कपमाः गोमयकीटाः ये चान्ये तथाप्रकारास्ते सम्मूर्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः ॥ पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ॥ एते षामेवमादीनां चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां नवजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इति आख्यातम् ॥ तदेते चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्न जी वप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः? । पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाश्चतुर्विधा प्रज्ञप्ताः ॥ तद्यथा नै रयिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः दे वपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः। ते कतिविधा नैरयिकाः? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिका शर्कर प्रभा पृथिवीनैरयिका वालुकप्रभापृथिवी नैरयिका धूमप्रभापृथिवीनैरयिका तमःप्रभा पृथिवीनैरयिका तमस्तम प्रभा पृथिवी नैरयिका ते समा सेन द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च। तदेते नैरयिकाः। अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः?। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका

यतिरिक्खजोणिया थलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया। से किंत जलयरप
चिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? पचविहा पन्नत्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा मगरा सुसुमारा। सेकिं त
मच्छा २ ? अणगविहा पन्नत्ता, तजहा सण्हमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्झडियमच्छा हलिद्दमच्छा
मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तदुलमच्छा क
णिक्कामच्छा सालिसच्छियामच्छा लभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त
मच्छा। से किंत कच्छभा २ दुविहा पन्नत्ता, तजहा अट्ठकच्छभा य मसकच्छभा य । सेत्त कच्छभा ।
से किंत गाहा २ ? पचविहा पन्नत्ता, तजहा देलीवढगा मुद्दया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से
किंत मगरा २ ? दुविहा पन्नत्ता, तजहा—सोडमगरा मच्छमगराय। सेत्त मगरा। से किंत सुसुमारा २

त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधा
जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ?। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—मत्स्याः कच्छपाः ग्राहाः मकराः शिशुमा
राः। अथ कतिविधाः मत्स्याः ?। मत्स्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—श्लक्ष्णमत्स्याः खवल्लमत्स्याः युगमत्स्याः विज्झटमत्स्याः हारिद्रमत्स्याः मक
रमत्स्याः रोहितमत्स्याः हलीमत्स्याः सागरमत्स्याः गगरमत्स्याः वडमत्स्याः वडगरमत्स्याः तिमिमत्स्याः तिमिङ्गिलमत्स्याः नक्रमत्स्याः तन्दु
लमत्स्याः कणकमत्स्याः शालिमत्स्याः मालिकमत्स्याः लम्भनमत्स्याः पताकमत्स्याः पताकपताकमत्स्याः ये चान्ये तथाप्रकारास्ते मत्स्याः ।
अथ कतिविधाः कच्छपाः ?। कच्छपा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—अस्थिकच्छपा मांसकच्छपाश्च । तएते कच्छपाः । अथ कतिविधाः ग्राहाः ?।
ग्राहाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः दिलुया वढगा मुदुगा पुलकाः सीमाकाराः तएते ग्राहाः । अथ कतिविधा मकराः ?। मकराः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः शु

एगागारा प०, सेत्तं सुंसुमारा । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थ णं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एतेसिणं एवमाइयाणं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्धतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । सेत्तं जलयरपंचिंदिय० । से किं तं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया । से किं तं एगखुरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तं० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं

एवमकराः मत्स्यमकराश्च । एवमेते मकराः । अथ कतिविधाः शिंशुमाराः ? । शिशुमारा एकाकाराः प्रज्ञप्तास्त एते शिंशुमाराः । ये चान्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । सम्मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र य एते सम्मूर्छिमास्ते समासतः सर्वे नपुंसकाः । तत्र य एते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः । स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाः । एतादृशानामेवमादीनां जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानामर्धत्रयोदशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति व्याख्यातम् ॥ एवमेते जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । अथ कतिविधाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? । स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । अथ कतिविधाश्चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदाः सनखपदाश्च । अथ कतिविधाः एकखुराः ? । एकखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—अश्वा अश्वतरा

एगखुरा । से कित दुखुरा २ ? श्रणेगविहा पन्नत्ता , तजहा—उट्ठा गोणा गवया रोज्झा समया महिसा सघरा वराहा श्रया एलगा रुरु सरभ चमर कुरग गोकण्णमाई सेत्त दुखुरा। से कित गण्डीपया २ ? श्रणेगविहा पन्नत्ता, तजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गण्डा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त गण्डीपया । से कित सणप्फया २ ? श्रणेगविहा पन्नत्ता, तजहा सीहा वग्घा दीविया श्रच्छा तरच्छा परस्सरा सियाला सुणगा कोलसुणगा (ग्रथा ५००) कोकतिया ससगा चित्तगा चिल्ललगा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त सणप्फया । तसमासत्र दुविहा पन्नत्ता तजहा समुच्छिमाय गब्भवक्कतियाय । तत्यण जे ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुसगा, तत्यण जे ते गब्भवक्कतिया ते तिविहा पन्नत्ता , तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमादियाण थलयरपचिदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह

घोटका गर्दभा गोरक्षरा: कन्दलका: श्रीकन्दलका: आवर्ताद । ये चाप्यन्ये तथाप्रकारा: । तदेते एकखुरा: । अथ कतिविधा: द्विखुरा: ? । द्विखुरा अनेकविधा: प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उष्ट्रा गोवा गवया रोझा: शशका महिषा: शम्बरा वराहा अजा एलका रुरव शरभाश्चमरा कुरङ्गा गोकर्णादिका: तदेते उक्ता द्विखुरा: । अथ कतिविधा गण्डीपदा ? । गण्डीपदा अप्यनेकविधा: प्रज्ञप्ता: । तद्यथा-हस्ती गण्डक मुकुणहस्ती खड्गा गण्डा: यचाप्यन्ये तथाप्रकारा: उक्ता गण्डीपदा: । अथ कतिविधा सनखपदा: ? । सनखपदा अनेकविधा प्रज्ञप्ता: तद्यथा सिंहा व्याघ्रा द्वीपिनो ऋक्षा तरक्षा: परशरा: शृगाला विडाला: श्वान कोला कोकतय शशका चित्रका: चिल्लाला: येचाप्यन्ये तथाप्रकारास्सर्वे सनखा: । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता: । तद्यथा-सम्मूर्छिमाय गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसका: । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता: । तद्यथा स्त्रिय पुरुषा नपुंसका: । एतेषामेवमादीनां स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमु

सयसहस्सा हवतीति मक्खायं । सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किं तं अही २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा दव्वीकरा य मउलिणो य । से किं तं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा निस्सासविसा कण्हसप्पा सेडसप्पा काओदरा दज्झपुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किं तं मउलिणो २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा दिव्वागा गोणसा कसाहीया वइउला चित्तलिणो मंडलिणो अही अहिसलागा वाय

शतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् । सेयं चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । अथ कतिविधाः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च । अथ कतिविधा उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? । उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा अहयः अजगराः आसालिका महोरगाः । अथ कतिविधा अहयः ? । अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा दर्वीकराश्च मुकुलिनश्च । अथ कतिविधा दर्वीकराः ? । दर्वीकरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा आशीविषाः दृष्टिविषाः उग्रविषाः भोगविषाः त्वग्विषाः लालाविषाः उच्छ्वासविषाः निःश्वासविषाः कृष्णसर्पाः श्वेतसर्पाः काकोदराः दग्धपुष्पाः कोलाहाः मेलिमिन्दाः शेषेन्द्राः ये चान्ये तथाप्रकाराः सेयं दर्वीकराः । अथ कतिविधा मुकुलिनः ? । मुकुलिनोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा दिव्याकाः गोनसाः कषाधिकाः व्यतिकुलाः चित्रलिनः मण्ड

ड्डागा । जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त यउलिया । सेत्त अही । से कित अयगरा २ ? एगागारा पणत्ता, सेत्त अयगरा । से कित आसालिया ? कहिण भंते ! आसालिया समुच्छति ? गोयमा ! अतोमणुस्सखे त्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएण पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघात पडुच्च पचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टीखधावा रेसु वासुदेवखधावारेसु बलदेवखधावारेसु मडलियखधावारेसु महामडलियखधावारेसु गामनिवेसेसु नगर निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु सबाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चेव विणासेसु। एत्थण आसालिया समुच्छति । जहन्नेण अगुलस्स असखिज्जइभागमित्तीए ओगाहणाए, उक्कोसेण वारसजोयणाइ। तहाणुरू व च ण विक्खभबाहल्लेण भूमिदालित्ताण समुठेति । असन्नी मिच्छादिठी अन्नाणी अतोमुहुत्तद्धाउया

लिनः अहयः आहिमशालाः वायुकुक्षागाः । येचाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते मुकुलिनः । उक्ता अहयः । अथ कतिविधा अजगरा ? । अजगरा एकाकाराः प्रज्ञप्ताः तएते अजगराः । अथ कास्ताआसालिकाः ? । कथ भदन्त । आसालिका समूर्च्छन्ति । गौतम ! अन्तर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धतृतीये षु द्वीपेषु निर्व्याघात पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पुनथ पञ्चसु महाविदेहेषु चक्रवर्तिस्कन्धावारेषु वासुदेवस्कन्धावारेषु बलदेवस्कन्धावारेषु माण्डलि कस्कन्धावारेषु महामाण्डलिकस्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु नगरनिवेशेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कर्वटनिवेशेषु मडम्बनिवेशेषु द्रोणमुखनि वेशेषु पत्तननिवेशेषु आकरनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु संबाधनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु एतेषामेव विनाशेषु । एतेषु आशालिका समूर्छन्ति । ज घन्यनाङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया ऽवगाहनया । उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि तथानुरूप च विष्कम्भबाहुल्या (विस्तारस्थूलत्वाभ्या) भूमिं दलयित्वा समुत्तिष्ठते । असंज्ञिमिथ्यादृष्टिः अज्ञानी अन्तर्मुहूर्तायुरेव कालं करोति । तएते आसालिकाः । अथ कतिविधा महोरगा ? । महोरगा अनेक

ऐव कालं करेइ। सेत्तं आसालिया। से किं तं महोरगा? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा-अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणिपुहत्तिया पि कुच्छिं पि कुच्छिपुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि ते णं थले जाता जले वि चरंति थले वि चरंति ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं महोरगा। ते समासओ दुविहा प०, तं०-संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, तं०-इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसि णं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ णं उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं। सेत्तं उरपरिसप्पा। से किं तं भुयपरिसप्पा? २ अणेग

विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-सन्त्येके येऽङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि अरत्निमपि अरत्निपृथक्त्वमपि कुक्षिमपि कुक्षिपृथक्त्वं धनुरपि धनुःपृथक्त्वं गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वं योजनमपि योजनपृथक्त्वं योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वं योजनसहस्रमपि तेन स्थले जाता जलेऽपि विचरन्ति स्थलेऽपि विचरन्ति ते च न सन्ति इह किन्तु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये चान्ये तथाप्रकाराः। एते महोरगाः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-संमूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः तद्यथा स्त्रीपुरुषा नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानामुरःपरिसर्पाणां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं। सेयं उरःपरिसर्पाः। अथ कतिविधा भुजपरिसर्पाः? भुजपरिसर्पा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-नकुला गोधाः सरटाः शल्यकाः सरठाः सारा खाराः गृहकोकिलाः विश्वम्भराः मूषा मङ्गूसाः पयला इलाः क्षीरविडालिकाः जाहाः चतुष्पादिकाश्च ये चान्ये तथाप्रकाराः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। सं

विहा पण्णत्ता, तजहा—णउला सेहा सरडा सल्ला सरठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मगुंसा पइ लाइया खीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जे यावन्ने तहप्पगारा। ते समासओ दुविहा प०, त०—समुच्छि मा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कंतिय तेण तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाण पज्जत्ता २ ण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुल कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइं हवंतीति मक्खायं। सेत्तं भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया। सेत्तं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया। से किंतं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी विययपक्खी। से किंतं चम्मपक्खी २ अणेगविहा प०, त० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिविराली जेयावन्ने तहप्पगा रा॥ सेत्तं चम्मपक्खी॥ से किंतं लोमपक्खी २ अणेगविहा प०, त० ढंका कंका कुरला वायसा चक्का

मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानां भुजपरिसर्पाणां नवजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातं। उक्ता भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। उक्ताः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। अथ कतिविधाः खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः?। खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्गकपक्षी विततपक्षी। अथ कतिविधाश्चर्मपक्षिणः?, चर्मपक्षिणोऽनेकविधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा वल्गुला जलौकाः अडिल्लाः भारण्डपक्षी जीवंजीवाः समुद्रवायसा कर्णत्रिका पक्षिविराली ये चान्ये तथाप्रकाराः। त एते चर्मपक्षिणः॥ अथ कतिविधा लोमपक्षिणः?। लोमपक्षिणोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा ढङ्काः कङ्काः कुरला वायसा चक्राङ्गा हंसा कल

चेव कालं करेइ। सेत्त आसालिया। से किंत महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा अत्थेगइया अगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिं पि कुच्छिपुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि तेणं थले जाता जले विचरंति थले विचरंति ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त महोरगा। ते समासतो दुविहा प०, त०—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जेते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थ णं जेते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, त०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिं णं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ णं उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं। सेत्तं उरपरिसप्पा। से किंत भुयपरिसप्पा २ अणेग

विधा: प्रज्ञप्ता:। तद्यथा-सन्त्येके येऽङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि रत्निमपि रत्निपृथक्त्वमपि कुक्षिमपि कुक्षिपृथक्त्वमपि धनुरपि धनुःपृथक्त्वमपि गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वमपि योजनमपि योजनपृथक्त्वमपि योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वमपि योजनसहस्रमपि तेन स्थलजाता जलविचरन्ति स्थले विचरन्ति ते न सन्त्यत्र बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये चान्ये तथाप्रकाराः। तदेते महोरगाः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-संमूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये संमूर्च्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र च गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः तद्यथा स्त्री पुरुषा नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानामुरःपरिसर्पाणां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति समाख्यातं। तदेते उरःपरिसर्पाः। अथ कतिविधा भुजपरिसर्पाः? भुजपरिसर्पा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-नकुलाः गोधाः सरटाः शल्याः सरंठाः सारा: खारा: घरोइला: विश्वम्भराः मूषाः महमूषाः पयला: हृदाः क्षीरविरालिकाः जाहा: चतुष्पादिकाः ये चान्ये तथाप्रकाराः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तं

जाइकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्साइं भवंतीति मक्खायं। दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेवबोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपंचिंदिय
जाइकुलकोडिजातिनवगछतेरसाइंच। दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेवबोधव्वा ॥१॥ से किंत मणुस्सा २ दुविहा प०,
तिरिक्खजोणिया॥ सेत्त पंचिंदियतिरिक्खजोणिया॥ सेत्त तिरिक्खजोणिया॥ से किंत मणुस्सा २ दुविहा प०,
त० समुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य। से किंत समुच्छिममणुस्सा, कहिणं भंते! समुच्छिम
मणुस्सा समुच्छंति? गोयमा! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु
पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु
वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु
वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइएसु ठाणेसु एत्थणं समु
च्छिममणुस्सा समुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जभागमित्तीए ओगाहणाए असन्नी मिच्छदिट्ठी अन्नाणी
सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करंति। से किंत गब्भवक्कंतियमणुस्सा २

दश चैव ज्ञातव्याः ॥ १ ॥ तदेते खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। तदेते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ॥ तदेते तिर्यग्योनिकाः ॥ अथ कतिविधा मनु
ष्याः ? । मनुष्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-संमूर्छिममनुष्याः गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः। अथ कतिविधाः संमूर्छिममनुष्याः। कस्मिन् भद
न्त! संमूर्छिममनुष्याः संमूर्छन्ति। गौतम! अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमे योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रि
ंशदकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां चैव उच्चारेषु वा प्रस्रवणेषु वा श्लेष्मसु वा सिंघाणकेषु (नासामलेषु) वा वान्ते
षु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिसाटेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिषु
स्थानेषु एतेषु संमूर्छिममनुष्याः संमूर्छन्ति। अङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया असंज्ञिमिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाभिः पर्याप्तिभिरपर्याप्तका अन्त

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा भडा सेडीबगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामिंजुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोया कविंजला पारेवया चिडगा चासा कुक्कडा सुगा वरहिणा मदणसला कोकिला सेवहा वरेल्लगमादी । सेत्तं लोमपक्खी। से किंतं समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंतं विततपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेसमासतो दुविहा प०, तं० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तट्ठ

हंसाः राजहंसाः बकाः सेडीयगाः बकुलाः पारिप्लवाः कुञ्चाः सारसाः मसराः मसूराः मयूराः शतवत्साः गहराः पौण्डरीकाः काकाः कामियुगा वञ्जलकाः तित्तिराः वर्तकाः लावकाः कपोताः कपिञ्जलाः पारापताः चटकाः चाषाः कुक्कुटाः शुकाः बर्हिणः मदनशालाः कोकिलाः सयहा वरल्लगा एवमादय एते लोमपक्षकाः। अथ कतिविधाः समुद्गपक्षिकाः?। समुद्गपक्षिण एकाकाराः प्रज्ञप्ताः। तेन बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। त एते समुद्गपक्षिकाः। अथ कतिविधा विततपक्षिकाः?। विततपक्षिण एकाकाराः प्रज्ञप्ताः। तेन बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। तएत विततपक्षिकाः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः समूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र यएते समूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्त त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाश्च। एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामपर्याप्तपर्याप्तानां द्वादशजातिकुल को- टियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम्॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्धत्रयोदशानि चैव॥ दशदश च भवन्ति नवकानतया द्वा

कित मिलक्खू ? २ श्रणेगविहा पन्नत्ता, तजहा सगा जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुण्डोड्ड भडग णि

ण्णग पक्कणि णीय कुलक्ख गोण्डा सीहला पारस गोधन्ध दमिल चिल्लल पुलिन्द हारोस दोवबोक्काण गध

हारग बहलिय श्रज्जल रोम पास बउसा मलयाय बधुयाय सूयलि कुक्कुणगमेघ पण्हव मालव मग्गर

श्राभासिय कण चीरण ल्हासीस खसखासिय नेदूर मढ डोंबिलग लउस बउस केक्कया श्ररबागा हूण

रोमग भमरु चिलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तमिलक्खू से कित श्रायरिया ? श्रायरिया दुविहा पन्नत्ता,

तजहा इड्ढिपत्तारिया य श्रणिड्ढिपत्तारिया य । से कित इड्ढिपत्तारिया ? २ छविहा पन्नत्ता, तजहा—

श्ररहता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्त इड्ढिपत्तारिया ॥ से कित श्रणिड्ढिपत्तारि

या ? २ नवविहा पन्नत्ता, तजहा खेत्तारिया जातिश्रारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया

णाणारिया दसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ श्रद्धछव्वीसतिविहा पन्नत्ता, तजहा राय

का। यवना। चिलाताः शबराः बर्बराः कायाः मुरुण्डाः उड्डाः भटकाः निर्णकाः पक्कणाः नीपाः कुलक्षाः गोण्डाः सीहलाः पारसाः गोधन्धाः द्रमिलाः चि ल्लला। पुलिन्द्राः हारोसाः डोंबबोक्काणाः गन्धहारका बहलिया। श्रज्जलाः रोमाः पासाः बकुशाः मलयाश्च बन्धुकाश्च सूयलाः कौक्कणकाः मेदाः पल्हवाः मालवाः मार्गराः श्राभाषिकाः कणाः चीनाः ल्हासिकाः खसाः खासिकाः नेदूराः मौढाः डोंबिलकाः लकुसाः बकुसाः केकयाः श्र रबाकाः हूणाः रोमकाः भ्रमराः चिलाताः वासीकाः एवमादयः । तदेते म्लेच्छाः । श्रथ कतिविधाः श्रार्याः श्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । ऋद्धिमन्तः अनृद्धिमन्तश्च । श्रथ कतिविधाः ऋद्धिमन्तः ऋद्धिमन्तः षड्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा श्रर्हन्तः चक्रवर्तिनः बलदेवाः वासुदेवाः चारणाः विद्याधराः तदेते ऋद्धिमन्तः । श्रथ कतिविधाः श्रनृद्धिमन्तः ? । श्रनृद्धिमन्तः नवविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा क्षेत्रार्याः जात्यार्याः कुलार्याः कर्मार्याः शिल्पार्याः भा षार्याः ज्ञानार्याः दर्शनार्याः चरित्रार्याः । श्रथ कतिविधाः क्षेत्रार्याः क्षेत्रार्याः सार्द्धपञ्चविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-राजगृहनगरचम्पाश्रङ्गामण्डला

तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा। से किं तं अंतरदीवगा? अंतरदीवगा अट्ठावीसतिविहा पन्नत्ता, तंजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णंगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना २ आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कन्नपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता ६ घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्तं अंतरदीवगा। से किं तं अकम्मभूमिगा? २ तीसतिविहा पन्नत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरन्नवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरूहिं पंचहिं उत्तरकुरूहिं सेत्तं अकम्मभूमिगा। से किं तं कम्मभूमगा? २ पन्नरसविहा पन्नत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

मुहूर्तकाल एव कालं कुर्वन्ति। अथ कतिविधा गर्भजपुरुषान्तिकमनुष्याः? । गर्भजपुरुषान्तिकमनुष्या त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-कर्मभूमिगा अकर्मभूमिगा अन्तरद्वीपगाश्च। अथ कतिविधा अन्तरद्वीपकाः? । अन्तरद्वीपका अष्टाविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-एकोरुका आभासिका वैषाणिका नाङ्गोलिकाः हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णाः शष्कुलिकर्णाः आदर्शमुखा मेषमुखा अयोमुखा गोमुखाः अश्वमुखा हस्तिमुखाः सिंहमुखा व्याघ्रमुखा अश्वकर्णाः सिंहकर्णा अकर्णाः कर्णप्रावरणा उल्कामुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लष्टदन्ता गूढदन्ताः शुद्धदन्ताः। तदेते अन्तरद्वीपकाः। अथ कतिविधा अकर्मभूमिकाः? । अकर्मभूमिकास्त्रिंशद्विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पञ्चहिमवति पञ्चहिरण्यवति पञ्चहरिवर्षे पञ्चरम्यकवर्षे पञ्चदेवकुरुषु पञ्चउत्तरकुरुषु तदेते अकर्मभूमिकाः। अथ कतिविधाः कर्मभूमिकाः? । कर्मभूमिकाः पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पञ्चभिर्भरतैः पञ्चैरवतैः पञ्चमहाविदेहैः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा आर्यमनुष्याः म्लेच्छमनुष्याः। अथ कतिविधा म्लेच्छमनुष्याः म्लेच्छमनुष्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः

सेत्तं कुलारिया ॥ से किं तं कम्मारिया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—दोसिया सुत्तिया कप्पासिया सुत्तवेयालिया भंडवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं कम्मारिया॥ से किं तं सिप्पारिया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—तुण्णागा तंतुवाया पट्टगारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पत्थारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जिज्झगारा सेल्लारा कोडिगारा जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्तं सिप्पारिया ॥ से किं तं भासारिया ? २ जे णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, जत्थ वि य णं बंभी लिवी पवत्तइ बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तंजहा—बंभी जवणालिया दोसापुरिया खरोट्ठी पुक्खरसारिया भोगवइया पहराइया अंतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयंसलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥ सेत्तं भासारिया ॥ से किं तं णाणारिया ? २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—आभिणिबोहियणाणारिया सुयणा

याः ये चाप्यन्ये तथाप्रकाराः । अथ कतिविधाः शिल्पार्याः । तुन्नागाः तन्तुवायाः पट्टकाराः दृतकाः वरुडाः काष्ठपादुकाकाराः मुञ्जपादुकाकाराः छत्रकाराः वज्झकाराः प्रस्तरकाराः पोत्थाराः लेप्याराः चित्रकराः शंखकराः दन्तकराः भाण्डकाराः जिह्मकाराः (कटकराः) शैलाराः कोटिकराः । ये चाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तदेते शिल्पार्याः । अथ कतिविधाः भाषार्याः ? । भाषार्याः ये अर्धमागधीभाषया भाषन्ते यत्रैव ब्राह्मीलिपिः प्रवर्तते तस्यां ब्राह्मयां लिप्यामष्टादशविधं लेख्यविधानं प्रज्ञप्तं । तद्यथा ब्राह्मी यवनानी दासपुरिका खरोष्ठी पुष्करसारिका भोगवती प्रहरादिका अन्ताक्षरिका अक्षरपृष्ठिका वैनयिकी निह्नविका अङ्कलिपि गणितलिपि गन्धर्वलिपि आदर्शलिपिः माहेश्वरी दोमिलीलिपि पौलिन्दीलिपिः तदेते भाषार्याः । अथ कतिविधाः ज्ञानार्याः ? । ज्ञानार्याः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा अभिनिबोधिकज्ञानार्याः श्रुतज्ञानार्याः अवधिज्ञानार्याः मनःपर्ययज्ञानार्या

गिहमगहचंपा अंगामहतामलित्तिवंगा य । कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोसलागय पुरचकुरुसोरियकुसट्टा य । कंपिल्ल पंचाला अहिछत्ताजंगलाचेय ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलविदेहायवच्छकोसंबी । नंदिपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराडवच्छवरणा अच्छातहमत्तियावइदसण्णा । सोत्तियमइयावेदी वीइभयसिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा । सावत्थीयकुणाला कोडीवरिसचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियावियनगरी केयइअद्धचआरियंभणियं । एत्थुप्पत्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाण ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से किंत जाइआयरिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—अंवठायकलिंदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुंचुणाचेव छएयाइब्भजाइत्ता ॥ ७ ॥ सेत्त जाइआरियाय ॥ से किंत कुलारिया ? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा ।

कलिङ्गाय । काञ्चनपुरं कलिङ्गा वाराणसी चैव काशीषु ॥ १ ॥ साकेतः कोशलाः गजपुरं च कुरवः सौरिकं कुशार्तः । काम्पिल्यं पाञ्चालाः अहिच्छत्रा जाङ्गलेषु ॥ २ ॥ द्वारावती च सुराष्ट्राः मिथिला विदेहाश्च वत्सा कौशाम्बी ॥ नन्दीपुरं शाण्डिल्यस्य भद्दिलपुरमेव मलयाश्च ॥ ३ ॥ वैराटं मत्स्या वरणा अच्छा तथा मृत्तिकावती दशार्णाः ॥ शौक्तिकावती च चेदी वीतभयं सिन्धुसौवीराः ॥ ४ ॥ मथुरा च शूरसेना पापा भङ्गी च मासपुरी वर्ता ॥ श्रावस्ती च कुणाला कोटीवर्षं च लाटाश्च ॥ ५ ॥ श्वेताम्बिका च नगरी केकयस्यार्धमार्यमाख्यातम् ॥ यत्रोत्पत्तिर्जिनानां चक्रिरामकृष्णानाम् ॥ ६ ॥ ते एते क्षेत्रार्याः ॥ अथ के ते जात्यार्याः । जात्यार्याः षड्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा अम्बष्ठाः कलिन्दाः वैदेहाः वेदङ्गाः हरिताः चुञ्चुणाः इत्येता इभ्यजातयः । इत्येते जात्यार्याः । अथ के ते कुलार्याः । कुलार्याः षड्विधाः प्रज्ञप्ताः । उग्रा भोगा राजन्याः इक्ष्वाकवः ज्ञाताः कौरव्याः । इत्येते कुलार्याः । अथ के ते कर्मार्याः ? । कर्मार्याः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—दौष्यिकाः सौत्रिकाः कार्पासिकाः सूत्रवैकालिकाः भाण्डवैकालिकाः कौलालिकाः नरवाहनि

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा । सव्वाहिंणयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच रित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी सखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारओपवयणे अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलु चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावा वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निस्संकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववू हथिरीकरण वच्छल्लपभावणेअट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दु विहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं उवसंतकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारि

रुचिरितिज्ञातव्यः ॥ ८ ॥ समवत्याभिप्रमरुचिः श्रुतधर्मं नवतिपस्य । अपतोवृष्टमेवावगाह्नामि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादस्य ॥ ८ ॥ द्रव्याणां, सर्वभावाः सर्वप्रमाणैर्यस्योपलब्धाः ॥ सर्वैर्नयविधिभिः विस्ताररुचिरसविद्यप ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनयसर्वसमितिगुप्तिषु ॥ यःक्रियाभाव भावः सखलुक्रियारुचिर्नामा ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टिः संक्षेपरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ अविशारदःप्रवचने अनभिगृहीतश्चशेषेषु ॥ ११ ॥ योऽस्तिकायध र्म श्रुतधर्मं च चरित्रधर्मं च ॥ श्रद्धाति जिनाभिहितं सधर्मरुचिर्ज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमार्थसंस्तवोवा सुदृष्टपरमार्थसेवनोवापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवर्ज ना च सम्यक्त्वश्रद्धानाच ॥ १३ ॥ तदेते सरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधा वीतरागदर्शनार्याः ? वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । उपशान्तकषायवीतरागदर्श नार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसम

णारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से कित दसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणा० । से कित सरागदसणारिया य ? २ दस विहा पन्नत्ता, तंजहा—निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवायपुन्नपावंच । सहस्समुइयासवसंवरोयवेयइएसणिस्सग्गो २ ॥ जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव । एमेवणन्नहत्तिय णिसग्गरुइत्तिणाइव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिठंजोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥४॥ जोहेउमयाणतो आणाएरोयएपवयणंतु । एमेवणन्नहत्तिय एसोआणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जतो सुएणउगाहईउसम्मत्त । अंगेणया हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाई पदाइजोपसरईउसम्मत्त । उदएव्वतिल्लबिंदू सोबीयरुइत्तिनायव्वो ॥७॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणजस्स । अत्थओदिठ एक्कारसअंगाई पइन्नगादिठियाओय ॥८॥

केवलज्ञानार्याश्च । त एते ज्ञानार्याः । अथ कतिविधा दर्शनार्याः दर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः सरागदर्शनार्याः ? सरागदर्शनार्या दशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा निसर्गोपदेशरुचिराज्ञारुचिः सूत्रबीजरुचिरेव ॥ अभिगमरुचि वि स्ताररुचि क्रियासंक्षेपधर्मरुचयः ॥ १ ॥ भूतार्थेनाधिगता जीवाजीवाश्च पुण्यपापं च ॥ सहसम्मत्याश्रवसंवरा एतन्निसर्गो विज्ञेयः ॥ २ ॥ यो जिनदृष्टान् भावान् चतुर्विधान् श्रद्दधाति स्वयमेव ॥ एवमेवनान्यथेति निसर्गरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ३ ॥ एतांश्चैव तु भावान् उपदिष्टान् यः परेण श्रद्दधाति ॥ छद्मस्थेन जिनेन वा उपदेशरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ४ ॥ यो हेतुमजानन् आज्ञया रोचते प्रवचनं तु ॥ एवमेव नान्यथेति एष आज्ञारुचिर्नाम ॥ ५ ॥ यः सूत्रमधीयानः श्रुतेनावगाहते तु सम्यक्त्वम् ॥ अङ्गेन बाह्येन वा स सूत्ररुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ६ ॥ एकपदेनानेकानि पदानि यः प्रसरति तु सम्यक्त्वे ॥ उदक इव तैलबिन्दुः स बीजरुचिरिति

ठवणसब्भावा सव्वपमाणेहिं जस्सउवलद्धा । सव्वाहिंणयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच रित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिठी संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारओपवयणे अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलु चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निसंकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिठीय उववू हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दु विहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं उवसंतकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारि

रुचिरितिज्ञातव्यः ॥ ८ ॥ समवस्थितिगमसर्व भुतन्नानमवतिपस्य । अथतोदृष्टमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादश्च ॥ ८ ॥ द्रव्याणां, सर्वभावाः सर्वप्रमाणैर्यस्योपलब्धाः ॥ सर्वैर्नयविधिभिः विस्ताररुचिरसविज्ञेय ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनयसर्वसमितिगुप्तिषु च ॥ यःकुर्योद्भाव तस्य सकलक्रियारुचिर्नामा ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टिः संक्षेपरुचिर्भवतिज्ञातव्यः ॥ अविशारदःप्रवचने अनभिगृहीतश्चशेषेषु ॥ ११ ॥ योऽस्तिकाय धर्मं श्रुतधर्मं चचरित्रधर्मं च ॥ श्रद्दधातिजिनाभिहितं सधर्मरुचिर्ज्ञातव्यः ॥१२॥ परमार्थसंस्तवोवा सुदृष्टपरमार्थसेवनोवापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवर्ज ना। चसम्यक्त्वश्रद्धानाच ॥ १३ ॥ तएते सरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधा वीतरागदर्शनार्याः ? वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः ? उपशान्तकषायवीतरागदर्श नार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसम

या अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदसणारिया य । से किंत खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से किंत छउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया । से किंत सयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदसणारिया सयबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पण्णत्ता, तजहा पढमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया य अपढमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणा० अचरिमसमयसयबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदसणारिया

योपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधा क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः प्रज्ञप्ताः ? । स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–प्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । त एते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीण

य। सेत्त सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंत बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। सेत्त छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंत केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अप

कषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथवा चरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। त एते छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः। अथ कतिविधाः केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः? केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधाः सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः? सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-प्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या। अथवा चरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधाः अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः? अयोगिकेवलिक्षीणकषाय

रमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। सेत्त सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्त अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त वीतरागदंसणारिया। सेत्त दंसणारिया । से किंतं चरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से किंतं सरागचरित्तारिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बाय

वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तदेते अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । तदेते केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । तदेते क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः तदेते वीतरागदर्शनार्याः । अथ के ते चारित्रार्याः ? चारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्याः बादरसम्परायसरागचारित्रार्याः । अथ के ते सूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्याः सूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयसूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्याश्च । अथवा सूक्ष्मसम्परायसरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-संक्लिश्यमानकाः विशुद्ध्यमानकाः । सूक्ष्म

रसपरायसरागचरित्तारियाय । से किं तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–
पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिम
समयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय। अहवा सुहुमसंपरा
यसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्तं सुहुमसंपरायसरा
गचरित्तारिया । से किं तं बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबायर
संपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसंपरा
यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारि
या दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पडिवाई य अपडिवाई य सेत्तं बायरसंपरायचरित्तारिया सेत्तं सरागचरि
त्तारिया। से किं तं वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किं तं उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा बादरसंपरायसरागचरित्रार्याः बादरसंपरायसरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमय
बादरसंपरायसरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्याः अचरमसमयबादर
संपरायसरागचरित्रार्याश्च । अथवा बादरसंपरायसरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रतिपातिकाः अप्रतिपातिकाश्च । एते बादरसंपरा
यसरागचरित्रार्याः एते सरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा वीतरागचरित्रार्याः ? । वीतरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उपशान्तक
षायवीतरागचरित्रार्याः क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याः

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता

द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्या अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। तदेत उपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याः। अथ के ते क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथ के ते छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अथ के ते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा प्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमय

रिया । से किंत छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढम समयछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयछउमत्थखीणकसायवीतरा गचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंत केवलिखीणकसायवीतराग रिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंत केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग दुविहा पण्णत्ता तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— चरित्तारिया य । से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरि

स्वयम्बुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयस्वयम्बुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । तदेते स्वयम्बुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारि-
त्रार्याः । अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा
प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयबुद्ध-
बोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । तदेते बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषाय
वीतरागचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा । तद्यथा- सयोगिकेवल-
क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च । अथ कतिविधाः सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? सयोगि-
केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--प्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीण-
कषायवीतरागचारित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च ।

पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं वीतरागचरित्तारिया। अहवा चरित्तारिया पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य। से किं तं सामाइयचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

तदेते सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। अथ कास्ता अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः? अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—प्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अचरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। तदेते ऽयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते वीतरागचारित्रार्याः। अथवा चारित्रार्याः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सामायिकचारित्रार्याः छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः परिहारविशुद्धिचारित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायचारित्रार्याः यथाख्यातचारित्रार्याश्च।

इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किं तं छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—साइयारा छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । से किं तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्तारियाय । सेत्तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया । से किं तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संकिलिस्समाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारियाय सेत्तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया । से किं तं अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थअहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्तं अहक्खायचरित्तारिया सेत्तं चरित्तारिया सेत्तं अणिड्ढिपत्तारिया सेत्तं

अथ कतिविधाः सामायिकचारित्रार्याः ? सामायिकचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-इत्वरसामायिकचारित्रार्याः यावत्कथिकसामायिकचारित्रार्याश्च । तदेते सामायिकचारित्रार्याः । अथ कतिविधाश्छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः ? छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सातिचाराश्छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः निरतिचाराश्छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः । तदेते छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः परिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः ? परिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा निर्विश्यमानपरिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः निर्विष्टकायिकपरिहारविशुद्धिकचारित्रार्याश्च । तदेते परिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः ? सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा उपक्लिश्यमानसूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः विशुद्ध्यमानसूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याश्च । तदेते सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः यथाख्यातचारित्रार्याः ? यथाख्यातचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-छद्मस्थयथाख्यातचारित्रार्याः केवलचारित्रार्याश्च । तदेते यथाख्यातचारित्रार्याः । तदेते चारित्रार्याः तदेते अनृद्धिप्राप्तार्याः तदेते आर्याः ।

श्रायरिया सेत्त कम्मभूमिगा सेत्त गब्भवक्कंतिया सेत्त मणुस्सा से कित देवा २ चउव्विहा प०, तजहा भव णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से कितं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तजहा असु रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ कुमारा थणियकुमारा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त भवणवासी से कित वाणमंतरा२ अट्ठविहा प०, तजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा या ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त वाणमंतरा। से कित जोइसिया २ पंचविहा पण्णत्ता, तजहा चंदासूरागहनक्खत्ततारा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप ज्जत्तगाय। से कित जोइसिया से कित वेमाणिया२ दुविहा पण्णत्ता, तजहा कप्पोवगाकप्पाईयाय से कित

तएते कर्मभूमिगाः तएत गर्भव्युत्क्रान्तिका । तएते मनुष्याः ॥ अथ कतिविधा देवाः ? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनः वानव्यन्तरा ज्योतिष्का वैमानिकाः । अथ कतिविधा भवनवासिनः ? भवनवासिनो दशविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमाराः उदधिकुमाराः दिशाकुमारा वायुकुमाराः स्तनितकुमारा । त समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ताः पर्याप्तका अपर्याप्तकाय । तएत भवनवासिनः । अथ कतिविधा वानव्यन्तरा ? वानव्यन्तरा अष्टविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—किंनराः किंपुरुषाः महोरगाः गन्धर्वा यक्षा रक्षाः भूताः पिशाचाः तएते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च । तएते वानव्यन्तराः । अथ कतिवि धा ज्योतिष्काः ज्योतिष्का पञ्चविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्त काश्च । तएते ज्योतिष्काः । अथ कतिविधा वैमानिका ? वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च । अथ कतिविधाः क

कप्पोवगा२ बारसविहा पण्णत्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिंदा बम्भलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त कप्पोवगा से कित कप्पाईया २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से कित गेविज्जगा २ नवविहा पण्णत्ता, तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिममज्झिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिठिमगेविज्जगा मज्झिम२ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्जगा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त गेविज्जगा । से कित अणुत्तरोववाइया२ पचविहा पण्णत्ता, तजहा विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त अणुत्तरोववा

कल्पोपगाः ? कल्पोपगा द्वादशविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सौधर्मा ईशानाः सनत्कुमारा माहेन्द्रा ब्रह्मलोका लान्तकाः महाशुक्राः सहस्राराः आनताः प्राणताः आरणा अच्युताः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च । तएते कल्पोपगाः । अथ कतिविधाः कल्पातीता ? कल्पातीताः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--ग्रैवेयकाः अनुत्तरवैमानिका श्च । अथ कतिविधा ग्रैवेयकाः ग्रैवेयका नवविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अधाधोग्रैवेयकाः, अधोमध्यमग्रैवेयकाः, अधउपरितनग्रैवेयकाः, मध्यमाधो ग्रैवेयका, मध्यममध्यमग्रैवेयकाः मध्यमोपरितनग्रैवेयका, उपरितनाधोग्रैवेयका उपरितनमध्यमग्रैवेयका उपरितनोपरितनग्रैवेयकाः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च । तएते ग्रैवेयकाः । अथ कतिविधा अनुत्तरवैमानिकाः ? अनुत्तरवैमानिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-विजयाः वैजयन्ताः जयन्ताः अपराजिता सर्वार्थसिद्धाः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च । तएते अनुत्तरवैमानिका । तएते कल्पातीता । तएते वैमानिकाः । तएते देवाः ।

आयरिया सेत्त कम्मभूमिगा सेत्त गब्भवक्कंतिया सेत्त मणुस्सा से कित देवा २ चउव्विहा प०, तंजहा भव णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से कित भवणवासी? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असु रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ कुमारा थणियकुमारा तेसमासओदुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त भवणवासी से कित वाणमंतरा२ अट्ठविहा प०, तंजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा या ते समासओदुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त वाणमंतरा। से कित जोइसिया २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा चंदासूरागहनक्खत्तातारा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अप ज्जत्तगाय। से कित जोइसिया से कित वेमाणिया२ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय से कित

तएते कर्मभूमगाः तएते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः । तएते मनुष्याः ॥ अथ कतिविधा देवाः ? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनः वानव्यन्तरा ज्योतिष्का वैमानिकाः । अथ कतिविधा भवनवासिनः ? भवनवासिनो दशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमाराः उदधिकुमाराः दिशाकुमारा वायुकुमारा स्तनितकुमारा । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । तएते भवनवासिनः । अथ कतिविधा वानव्यन्तराः ? वानव्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--किंनराः किंपुरुषाः महोरगा गन्धर्वाः यक्षाः रक्षाः भूताः पिशाचाः तएते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च । तएते वानव्यन्तराः । अथ कतिवि धा ज्योतिष्काः ज्योतिष्काः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्त काश्च । तएते ज्योतिष्काः । अथ कतिविधा वैमानिकाः ? वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा_ कल्पोपगाः कल्पातीताश्च । अथ कतिविधा क

लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! सुहुम पुढविकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणयठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता समणाउसो! कहिण भंते! बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु जलभूमिआसु एत्थण बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण

संख्येयभागे। क्वास्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधाः अविशेषा अनानात्वा सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। क्वास्मिन् भदन्त बादराप्कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःसरःपंक्तिषु बिलपंक्तिषु निर्झरेषु चिल्वरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकाना

इया सेत्त कप्पाईया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सेत्त पंचिंदिया सेत्त ससारसमावण्णजीवपन्नवणा सेत्त जीव पन्नवणा सेत्त पन्नवणा ॥ पन्नवणाए पढम पय सम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण भंते ! बादरपुढवि काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणण अट्ठसु पुढवीसु तजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प भाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसिप्पभाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थण बादरपढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असखेज्ज० सठाणेण

तएते पञ्चेन्द्रियाः । तएते संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । तएते जीवप्रज्ञापना तएते प्रज्ञापनाः ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गणि शिष्य मानचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना प्रथमपदानुवादः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कस्मिन् भदन्त । बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु तद्यथा--रत्नप्रभायां शर्कराप्रभा यां वालुकाप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायामधःसप्तमायामीषत्प्राग्भारायामधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यग्लोके टङ्केषु कूटेषु शैलेषु प्राग्भारेषु विजयेषु वक्षारेषु वर्षेषु वर्षधरपर्वतेषु वा वेलासु वेदिकासु द्वारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु अत्र बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थाना नि पर्याप्तानि । अत्रैव बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि पर्याप्तानि । उपपातेनापि सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्या

लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिण भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्दसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलभूमिआसु एत्थणं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

सङ्ख्यभागे । कास्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि , गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाय पर्याप्तका य अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधाः अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नगाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कास्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःसरःपंक्तिषु बिलपंक्तिषु निर्झरेषु विवरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकानां

ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! जत्थेव बायरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। कहि णं सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमआउकाइया जे य पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो! कहि णं भंते! बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थ णं बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहि णं भंते! बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! जत्थेव बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प०,

---

पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे। कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन् भ० सूक्ष्माप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्ना प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। कस्मिन् भदन्त। बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम। स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघातं प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे

उववाएण लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टेसमुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा। सुहुमतेउकाइयाण जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिण भंते। बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा। सट्ठाणेण सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवणनिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनिक्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसु य एत्थण बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जभागेसु

समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि तत्रैव बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । सूक्ष्मतेजःकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० । सूक्ष्मतेजःकायिका ये च पर्याप्ता ये चापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त । बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम । स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघातं प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे

सठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिण भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिण भंते ! सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाण जे पज्जत्तापज्जत्ताण ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिण भंते बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरसरपंतियासु सरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएण सव्वलोए, समुग्घा

ने समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्वस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि तत्रैव बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य द्वयोरूर्ध्वकपाटयोः तिर्यग्लोकतट्टे च समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्वस्मिन् भदन्त ! सूक्ष्मतेजःकायिकानां पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! सूक्ष्मतेजःकायिकानां ये पर्याप्तका अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । क्वस्मिन् भ० । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घन

एण सव्वलोए सठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे। कहिण भंते! बादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असखेज्ज

वातवलयेषु सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घनवातवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तटेषु भवनच्छिद्रेषु भवननिष्कुटेषु निरयेषु निरयावलिकासु निरयप्रस्तटेषु निरयच्छिद्रेषु निरयनिष्कुटेषु ऊर्ध्वलोककल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु विमानच्छिद्रेषु विमाननिष्कुटेषु तिर्यग्लोकेषु प्राचीनप्रतीचीनदक्षिणोदीचीनेषु सर्वेषु चैव लोकाकाशच्छिद्रेषु लोकनिष्कुटेषु च एतावत्सु बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु। कस्मिन् भदन्त! अपर्याप्तबादरवायुकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! यत्रैव बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां तत्रैव बादरवायुकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके। स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु। कस्मिन् भदन्त! सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तापर्याप्ताः ये ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। कस्मिन् भदन्त! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकेषु सरःपङ्क्तिकेषु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु अत्र बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन् भदन्त! बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि।

भागे । कहिण भंते । सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गो० । सुहुमवण
स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा
पन्नत्ता, समणाउसो । कहिण भंत ! बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए
तदेकदेसभाग, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु
गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु स
मुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं
लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण
भंत । तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा । उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेक

गौतम । बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके च समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र खलु भदन्त । पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये पर्याप्ता ये अपर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । कुत्र खलु भदन्त द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र खलु भदन्त त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ऊर्ध्वलोके

देसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेकदेसभाए, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणसु दीवसु समुद्दसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०

तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। कस्मिन् भदन्त! चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सरस्सर पङ्क्तिकासु निर्झरेषु उत्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्या

भागे । कहि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता, समणाउसो । कहि णं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाग, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए अहोलोए तदेक्क

गौतम ! यानि सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व खलु भदन्त ! पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । क्व खलु भदन्त द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व खलु भदन्त त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ऊर्ध्वलोके

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊयगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प०? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा (आमगन्धिकाः) परमदुरभिगन्धा कपोताग्निवर्णाभा (लोहध्मायमानवद् भूम्नेः कपोतवर्णच्छदवाभा यथामेव भूताः) कर्कशस्पर्शाः दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरकेषु वेदना । एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः । ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम । एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनसहस्रबाहुल्याया उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधश्चैकं योज

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु विल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थण पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? कहिणं भंते! नेरइया परिवसंति? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थणं नेरइयाणं चउरासि निरयावास सयसहस्साइं भवंतीति अक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार

असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र भदन्त । पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरःसु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु विसलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु अत्र पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र भदन्त । नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । कुत्र भदन्त । नैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु पृथिवीषु । तद्यथा-रत्नप्रभायां शर्करप्रभायां वालुकप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायाम् एतेषां नैरयिकाणां चतुरशीतिनिरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम दुब्भिगंधा काऊयगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेण पन्नत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धणरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते। रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहि णं भंते। रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति ? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

दुरभिसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिःप्रभा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा (आमगन्धिकाः) परमदुरभिगन्धाः कपोताग्निवर्णाभाः (लोहेऽध्यमाने यादृशोऽग्नेः कपोतवर्णस्तद्वदाभा यथामेव भूताः) कर्कशस्पर्शाः दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरके वेदनाः। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः। ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाः परिवसन्ति ?। गौतम। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनसहस्रबाहुल्यायामुपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेकं योज

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थण पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइ भाग, सट्ठाणण लोयस्स असंखेज्जइभाग । कहिण भंत ! नेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंत ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेण सत्तसु पुढवीसु तंजहा–रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास सयसहस्साइ भवतीति अक्खाय, तेण णरगा अंतोवट्टा बाहिचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार

संख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व भदन्त । पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व भदन्त । नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । क्व भदन्त । नैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु पृथिवीषु । तद्यथा–रत्नप्रभायां शर्कराप्रभायां वालुकाप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायाम् एतेषु नैरयिकाणां चतुरशीतिनिरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा (आमगन्धिकाः) परमदुरभिगन्धाः कपोताग्निवर्णाभा (लोहध्मायमान यादृशोऽग्नेः उद्योतस्तद्वदाभा यथामेव भूता) कर्कशस्पर्शाः दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरकेषु वेदनाः। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः। ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्योद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति?। गौतम। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनशतसहस्रबाहुल्यायामुपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्योपर्येकं योज

हेठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता, समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभमसंबद्ध

सहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रे एतत्र रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रिंशन्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। ते नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कपोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका नरकेषु वेदना च। एतेषां रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। तत्र बहवो रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन्। ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रासिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति। क्वचित् भदन्त शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्वचित् भदन्त शर्करप्रभा

नरगत्तय पञ्चणुञ्भवमाणा विहरति । कहिण नते ! सक्कारप्पत्तापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण नते , सक्कारप्पत्तापुढविणेरइया परिवसति ? गोयमा । सक्कारप्पत्तापुढविए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए , उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा चेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण सक्कारप्पत्तापुढवीणेरइयाण पणवीस निरयावाससहस्सा हवतीति मक्खायम् तेण नरगा अतो वट्टा बाहि चउरंसा अहे खुरप्पसठाणसठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेयणाओ एत्थण सक्कारप्पत्तापुढविणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। उववाएण लोयस्स असखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जइभागे सठाणण लोयस्स असखज्जइभागे । तत्थण बहवे सक्कारप्पत्तापुढविनेरइया परिवसति । काला

पृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति ? गौतम शर्करप्रभापृथिव्या द्वात्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एक योजनसहस्रमवगाह्याधश्च एक योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये त्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाना पञ्चविंशति निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्र ज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमासकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धा कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाय । एतेषु शर्करप्रभपृथिवीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः शर्करप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका

तत्थण यहवे वालुयप्पत्नापुढवीणेरइया परिवसंति

सखेज्जइन्नागे । सठाणेण लोयस्स श्रसखेज्जइन्नागे । तत्थण यहवे वालुयप्पत्नापुढवीणेरइया परिवसति । तेण निच्च काला कालान्नासा गन्नीरलोमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण प० समणाउसो । तेण निच्च न्नीया निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उब्बिग्गा निच्च परममसुन्नसयद्द णरगन्नय पच्चणुभ्नवमाणा विहरति। कहिण न्नते । पकप्पन्नापुढविणरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पकप्पन्नापुढवीए वी सुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणससस्स वज्जित्ता मज्झे श्रठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थण पकप्पन्नापढविनेरइयाण दस निरयावाससयसहस्सा न्नवतीति मस्काय । तण णरगा श्रतो वट्टा याहि चउरसा श्रहे खुरुप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगह चदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला श्रसुईवीसा परमदुब्भिगधा

संख्येयभागे । समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः वाल ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः बालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्य त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमसबद्ध नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त । पङ्कप्रभापृथि वीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! पङ्कप्रभापृथिव्या विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि एकं योजनसहस्र मवगाह्य अध एकं योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये अष्टादशोत्तरे योजनशतसहस्रे एतत् पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां दशनिरयावास शतसहस्राणि भव न्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रकाशा मे दवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशु

काउयअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं पंकप्पभापुढवि णेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे पंकप्पभापुढविणेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभमसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं धूमप्पभापुढवीणेरइयाणं तिण्णि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्ख

भा नरकेषु, वेदना एतेषु पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। तत्र बहवः पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यं भीता नित्यत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमनुबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमानाः विहरन्ति। क्वासि भदन्त! धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ?। गौतम! धूमप्रभायां पृथिव्यामष्टादशोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधः एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षोडशोत्तरे योजनशतसहस्रे अत्र धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता

ज्जोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं धूमप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे धूमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो । ते णं णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! तमापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्से

ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः । एतत् धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र बहवो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त ! तमःप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! तमःपृथिव्याः षोडशोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधश्च एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये चतुर्दशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तमःप्रभपृथिवीनैरयिकाणामेकस्मिन्पञ्चोनं नरकावासशतसहस्रं भवतीत्याख्यातम् । ते नरका अन्त

एत्थण तमप्पनापुढविणेरइयाण एग पचूणे नरगावाससयसहस्से हवतीति मरकाय, तेण नरगा अंतो वहा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूय पडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थण तमापुढविणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे तमप्पनापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता समणाउसो। तेण निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभमउलं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिण भंते! तमतमापुढविणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि अद्धतेवण्णजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता

वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसा पूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्ता नुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धा कर्कशस्पर्शा दुरध्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः एतेषु तमःप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमःप्रभपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति काला कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता। श्रमणायुष्मन्। तेन नि त्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमतुलं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त! तमस्तमःपृथिवी नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि?। गौतम! तमस्तमःपृथिव्यामष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजन

हेठावि अद्धतेवण्णजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थण तमतमापुढवीणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पन्नत्ता, तजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइठाणे, तण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदनाओ एत्थण तमतमापुढविनेरइयाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइभाए समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स असखेज्जइभाए तत्थण बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसति काला कालाभासा गभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तण निच्च भीया णिच्च तत्था निच्च उव्विग्गा निच्च परममसुभसबद्ध नगरभय पच्चणुभवमाणा विहरति ॥ असीतबत्तीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

सार्धद्विपञ्चाशद्योजनसहस्राणि अधः अपि सार्धद्विपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु अत्र तमस्तमः पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदिक्षु पञ्च अनुत्तरा महामहालया महानिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदपूयवसारुधिरमांसपलकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचिविस्रा परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः, एतेषु तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालाभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नि

पुच्छा, गोयमा ! तमप्पभापुढविणेरइयाणं एगे पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवतीति मक्खायं, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थ णं बहवे तमप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते ! तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा ! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता

पता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसा पूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः एतेषु तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति काला कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। क्व खलु भदन्त। तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ?। गौतम। तमस्तमःपृथिव्याः अष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि अर्धत्रिपञ्चाशद्योजन

हेठावि श्रद्धतेवण्णजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तिसुजोयणसहस्सेसु एत्थण तमतमापुढवीणेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण पचदिसि पच श्रणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पन्नत्ता, तजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए श्रपइठाणे, तेण नरगा श्रंतो वट्टा बाहिं चउरसा श्रहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च घयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला श्रसुईवीसा परमदुब्भिगधा कक्खडफासा दुरहियासा श्रसुभा नरगा श्रसुभा नरगेसु वेदनाउ एत्थण तमतमापुढविनेरइयाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स श्रसखेज्जइभाए समुग्घाएण लोयस्स श्रसखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स श्रसखेज्जइभाए तत्थण वहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसति काला कालोभासा गभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तेण निच्च भीया णिच्च तत्था निच्च उव्विग्गा निच्च परममसुभमसबद्ध नगरभय पच्चणुभवमाणा विहरति ॥ श्रसीतवत्तीस श्रठावीसचहोइवीसच। श्रठारससो

सहस्राण्युद्गृह्याधोपि अर्धत्रयस्त्रिंशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु एतपु तमस्तमः पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदिक्षु पञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने। तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदपूयवसारुधिरमांसपलकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचिविस्रा परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः, एतषु तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणा स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्य भीता नित्य त्रस्ता नि

त्सग अनुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अनुत्तरचयत्तीस छन्नीसचेवसयसहस्सतु अठारससोलसग चोद्दससहिय तुछठीए । अद्धतेवन्नसहस्सा उवरिमहेवज्जिऊतोन्नणिय । मज्झेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगातमतमाए । तीसा यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं । तिन्नियपंचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण नंते । पंचि दियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? गो० । उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए अहोलोए तदेकदेस न्नाए तिरियलोएसु अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स रपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु स व्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्यण पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा एण लोगस्स असंखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे । सठाणेण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे ।

त्समुद्दिश्य नित्यं परमाशुभसंबद्ध नरकभयं पयगुप्यमाना विहरन्ति । अशीतिर्द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिर्विंशतीव । अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा धोभिमया ॥ १ ॥ अष्टोत्तरं द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिश्च शतसहस्रंतु । अष्टादश षोडशकं चतुर्दशसहितं तु षट्त्रिंशत् । अर्द्धत्रिपञ्चाशत्सहस्रमुपरि मधोवर्ज्य ततो मध्यमम् । मध्ये तु त्रिषु सहस्रेषु भवन्ति नरकास्तमस्तमसः ॥ त्रिंशत्पञ्चविंशत् पञ्चदशैव शतसहस्राणि । त्रीणि च पञ्चोनैकं पञ्चैवा नुत्तरा नरकाः ॥ ४ ॥ कस्मिन् भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोकेषु अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे ।

काहिण भंते ! मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । श्रुतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह स्सेसु श्रड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए श्रकम्मभूमीसु छप्पन्नाए श्रतरदीवेसु एत्थण मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठणा प० । उववाएण लोयस्स श्रसखेज्जइभागे समुग्घाएण सव्वलोए सठाणे ण लोयस्स श्रसखेज्जइभागे । काहिण भंते ! भवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? काहिण भवणवासीदेवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए श्रसीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उ वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे श्रठुत्तरिजोयणसयसहस्स ए त्थण भवणवासीदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तभवणकोडीउ बावत्तरिंच भवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खायं, तेण भवणा बाहि वट्टा श्रतो समचउरसा श्रहे पुक्खरकन्नियासठाणसठिया उक्किण्णतरविउलग

... मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्सु योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशदकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु एतेषु मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येय भागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि कस्मिन् भदन्त । भवनवासिनो देवाः परिवसन्ति ? गौतम । एतस्या रत्नप्रभापृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्य अधस्ताच्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रेषु भवनवासिदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां सप्तभवनकोट्यो द्विसप्ततिभव नावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन भवनानि बाह्यतो वृत्तानि अन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि उत्कीर्णान्त रविपुलगम्भीरखातपरिखाणि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढीपरिवारितानि अयोध्यानि सदायतानि वानि

नीरयासफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसजागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सयाजया सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया (ग्र १५००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणादिता सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइ

सदाजेयानि सदा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डकोपरक्षितानि लाउल्लोइय (वेदिकादिषु गोमयादिभिरुपलेपनसंमृष्टीकरणं) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बित (प्रलम्बित) माल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धुताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंविकीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र च बहवो भवनवासिदेवाः परिवसन्ति । तद्यथा-

न्नागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइन्नागे सठाणेण लोगस्स असंखेज्जइन्नागे तत्थण बहवे न्नवणवासीदे वा परिवसंति त–असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएन्नवण वासी ॥ चूडामणिमउडरयणन्नूसणा फणिगरुलवइरपुन्नकलसंकिउप्फेसा सीहमगरमयकअस्सवरवद्धमाणानि जुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्डिया महज्जुतिया महायसा महावला महाणुन्नावा महासोक्खा हारविराइ यवत्था कडगतुडियथंनियन्नुया अंगदकुंडलमठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थान्नरणा विचित्तमालामउ लिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा न्नासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा

असुरनागसुपर्णा विद्युदग्निद्वीपोदधयश्च । दिक्पवनस्तनिताख्या दशैतेभवनवासिनोज्ञेया ॥ १ ॥ चूडामणिमुकुटरत्नभूषणा फणागरुडवज्रपूर्ण कलशाङ्कितमुकुटाः । सिंहाश्वगजवरमार्जारध वर्द्धमाननियुक्ताचित्रचक्षधराः ॥ २ ॥ सुरूपामहर्द्धिका महाद्युतिका महायशा महाबला महानुभावा महेश्वरा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रमालामौलिमस्तकाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरि हिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्द (शरीर) यो प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येनसंहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया (देहवर्णसुन्दरत या) दशदिशाउद्योतयमानाः प्रभासमानाः तेन तत्र साथ २ (वाक्यालङ्कारे) भवनवासिशतसहस्राणां सार्थं २ सामानिकसहस्राणां सार्थं २ त्रय त्रिंशकां साथ २ लोकपालानां सार्थं २ अग्रमहिषीणां साथ परिषदां साथ अधिकारिणां मधिकारिपतीनां सार्थं आयरक्षदेवसहस्राणां मध्ये

जीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सयाज
या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खि
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो
रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवया
रकलिया (ग्र १४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव
ट्टीभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा
णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरू
वा पडिरूवा एत्थ णं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइ

सदाजेयानि सदा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाउ
ल्लोइय (छेटिकागोमयादिभिरुपलेपनसंमृष्टीकरण) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघ
टसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बित (प्रलम्बित) माल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचार
कलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धुताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंकीर्णा
नि दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि समरीची
नि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप
पातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो भवनवासिदेवाः परिवसन्ति । तद्यथा-

लमुसढिपरिवारिया अउज्झा सदा जया सदा गुत्ता अडयाला कोठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे त

नि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखाणि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढिपरिवारितानि अयोध्यानि सदाजयानि सदागुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाउल्लोइयमहितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसङ्घसङ्कीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोक

पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहीसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । कहिण भंते ! असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? कहिण भंते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरे जोयणसयसहस्से बाहल्लाए एत्थण असुरकुमाराण देवाण चोवठि भवणावाससयसहस्सा भवतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया किन्नतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुस

णां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनामाधिपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयमाणाः पालयमानाः महताहतनृत्तगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त ! असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? कस्मिन् भदन्त ! असुरकुमारादेवाः परिवसन्ति गौतम ! एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहुल्यायामुपर्येकंयोजनसहस्रमवगाह्य अधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रबाहुल्यायाम् एतत्र असुरकुमाराणां देवानां चतुःषष्ठिर्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थिता

सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च यहूण ज्ञवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेयच्च सामित्त ज्ञहित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं ज्ञोगज्ञोगाइं ज्ञुंजमाणा यिहरति, चमरयलिणो इत्य दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परियसति काला महानीलसरिसा नीलगुलियगवलयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलाययउज्जुत्तुगनासा उयचियसिलप्पवालविंबफलसन्निहाहरोठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोक्खीरकुंददगरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहणिद्धतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अजणघणकसिणरुयगरमणिज्जनिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुप्फपगासाइं असंकिलिठाइं सुहुमाइं व

स्वामम दिव्यया श्चध्या दिव्यया युत्त्या दिव्यया प्रनया दिव्यया छायया दिव्येन वर्चिषा एतेन दिव्येन लेश्येन दशदिशाउद्योतमाना प्रभासीमानः तेम तत्र स्वेषां २ नवनावासशतसहस्राणां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशता लोकपालानां अग्रमहिषीणां परिपदामधिकारिणां अधिकारियतीनामायरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च यहूनां देवानां देवीनामाधिपत्य पौरपत्य स्वामित्व भर्तृत्व महत्तरकत्वम् आज्ञेश्वरसेनापत्यं च कारयमाणा पालयमाना महताऽऽहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति । चमरवलिनौ चात्रोभे असुरकुमारेन्द्रौ असुरकुमारराजानौ परिवसतः काला महानीलसदृशौ नीलगुटिका गवलातसीकुसुमप्रकाशाः विकसितशतपत्रनिर्मलशीतरक्ततामनयना गरुडायतऋजुतुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालविम्बफलसन्निभाधरोष्ठाः पाण्डुरशशिसकलविमलनिर्मलदधिघनशङ्खगोक्षीरकुन्द

यण वहवे असुरकुमारादेवा परिवसंति काला लोहितक्खा बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकु
ण्डधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया
वयं च पढम समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियवरभूसणनिम्मलनिर
यमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया म
हायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडयतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंड
यलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर
मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघय
णेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेण तेएण
दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २

त्यावक्षेपमाणे स्वात्मेन लोकस्यावक्षेपयाने । तत्र बहवः असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति । काला लोहिताक्षा बिम्बोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अ
सितकेशा वामैक (एकवर्णेवत्स) कुण्डलधरा आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्रा ईषच्छिलिन्ध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिधाना
वयश्च प्रथमं समतिक्रान्ता द्वितीयं चासम्प्राप्ता मध्ये यौवने वर्तमाना तलभङ्गकत्रुटितवरभूषणा निर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः
चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिकाः महाद्युतयः महायशसः महाबलाः महानुभावाः महासुखा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभु
जा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमा
ल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दया (भासुरशरीराः) प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन च

परिसाण साण २ छ्राणियाण साण २ छ्राणियाहिवईण साण २ छ्रायरस्कदेवसाहस्सीण छ्रन्नेसि च वहूण न्नवणवासीण देवाणय देवीणय छ्राहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं नहित्त महत्तरगत्त छ्राहाईसरसेणावच्च कारे माणे पालेमाणे महयाहयनहगीयवाइयततीतलतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं न्नोगन्नोगाइं नु जेमाणा विहरति। कहिण न्नते! दाहिणिल्लाण छ्रसुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? कहिण न्नते! दाहिणिल्लाण छ्रसुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! जबुद्दीवे२ मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमी सेरयणप्पन्नाए पुढवीए छ्रसीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे छ्रठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्यण दाहिणिल्लाण छ्रसुरकुमाराण देवाण देवी णय चोत्तीस न्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण न्नवणा वाहि वट्टा छ्रतो चउरसा सोचेव वन्नर्ठ जाव पडिरूवा एत्यण दाहिणिल्लाण छ्रसुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स

सामानिकसहस्राणां साधं२ त्रयस्त्रिंशकानां साध२ लोकपालानां साधं२ अग्रमहिषीणां साधं२ परिषदां साधं२ आधिकारिणां साध २ आधिकारि णीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरपतित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनाप त्यं च कारयमाणाः पालयमाना महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुडियघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहर न्ति। कस्मिन् भदन्त! दाक्षिणात्यासुरकुमाराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् भदन्त! दाक्षिणात्यासुरकुमारा देवाः परिवसन्ति। गौ तम! जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेनास्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहुल्यायामुपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्ता देकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च चतुस्त्रिंशद्भवनावासशतसह

स्याहं पवरपरिहिया वय च पढम समइक्कता विइयंच अ्समपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियप वरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगदकुंड लमट्टगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला णगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दससदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साणं२ भवणावाससयसहस्सा ण साणं२ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तायत्तीसाण साणं २ लोगपालाण साणं २ अग्गमहिसीण साणं २

---

१ वरवस्त्रपरिधानवस्त्रवयसो युतवयःपरिणामो विचित्रतरसपमीयरत्नसमतानुशिष्टा [illegible] वामेयकुण्डलधराः [illegible] प्रवरपरिहिता वयः प्रथमं समतिक्रान्ता द्वितीय चासंप्राप्ता भद्रे यौवने वर्तमाना तलभङ्गकत्रुटितप्रवरभूषणनिर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतयो महायशसो महाबला महानुभावा महासुखा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणाः विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनाः भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया अर्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दशदिशा उद्योतयन्तः प्रभासयन्तः तेन तत्र स्वेषां २ (स्वासां २) भवनावासशतसहस्राणां स्वेषां २

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणा वाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति। कहिणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं

पवतस्य पतरण एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्या। उपर्येक योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तराणामसुरकुमाराणा देवाना देवीना च त्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि तद यथा दाक्षिणात्यावद्विहरन्ति। बली अत्र वैरोचनेन्द्रो वैरोचनराजा परिवसति कालो महानील सदृशो यावत्प्रभासमान तत्र त्रिंशत् भवनावासशतसहस्राणि षष्टिसहस्राणां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्या त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपाला नां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुःषष्टिसहस्राणामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां औत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोगामित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति। क्व भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! नागकुमारा देवाः परिवसन्ति। गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा देवीओ परिवसंति काला लोहितक्खा तहेव जाव भुंजमाणे विहरंति, एव सह्स्स भाणियव्व भवणवासीण, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया प रिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेण तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण चउसठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण पचण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउण्ह य चउसठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण दाहिणिल्लाण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरति। कहिण भंते! उत्तरि ल्लाण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! जम्बुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

ख्यातिं प्रवक्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि सोऽचैव बयतो यावत्प्रतिरूपा एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र तु बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहि ताक्षा तथैव यावद्भुञ्जाना विहरन्ति। एवं सर्वत्र ज्ञातव्यं भवनवासिनां चमरो ऽत्र असुरकुमारेन्द्रो असुरकुमारराजा परिवसति काले महा नीलसदृशो यावत्प्रभासमानः स तत्र चतुस्त्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणां चतुःषष्ठितमे सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोक पालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां च चतुःषष्ठिकानामात्मरक्षकदेव सहस्राणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां देवानां देवीनां चाधिपत्यं पौरपत्यं यावद्विहरन्ति। कस्मिन्नु भदन्त। औत्तराणामसुरकुमाराणा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन्नु भदन्त। औत्तरा असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य

जिद्दा मज्के श्रठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्यण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण देवाण चोयालीसं नवणावा ससयसहस्सा हवतीति मरकाय, तेण नवणा याहिं वट्टा जाव पक्किरूवा एत्यण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइनागे एत्यण बहवे दाहिणिल्लाण नागकुमारा देवा परिवसति महिड्डिया जाव विहरति। धरणे एत्य नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्डिए जाव पन्नासेमाणे सेण तत्य चोयालीसाए नवणावाससयसहस्साण छण्ह सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण छण्ह अग्गमहिसीण सपरियाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाण नागकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति। कहिंण नंते! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण दे

यत्रपिस्या मध्येऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवो दाक्षिणात्या नागकुमारदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावद्विहरन्ति। धरणोऽत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति महर्द्धिको यावत्प्रकाशमानः स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां षण्णां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां षण्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्विंशत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावत्कुर्वाणो विहरन्ति। क्व भदन्त। औत्तरिकाणां नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त। नागकुमारा औत्तरिका देवाः परिवसन्ति? गौतम। जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वत

भंते ! नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा तत्थ णं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमारराया परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति। कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जम्बूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं व

बहलं बाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा पुनर्मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां चतुरशीतिभवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्, तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो नागकुमारदेवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका महाद्युतिकाः शेषं यथौघिकानां यावद्विहरन्ति । धरणभूतानन्दौ अत्र द्वौ नागकुमारराजानौ परिवसतः महर्द्धिकौ शेषं यथौघिकानां यावद्विहरतः । हे भदन्त ! दाक्षिणात्य नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त ! दाक्षिणात्यनागकुमारदेवाः परिवसन्ति । गौतम ! जम्बूद्वीपद्वीप मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणे एतस्या रत्नप्रभपृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधस्तादेकं योजनसहस्रं

पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थण बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवन्नकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति। कहिण भंते! दाहिणिल्लाण सुवन्नकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे जाव मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाण सुवण्णकुमाराण अट्ठतीस भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थण दाहिणिल्लाण सुवण्णकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थण बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति। वेणुदेवे इत्थ सुवन्निंदे सुवण्णकुमारराया परिवसंति सेस जहा नागकुमाराण। कहिण भंते! उत्तरिल्लाण सुवन्नकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। कहिण भंते! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति? गोय

असंख्येयभागमत्र बहवः सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति महर्द्धिकाः शेषं यथौघिकानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीच अत्र द्वौ सुपर्णकुमारेन्द्रौ सुपर्णकुमारराजानौ यावत्परिवसतः महर्द्धिकौ यावद्विहरतः। क्व भदन्त। दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त। दाक्षिणात्याः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति? गौतम। अस्या यावन्मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति। वेणुदेवोऽत्र सुपर्णेन्द्रो सुपर्णकुमारराजा परिवसति। शेषं यथा नागकुमाराणाम्। क्व भदन्त। औत्तराहाणां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ

याण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिण्णं भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जम्बुद्दीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरिं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता

… उत्तरेण एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीतिसहस्रोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्य अधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तराहाणां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि शेषं यथा दाक्षिणात्यानां यावद्विहरन्ति । भूतानन्दोऽत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति । महर्द्धिको यावत् प्रभासयन् स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त । सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति ? गौतम । एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावदत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां द्विसप्ततिं भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लो-

न्नेश्रमिययाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उन्नरिल्लाण जाव विहरति, कालाश्रसुरकुमारा नागाउदहीयप फुरादोवि । यरकणगणिहसगोरा होतिसुवस्लादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विजूश्रग्गीयहोति दीवाय । सामापियगुवस्ला वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ श्रसुरेसुहोतिरत्ता सिलिंद्रपुप्फप्पन्नातहाउदही । श्रा सासयवसणधरा होतिसुवस्लादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विजूश्रग्गीयहोतिदीवाय । सज्काणु रागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिण न्नते ! वाणमतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, कहिण न्नते ! याणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणमयस्स कण्डस्स जोयणसहस्सवाहल्लस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्के श्रठसु जोयणसएसु एत्यण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाठ न्नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण न्नोमेज्जा णगरा याहि यट्टा श्रतो चउरसा श्रहे पुस्करकन्नियासठाणसठिया उक्किन्नतरवि

रिका यावद्विहरन्ति । कालायसुरकुमाराः नागोदधीपादकुरोद्धीसः । वरकनकनिकसगौरा भवन्तिसुपर्णदिक्स्तनिता ॥ १ ॥ उत्तप्तकनकवर्णा वि द्युदग्नीजनवन्तिद्वीपाश्च ॥ श्यामा प्रियङ्गुवर्णाः वायुकुमाराश्चज्ञातव्याः ॥ २ ॥ असुराणवन्तिरक्ताः शिलीन्ध्रपुष्पप्रभास्तथोदधयः ॥ आशाश्रवसन धराः भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदग्नीजनवन्तिद्वीपाश्च ॥ सन्ध्यानुरागवसना वायुकुमाराश्चनुमातव्या ॥ ४ ॥ क्व भदन्त । वानव्यन्तराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति? गौतम । एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमय स्य काण्डस्य योजनशतसहस्रबाहल्यस्य उपर्येकं योजनशतमवगाह्य अधस्तादेकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसु योजनशतेषु अत्र वानव्य न्तराणां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भौमेयनगरावाससहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता अन्तश्चतुरस्रा अध पुष्करकर्णिका

मा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ... जाणिया तहा सेसाणवि चौद सण्हं इदाणं जाणियव्वा नवरं भवणनाणत्तं इंदाणनाणत्तं वण्णेण नाणत्तं परिहाणनाणत्तं च इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—चोवट्ठी असुराणं चुलसीती चेव होइ नागाणं । बावत्तरिं सुवण्णे वाउकुमाराण छण्णउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं । छण्हंपि जुयलयाणं छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्तीसा चोयाला अट्ठत्तीसं च होइ सयसहस्साइं । पण्णा चत्तालीसा दाहिणओ होंति भवणाइं ॥ ३ ॥ तीसा चत्तालीसा चोत्तीसं चेव सयसहस्साइं । छायाला छत्तीसा उत्तरओ होंति भवणाइं ॥ ४ ॥ चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्साइं असुरवज्जाणं । सामाणिया उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ ५ ॥ चमरे धरणे तह वेणुदेवहरिकंतअग्गिसीहे य । पुण्णे जलकंते य अमियविलंबे य घोसे य ॥ ६ ॥ बलिभूयाणंदे वेणुदालीहरिस्सहे अग्गिमाणवविसिट्ठे । जलप्प

माणि, हे भदन्त ! औत्तरिकाः सुपर्णकुमाराः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभाया यावत् अत्र औत्तराहाणां सुपर्णकुमाराणां [illegible] [illegible] तथा शेषाणामपि चतुर्दशानां मिन्द्राणामपि भणितव्या नवरं भवननानात्वमिन्द्राणां नानात्वं वर्णनानात्वं परिधाननानात्वं चैताभिर्गाथा भिरनुगन्तव्यम् । चतुःषष्टिरसुराणां चतुरशीतिरेव भवति नागानाम् । द्विसप्ततिः सुपर्णे वायुकुमारेषु षण्णवतिः ॥ १ ॥ द्वीपदिगुदधीनां विद्युत्कुमारे न्द्रस्तनिताग्नीनाम् षण्णामपि युगलकानां षट्सप्ततिशतसहस्राणि ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशत् चतुश्चत्वारिंशत् अष्टत्रिंशच्च शतसहस्राणि । पञ्चाशत् चत्वा रिंशत् दक्षिणतो भवन्ति भवनानि ॥ ३ ॥ त्रिंशत् चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्च शतसहस्राणि । षट्चत्वारिंशत् षट्त्रिंशत् उत्तरतो भवन्ति भवनानि ॥ ४ ॥ चतुः षष्टिः षष्टिः खलु षट् सहस्राणि असुरवर्जानाम् । सामानिकास्तु एते चतुर्गुणा आत्मरक्षास्तु ॥ ५ ॥ चमरो धरणस्तथा वेणुदेवो हरिकान्तोऽग्निसिंहः । पूर्णश्च जलकान्तश्च अमितो विलम्बश्च घोषश्च ॥ ६ ॥ बलिर्भूतानन्दो वेणुदालिर्हरिस्सहोऽग्निमाणवो विशिष्टः [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

खेज्जइभागे तत्थणं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवाइयभूयवाइय कंदीय महाकंदीय कोहंडपयगदेवा ॥१॥ चंचलचलचित्तकीलणदवप्पिया गंभिरहसियपिया गीयणिइरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसितचित्तवणमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थचित्तचिल्लगणियसणा विविहदेसीणेवत्थगहियवेसा पमुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगयासुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडयुयलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणध

राक्षसा किन्नराः किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतयः, अणपर्णिकपणपर्णिक ऋषिवादितभूतवादिनश्च । क्रन्दित महाक्रन्दितकूष्माण्डपतगाश्च ॥ १ ॥ एतेषां देवविशेषाः, चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रियाः गम्भीरहसितप्रियाः गीतनृत्यरतयो वनमालापीडमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसितचित्रवनमालारचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रविचित्रचिह्न (दीप्यमान इत्यर्थः) निवसनाः विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः प्रमुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महासौख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डयुगलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

उलगत्तीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसुंढिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसु वि लोगस्स असं

उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखाः प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागाः यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढिपरिवारिता अयोध्याः
सदाजयाः सदागुप्ताः अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिताष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालाः क्षेमाः शिवाः किङ्करामरदण्डोपरक्षिताः लाउल्लोइयमहिताः गोशी-
र्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलाः उपचितचन्दनकलशाः चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागाः आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तव्याघारितमाल्यदा-
मकलापाः पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिताः कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाः सुगन्धवरगन्धिताः गन्ध-
वर्तिभूता अप्सरोगणसङ्घविकीर्णा दिव्यत्रुटितनिनादशब्दसम्प्रणादिताः पताकामालाकुलाभिरामाः सर्वरत्नमयाः अच्छाः श्लक्ष्णाः श्लक्ष्णाः घृष्टाः मृष्टाः नीरजसो
निर्मला निष्पङ्का निष्कङ्कटच्छायाः सप्रभाः सश्रीकाः सोद्योताः प्रासादीयाः दर्शनीया अभिरूपाः प्रतिरूपाः अत्र वानव्यन्तराणां देवानां पर्याप्ता-
पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। त्रिष्वपि (स्थानेषु) लोकस्यासङ्ख्येयभागे अत्र बहवो वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति तद्यथा-पिशाचा भूता यक्षा

खेज्जइभागे तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्निय पणवन्निय इसिवाइय भूयवाइय कंदीय महाकंदीय कोहंडपयगदेवा ॥१॥ चंचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणिइरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसितचित्तवणमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थललंतचित्तचिल्लगणिवसणा विविहदेसीणेवत्थगहियवेसा समुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणध

राक्षसा किन्नराः किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतयः, अणपन्नीपणपन्नी ऋषिवादी भूतवादी च । कन्दीय महाकन्दी कोहण्डो पतङ्गश्च ॥ १ ॥ एतेऽष्टौ देवविशेषाः, चञ्चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रियाः गम्भीरहसितप्रिया गीतनृत्यरतयो वनमालापीडमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्वितालंकारचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसितचित्रवनमालारचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रचित्रचिल्लक (ददीप्यमान इत्यर्थः) निवसना विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः समुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महासौख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

लगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसुंढिपरिवारिया अ
उज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोट्ठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खि
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला उवचियवंदणकलसा वंदणघडसुकयतो
रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोव
यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छ
रगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा
घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा
अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसु वि लोगस्स अस

उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखाः प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागाः यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढिपरिवारिता अयोध्याः सदाजयाः सदागुप्ताः अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिताः अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालाः क्षेमाः शिवाः किङ्करामरदण्डोपरक्षिताः लाउल्लोइयमहिताः गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलाः उपचितवन्दनकलशाः वन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागाः आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्घारितमाल्यदामकलापाः पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिताः कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धुताभिरामाः सुगन्धवरगन्धिताः गन्धवर्तिभूताः अप्सरोगणसङ्घविकीर्णाः दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणदिताः पताकामालाकुलाभिरामाः सर्वरत्नमयाः अच्छाः श्लक्ष्णाः लष्टाः घृष्टाः मृष्टाः नीरजसः निर्मलाः निष्पङ्काः निष्कङ्कटच्छायाः सप्रभाः सश्रीकाः सोद्योताः प्रासादीयाः दर्शनीयाः अभिरूपाः प्रतिरूपाः अत्र वानव्यन्तराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि (स्थानेषु) लोकस्यासंख्येयभागे । अत्र बहवो वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति तद्यथा-पिशाचा भूता यक्षा

रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जि
त्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा
भवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा ठहिठ भवणवओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरू
वा, एत्थ णं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं
बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा ठहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाय
इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति । कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं पि
सायाणं देवाणं ठाणा पन्नत्ता । कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति ? गो० ! जंबूद्दीवे २
मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं
एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं दाहिणिल्लाणं

पर्यन्ते योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु पिशाचानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथौघिको भवनवर्णकः तथा वर्णयितव्यो यावत्प्रतिरूपाः, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासङ्ख्येयभागे, तत्र बहवः पिशाचाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथौघिका यावद्विहरन्ति । कालमहाकालौ चात्र द्वौ पिशाचेन्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरतः । क्व भदन्त ! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्येकं योजनशतमवगाह्य अधोऽप्येकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

रा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेणसंठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेण तत्थ साण२ भोमेज्जाणगरावाससयसहस्साण असंखिज्जाण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण२ अग्गमहिसीणं साण२ सपरिवाराण साण२ अणियाण साण२ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिण भंते! पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। कहिण भंते! पिसायादेवा परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए

विचित्रमालामुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्तः प्रभासयन्तस्ते तत्र स्वेषां २ भौमेयनगरावासशतसहस्राणां असंख्येयानां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां वानमन्तराणां देवानां देवीनामाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरत्व सेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो महताहतनृत्यगीतवादिततन्त्रीतलतालत्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति। क्व भदन्त। पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त। पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्येकं योजनशतमवगाह्य

रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जि त्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरू वा, एत्थ णं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाय इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति । कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं पि सायाणं देवाणं ठाणा पन्नत्ता । कहि णं भंते ! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति ? गो० ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं दाहिणिल्लाणं

पर्य्येकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र पिशाचानां देवानां तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथौघिको भवनवर्णकस्तथा भणितव्यो यावत्प्रतिरूपाः, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे, तत्र बहवः पिशाचाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथौघिका यावद्विहरन्ति, कालमहाकालौ अत्र द्वौ पिशाचेन्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरतः । क्व भदन्त । दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति ? गौतम । जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्य्येकं योजनशतमवगाह्याधस्तादेकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा जहा ओहिओ भवणवन्नओ तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति काले यत्थ पिसाइंदे पिसायराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो०! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं महाकाले यत्थ पिसाइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणवि

तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्। तं भौमेया (इत्यादि) यथौघिको भवनवर्णक उक्त एव भणितव्यो यावत्प्रतिरूपा अत्र दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्तस्ते तत्र तिर्यगसंख्येयानां भौमेयनगरावासशतसहस्राणां चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रीणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां वानमन्तराणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति। औत्तराहाणां पृच्छा सूत्रं। एवमेव दाक्षिणात्यानां नवरं मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतो महाकालोऽत्र पिशाचेन्द्रः पिशाचराजा परिवसति यावद्विहरति एवं यथा पिशा

जाव गंधव्वाणं नयर इंदेसु नाणत्तं भाणियव्वं इमेणवि विहिणा भूयाणं सुरूवपडिरूवा जक्खाणं पुण्णभद्द
माणिभद्द रक्खसाणं भीममहाभीमा किन्नराणं किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोर
गाणं अइकायमहाकाया गंधव्वाणं गीतरईगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि
रूवपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा
पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिणं भंते। अणवन्नियाणं देवाणं ठा
णा प०, कहिणं भंते ! अणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स
कंडस्स,जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं हिट्ठायएगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु अत्थ
णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा नगरा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं जाव पडिरूवा

णामां तथा भूतानामपि यावद्गन्धर्वाणां नवरमिन्द्रेषु नानात्वं भणितव्यमनेन विधिना भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ, यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ, रक्ष
सां भीममहाभीमौ, किन्नराणां किन्नरकिम्पुरुषौ, किम्पुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणामतिकायमहाकायौ, गन्धर्वाणां गीतरतिगीतय
शसौ, यावद्विहरतः । कालमहाकालौ सुरूपप्रतिरूपपूर्णभद्राश्च । अमरपतिर्माणिभद्रो भीमस्तथा महाभीमः ॥१॥ किन्नरकिम्पुरुषौ खलु सत्पुरुष
खलु तथा महापुरुषः । अतिकायमहाकायौ गीतरतिश्चैव गीतयशाः ॥ २ ॥ विहरन्ति । क्व भदन्त ! अणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व
भदन्त ! अणपन्निका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि अधश्च योजनशतं
वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वणपन्निकानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि नगरावाससहस्राणि भवन्तीति समाख्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपाः
अणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिधापि लोकस्यासंख्येयभागे तत्राणपन्निका देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथा पिशाचा यावद्विह

पिसायाण देवाण तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति मक्खायं, तेण भवणा जहा ठाणपदे जाव तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा ठाणपदे जाव विहरंति काले जत्य पिसायइंदे पिसायराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभा सेमाणे सेण तत्थ तिरियमसंखेज्जाण भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साण चउण्हं सामाणियसाहस्सीण चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराण तिण्हं परिसाण सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवईण सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंच बहूण दाहिणिल्लाण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति । उत्तरिल्लाण पुच्छा गो० ! जहेव दाहिणिल्लाण वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणपि नवर मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण महाकाले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एव जहा पिसायाण तहा भूयाणपि

तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावाससहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । त भौमेया (इत्यादि) यथौधिकी प्रज्ञापना तथैव भणितव्यो या[illegible] दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त ते तत्र स्वेषां स्वेषां भौमेयकनगरावाससहस्राणां चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रीणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तराणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति । औत्तराहाणां पृच्छा गौतम । यथैव दाक्षिणात्यानां वक्तव्यता तथैवौत्तराहाणामपि नवरं मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरस्यां महाकालो पिशाचेन्द्रः पिशाचराजा परिवसति यावद्विहरति एवं यथा पिशा

जाव गंधव्वाण नयर इदेसु नाणत्तं जाणियव्वं इमेणवि विहिणा भूयाण सुरूवपडिरूवा जक्खाण पुन्नभद्द माणिभद्द रक्खसाण भीममहाभीमा किन्नराण किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाण सप्पुरिसमहापुरिसा महोर गाण अइकायमहाकाया गंधव्वाण गीतरईगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि रूवपुन्नभद्दे य । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण भंते । अणवन्नियाण देवाण ठा णा प०, कहिण भंते । अणवन्निया देवा परिवसति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स,जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठायएग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु अत्थ ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवतीतिमक्खाय तेण जाव पडिरूवा

वाना तथा भूतानामपि यावद्गन्धर्वाणां नगरेष्वपि नानात्वं भवितव्यमनेन विधिना भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ, यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ, रक्ष सां भीममहाभीमौ, किन्नराणां किन्नरकिम्पुरुषौ, किम्पुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणामतिकायमहाकायौ, गन्धर्वाणां गीतरतिगीतय शसौ, यावद्विहरतः । कालश्च महाकालः सुरूपप्रतिरूपपूर्णभद्राश्च । अमरपतिमाणिभद्रौ भीमश्च तथा महाभीमः ॥१॥ किन्नरकिम्पुरुषौ खलु सत्पुरुष खलु तथा महापुरुषः । अतिकायमहाकायौ गीतरतिश्चैव गीतयशाः ॥ २ ॥ विहरति । क्व भदन्त ! अणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! अणपन्निका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्यां रत्नप्रभायाः पृथिव्यां रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि अधश्चैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वणपन्निकानां देवानां तिर्यगसंख्येयानि भवनावाससतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपाः अणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिधापि लोकस्यासंख्येय भागे अणपन्निका देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथा पिशाचा यावद्विह

एत्थण अणवन्निया देवाण ठाणा प०, उववाएलो० समुग्घाएलो० सठाणेणलो० तत्थण अणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इत्थ दुवे अणवन्निंदा अणवन्नियकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाण दोण्हंपि दाहिणिल्लाण उत्तरिल्लाणय भणिया तहा सन्निहियसामाणाणपि भणियव्वा संगहणि गाहा—अणवन्नियपणवन्निय इसिवाइयभूयवाइएचेव । कंदियमहाकंदिय कुहंडपयगदेवाय इमे इंदा—सन्निहियासामाणा धाइविधाएय इसीयइसिवाले ईस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवत्थेविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयतहाभवेतहामहासेए पयगेपयगपएविय नेयव्वाआणुपुव्वीए ॥२॥ कहिण भंते ! जोइसियाण देवाण पज्जत्ताण२ ठाणा प० ? कहिण भंते ! जोइसिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउइ जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसय बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थण जोइसियाण

रन्ति, सन्निहितसमानौ यावत् द्वावणपर्णिकेन्द्रावणपर्णिककुमारराजानौ परिवसतो महर्द्धिकौ यथा कालमहाकालौ एवं यथा कालमहाकालयोर्द्वयो-र्दाक्षिणात्यो त्तरात्ययो (वक्तव्यता) भणिता तथा सन्निहितसामानिकयोरपि भणितव्या संग्रहणिगाथा—अणपर्णिकपणपर्णिका ऋषिवादी भूतवादी च । क्रन्दितमहाक्रन्दी कोहण्डपतंगदेवाश्च ॥ १ ॥ इम इन्द्राः सन्निहित सामानौ धातृविधातारौ ऋषिरिषिपालः । ईश्वरमहेश्वरौ चैव भवति सुवत्सो विशालश्च ॥ १ ॥ हासो हासरतिश्चैव श्वेतश्च तथा महाश्वेतः पतंगः पतंगपतिश्च ज्ञातव्या आनुपूर्व्या ॥ २ ॥ क्व भदन्त । ज्योतिष्काणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । ज्योतिष्का देवाः परिवसन्ति ? गौतम । अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद् भूमिभागात् सप्तनवतियोजनशतानूर्ध्वं उत्पत्य दशोत्तरं योजनशत बाहल्यं तिर्यगसंख्येयं ज्योतिर्विषयकम ज्योतिष्काणां देवानां स्थान

देवाण तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा अद्धकविट्ठग संठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत विजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगनतलमणुलिहमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बाहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं जोइसियाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तंजहा—बहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छराराहूधूमकेउबुधाअंगारगा तत्ततवणि ज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा ना णासंठाणसंठियाओय पंचवन्नाओ तारयाओ ठियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामकपागडि

सत्यानि भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि अर्द्धकपित्थकसंस्थानसंस्थितानि सर्वस्फटिकमयानि अभ्युद्गतोत्सृत प्रहसितानि विविधमणिकनकरत्नभक्तिचित्राणि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलितानि तुङ्गानि गगनतलानुलिखच्छिख राणि जालान्तररत्नपञ्जरोन्मीलितमिव मणिकनकस्तूपिकानि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि नानामणिमयदामालङ्कृतानि अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्तटानि सुखस्पर्शानि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र ज्यो तिष्काणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येय भागे तत्र बहवो ज्योतिष्कदेवाः परिवसन्ति तद्यथा–बृहस्पतय चन्द्राः सूर्याः शुक्राः शनैश्चरा राहवः केतवो बुधा अङ्गारकास्तप्ततपनीयकनकवर्णा य ग्रहा ज्योतिश्चक्रे चारं चरन्ति केतवो गतिरतिका अष्टाविंशतिविधा

पचिघमउक्ता महिड्डिया जाव प्पन्नासेमाणा तेण तत्य साण२ घिमाणायाससयसहस्साण साण२ सामाणियसाहस्सीण साण २ श्चग्गमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ श्चणियाण साण २ श्चणियाहिघईण साण२ श्चायरक्कदेवसाहस्सीण श्चन्नेसि च यहूण जोइसियाण देवाणय देवीणय श्चाहेवञ्च जाव विहरति चंदिमसूरियाय एत्य दुवे जोइसिदा जोइसियरायाणो परिवसति महिड्डिया जाव पन्नासेमाणा ते ण तत्य साण २ जोइसियविमाणायाससयसहस्साण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह श्चग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह श्चणियाण सत्तण्ह श्चणियाहियईण सोळसण्ह श्चायरक्कदेवसाहस्सीण जोइसियाण देवाणय देवीणय श्चाहेवञ्च जाव विहरति। कहिण भते! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता२ण ठाणा प० ? कहिण भते! वेमाणिया देवा परिवसति ? गो०। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरम

(षड्विंशतिसंख्याका श्चचिर्जिनाद्या लोकमाविद्धा) नक्षत्र देवगणा नानासंस्थानसंस्थिताश्च पञ्चवर्णास्तारका (स्थाराएवेसर्वेपि) स्थितलेश्या चारिणो ऽविश्राममण्डलगतिकाः प्रत्येकं नामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वे षां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मर क्षदेवसहस्राणां अन्येषां बहूनां ज्योतिष्काणां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावद्विहरन्ति सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्रौ ज्योतिष्कराजानौ परिवसतः महर्द्धिकौ यावत्प्रभासयन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतु र्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां त्रयाणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षदेवसहस्राणां ज्योतिष्काणामन्येषां बहूनां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं यावद्विहरतः। हे भदन्त! वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त! वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्तताराख्वाण बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा
इं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं सोहम्मीसाणसणकु
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु एत्थ णं वेमाणि
याण देवाण चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंच सहस्साइं तेवीस विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेण
विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा
सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थ णं वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप
ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति त०—सोह
म्मीसाणसणकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया
देवा तेण मिगमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि ब-
हूनि योजनसहस्राणि बह्व्यो योजनकोट्यो बह्व्यो योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानत
प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु सर्वेषां वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिविमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भव-
न्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कण्टक-
च्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ-
प्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारान

विधमउडा महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति । कहि णं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० ? कहि णं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम

(अष्टाविंशतिस्थाना यानिविमानानि सौधर्मादिका) भवन्ति देवगणा नानाविधमणिरत्नमया पञ्चवर्णसारका (स्वरूपतः सर्वेऽपि) चकितसेवया चारित्र्यो अविद्यासमहसमर्तिका प्रत्येकं नानाकुण्डलितविघुमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्तः ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां ज्योतिष्काणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावद्विहरन्ति सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्रौ ज्योतिष्कराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ यावत्प्रभासयन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणां ज्योतिष्काणामन्येषां च बहूनां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरतः । हे भदन्त ! वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त ! वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्तताराख्वाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा
इं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं सोहम्मीसाणसणंकु
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु एत्थ णं वेमाणि
याणं देवाणं चउरासीइं विमाणसयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं विमाणा इयतीतिमक्खायं तेणं
विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा
ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप
ज्जत्ताणं ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह
म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया
देवा तेणं मियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराख्पाणां बहूनि योजनशतानि ब
हूनि योजनसहस्राणि बह्वीर्योजनकोटीर्बह्वीर्योजनकोटीकोटीरूर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारानत
प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु अत्रैतेषां वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिविमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भव
न्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्
छायानि सप्रभाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ
प्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारान

वरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया सुहवण्णगंधफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं

समवतारकानुत्तरग्रैवेयकानुत्तरोपपातिका देवा स्तोत्र मृगमहिषवराहसिंहछगलदर्दुरहयगजपतिभुजगखड्गवृषभाङ्कविडिमविकृतमुकुटाः प्रशिथिलवरमुकुटकिरीटधारिणो वरकुण्डलोद्योतितानना मुकुटदीप्तशिरसो रक्ताभाः पद्मपक्ष्मगौरा भास्वराः शुभवर्णगन्धस्पर्शा उत्तमवैक्रियिकाः प्रवरवस्त्रगन्धमाल्यानुलेपनधरा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महासौख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्तः प्रभासयन्तस्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ त्रायस्त्रिंशकानां स्वेषां २ लोकपालानां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २

२ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण वेमाणियाण देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विह रंति । कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० कहि णं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गो० ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा गाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्तताराणं बहूणि जोयणसयाइं बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयण सयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं सोहम्मे ना मं कप्पे पन्नत्ते, पाचीणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

अनीकानां सप्तानां २ अनीकाधिपतीनां सप्तानां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणा मन्येषां च बहूनां वैमानिकानां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो विहरन्ति महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवा दितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जानो विहरन्ति । क्व भदन्त ! सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! सौधर्म कदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्य ग्रहगणनक्षत्रतारारूपेभ्यो बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्वीः योजनकोटीः बह्वीः योजनकोटीकोटी ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुदीचीनदक्षिणविस्तीर्णं अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितमर्चिर्मालाभासराशिवर्णाभं अस ख्येया योजनकोटीकोटी आयामविष्कम्भाभ्यामसंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयं अच्छं यावत्प्रतिरूपं तत्र

जे असंखेज्जाइं जोयणकोडीओ असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण कोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थ णं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसि णं विमाणाणं बहु मज्झदेसभाए पंचवडेंसया पण्णत्ता, तं०—असोगवडेंसए सत्तवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडेंसए ते णं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थ णं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभा सेमाणा ते णं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी णं एवं जहेव ठाणाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोह म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव

सौधर्मदेवानां द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तथा विमानानां बहुमध्यदेशभागे पंचावतंसकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकश्चूतावतंसको मध्ये तत्र सौधर्मावतंसकस्ते अवतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपाः अत्र सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवः सौधर्मदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त[illegible] ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वासां २ अग्रमहिषीणां स्वेषां २ सामा निकसहस्राणामेवं सर्वेषामेषां तथैतेषामपि भणितव्यं यावदात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिनां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति । शक्रोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति वज्रपाणिः पुरंदरः शतक्रतुः सहस्राक्षः मघवा पाकशासनो दक्षिणार्द्धलोकाधि

राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघव पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा णावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरति। कहि णं भंते। ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०? कहि णं भंते। ईसाणगदेवा परिव संति? गो०! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भू मिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव

पति द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राधिपति ऐरावणवाहनः सुरेन्द्रोऽरजोम्बरवस्त्रधरः आलगितमालमुकुटो नवहेमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्य मानगण्डो महर्द्धिको यावत्प्रभासयन् स तत्र द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चतुरशीत्याः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्संख्याकानां त्रायस्त्रिंश कदेवानां चतुर्णां लोकपालानां अष्टानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशी त्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं कुर्वन् पालयन् यावद्विहरति। क्व भदन्त। ईशानदेवानां प र्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ईशानदेवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतोऽस्याः रत्नप्रभायाः पृ थिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपेभ्यो बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनशतसहस्राणि यावदुत्पत्यात्रैशान

उप्पइत्ता एत्थणं ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एव जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थण ईसाणगदेवाण अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खायं तेण विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिण बहुमज्झदेसभाए पच वडिसगा पन्नत्ता, अकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव रूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए, तेण वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थण ईसाणाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असखेज्जइभागे सेस जहा सो हम्मगदेवाण जाव विहरति, ईसाण इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयअंबरवत्थधरे सेस जहा सक्कस्स जाव पभासमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण असीतीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणि

नाम कल्पः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायत उदग्दक्षिणविस्तीर्ण एव यथा सौधर्मो यावत्प्रतिरूप तत्रेशानकानां देवानां अष्टाविंशति विमानावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यात तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा—अङ्का वतंसकः स्फटिकावतंसको जातरूपावतंसको मध्ये ईशानावतंसक तेऽवतंसकाः सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेशानानां [देवानां पर्याप्तापर्या प्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे शेषं यथा सौधर्मकदेवानां यावद्विहरन्ति। ईशानोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति शूल पाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपति अष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राधिपति अरजोऽम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य (प्रज्ञापनोक्तं यथा या वत्प्रभासयन्) स चाष्टाविंशतेर्विमानावासशतसहस्राणामशीतेः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतः त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां च

याहिवईण चउरंह असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण ईसाणकप्पवासीण वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिण भंते ! सणकुमारदेवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! सणकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसि बहुइ जोयणाइ बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहुगाउ जोयणकोडीउ बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पण्णत्ते । पाईण पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, एत्थण सणकुमाराण देवाण बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खाय, तण विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिण विमाणाण बहुमज्झदेसभागे पच वडिसगा पण्णत्ता, तजहा—असोगवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए चपगवडिंसए चूयवडि

ईशानमग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतसृणां चतुरशीतिसामानिकसहस्राणां मन्येषां च बहूनां मीशानकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं कुर्वन्नावाऽऽहरति । क्व भदन्त ! सनत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! सनत्कुमारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सौधर्मस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि बहूनि योजनश-तानि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्वी योजनकोट्यो बह्वी योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सनत्कुमारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं, प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा सौधर्मं कल्पो यावत्प्रतिरूपः तत्र सनत्कुमाराणां देवानां द्वादशविमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्या-तम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां मध्ये बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अशो-कावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकः चूतावतंसको मध्ये तत्र सनत्कुमारावतंसकः तेऽवतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा तत्र

उप्पइत्ता एत्थणं ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसगा पन्नत्ता, अंकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे एत्थ ईसाणवडिंसए, तेणं वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी उसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरियाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणि

नाम कल्पं प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायत उदग्दक्षिणविस्तीर्ण एवं यथा सौधर्मो यावत्प्रतिरूपं तत्रेशानकानां देवानां अष्टाविंशति विमानावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातं तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अङ्का वतंसकः स्फटिकावतंसको यावत्सुरूपावतंसको मध्ये ईशानावतंसकः ते अवतंसकाः सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेशानानां देवानां पर्याप्तापर्या प्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकासंख्येयभागे शेषं यथा सौधर्मकदेवानां यावद्विहरन्ति। ईशानोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति शूल पाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपति अष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राधिपतिः अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य (यावत्प्रभासमाना तथा वा पि) यावत्प्रभासमानः तत्राष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राणामशीतेः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतः त्रायस्त्रिंशकानां चतसृणां लोकपालानां च

विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबर

वत्थधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवरं अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! बंभलोगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं बंभलोए नामं कप्पे पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेसं जहा सणकुमाराणं नवरं चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडेंसगा जहा सोहम्मस्स वडेंसया नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडेंसए एत्थणं बंभलोगाणं देवाणं ठाणा प०, सेसं तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरति नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए

नत्कुमारे कल्पे यावद्विहरति नवरमष्टानां विमानावासशतसहस्राणां सप्ततिः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां (अशीत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थः) यावद्विहरति । हे भदन्त ! ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, हे भदन्त ! ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोक नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितं अर्चिर्मालाभाराशिप्रभं अवशेषं यथा सनत्कुमाराणां नवर चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा सौधर्मस्यावतंसका नवरं मध्येऽत्र ब्रह्मलोकावतंसकोऽत्र ब्रह्मलोकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि शेषं तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोऽम्बरवस्त्रधर एवं यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवरं चतुर्णां वि

सए मज्झे तत्थ सणकुमारवडिंसए तेण वडिंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थण सणकुमारदे वाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सणकुमारा देवा परिवसति महिड्डिया जाव पभासमाणा विहरति नवर अग्गमहिसीओ णत्थि , सणकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तत्थ बारसण्ह विमाणावाससयसहस्साण बाव त्तरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवर चउण्ह बावत्तरीण आयरक्खदेवसाह स्सीण जाव विहरइ । कहिण भंते ! माहिंदाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! माहिंदगा देवा परिवसति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइ जोयणाइ जाव बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूर उप्पइत्ता तत्थण माहिंदे नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणकुमारे, नवर अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा वडेंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

सनत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भाग तत्र बहवः सनत्कुमाराः देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावद्विहरन्ति नवरमग्रमहिष्यो न सन्ति सनत्कुमारश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशानां विमानावासशतसहस्राणां द्विसप्ततेः सामानिकसहस्राणां शेषं यथा शक्रस्याग्रमहिषीवर्जं नवरं चतुर्णां द्विसप्ततीनामात्मरक्षदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! माहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! माहेन्द्रका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ईशानस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावद्बहुका योजनकोटीकोटीः ऊर्ध्वं दूरं उत्पत्य तत्र माहेन्द्रो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीना यतः एवं यथैव सनत्कुमारः नवरमष्टौ विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा ईशाने नवरं मध्ये तत्र माहेन्द्रावतंसकः एवं जहा य

दयक्रसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयवर वत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अठण्ह विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय साहस्सीण चउण्ह सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भंते ! बंभलोगदेवाण पज्जा त्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंत ! बंभलोगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिंदाण कप्पा ण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाइ जाव उप्पइत्ता एत्थण बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणा यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचदसठाणसठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेस जहा सणकुमा राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडसगा जहा सोहम्मस्स वडसया नवर मज्झे इत्थ बंभलोयव डसए एत्थण बंभलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवस इ अरयअरयत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउण्ह विमाणावाससयसहस्साण सठीए

नत्कुमारे कल्पे यावद्विहरति नवरमष्टाना विमानावासशतसहस्राणां सप्ततिः सामानिकसहस्राणा चतुर्णां (चतुर्गुणाना) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसह स्राणा (अशीत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थः) यावद्विहरति । क्व भदन्त ! ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोक नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थित अर्चिर्मालाभाराशिप्रभ अवशेष यथा सनत्कुमाराणां नव र चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा सौधर्मस्यावतंसका नवरं मध्यत्र ब्रह्मलोकावतंसकोऽत्र ब्रह्मलोकानां देवानां स्थानानि प्र ज्ञप्तानि शेष तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्माऽत्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवरं चतुर्णां वि

सामाणियसाहस्सीण चउरह्यसठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, कहिण भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खिय सपडिदिसि बहूइ जोयणसयाइ जाव बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण लंतए नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवर पन्नासाविमाणावाससहस्सा हवतीतिमक्खाय, वडसगा जहा ईसाणवडसगा नवर मज्झे इत्थ लंतगवडसए देवा तहेव जाव विहरति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नवर पन्नासाए विमाणावाससहस्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउरह्ठ पन्नासाण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! महासुक्कादे

सामानिकसहस्राणां वसतिः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्भुजानां) षष्ठ्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणां) अन्येषाञ्च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! लान्तकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, हे भदन्त ! लान्तकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि यावदूरमुत्पत्यात्र लान्तकं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतं यथा ब्रह्मलोके नवरं पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् अवतंसका यथा ईशानावतंसका नवरं मध्ये लान्तकावतंसको देवा तथैव यावद्विहरन्ति लान्तकोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारे नवरं पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणां पञ्चाशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्भुजानां) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां (तत्सहस्रात्मरक्षकदेवसहस्राणां) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! महाशुक्रदेवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, हे भदन्त ! महाशुक्रा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्प

वा परिवसंति ? गोयमा ! लंतरस कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्के नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवर चत्तालीस विमाणावा ससहस्सा हवतीति मक्खाय, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवर मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विह रइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीण चत्ताली साए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह चत्तालीसाण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण भंते ! सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण भंते ! सहस्सारा देवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपडीणायवे जहा बंभलोए नवर छविमाणावाससहस्सा हवतीति मक्खाय देवा तहेव वडेंसगा जहा ईसाणस्स वडेंसगा नवर मज्झे इत्थ सहस्सारवडेंसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाशुक्र नाम कल्पं प्रज्ञप्तम् प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्त्राणि भवन्तीति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति, महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवर चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्त्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्त्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षकदेवसहस्त्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सहस्त्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । सहस्त्रारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्त्रारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर षड्विमानावासशतसहस्त्राणि भवन्तीति मयाख्यात देवास्तथैवावतंसका यथा ईशानस्यावतंसका नवर मध्ये यत्र सहस्त्रारावतंसको यावद्विहरन्ति, सहस्त्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसठीणं श्यायरक्खदेवसाहस्सीण श्यन्नेसि च यहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते ! लंतगदेवा परियसंति ? गोयमा ! यंभलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि यहूइ जोयणसयाइ जाय यहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थण लंतए नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते जहा यंभलोए नवर पन्नासाविमाणावाससहस्सा हयंतीतिमक्खाय, वडेसगा जहा ईसाणवडेसगा नवरं मज्झे इत्थ लंतगवडेसए देवा तहेव जाय विहरति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवर पन्नासाए यिमाणावाससहस्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पन्नासाण श्यायरक्खदेवसाहस्सीण श्यन्नेसिंच यहूण जाय यिहरइ । कहिण भंते ! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! महासुक्कादे

सामानिकसहस्राणां पञ्चाशतः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशतरक्षदेवसहस्राणां (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणां) अन्येषाञ्च बहूनां यावद्विहरति । क भदन्त ! लान्तकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क भदन्त ! लान्तकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि यावदूरमुत्पत्य लान्तकं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतं यथा ब्रह्मलोके नवरं पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् अवतंसका यथा ईशानावतंसका नवरं मध्ये लान्तकावतंसको देवा तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारे नवरं पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणां पञ्चाशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां (शतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणां) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क भदन्त ! महाशुक्राणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क भदन्त ! महाशुक्रा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्

वा परिवसंति ? गोयमा ! लंतस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थ णं महासुक्के नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवरं मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति । कहि णं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । कहि णं भंते ! सहस्सारा देवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थ णं सहस्सारे नामं कप्पे प०, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं देवा तहेव वडेंसगा जहा ईसाणस्स वडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ सहस्सारवडेंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकु

स्यात्र महाशुक्रं नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णः यथा ब्रह्मलोको नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्ती ति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति. महाशुक्रोऽत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! सहस्रारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रति दिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवरं षड्विमानावासशतसहस्राणि भ वन्तीति मयाख्यातं देवास्तथैवावतंसका यथा ईशानस्यावतंसका नवरं मध्ये अत्र सहस्रारावतंसको यावद्विहरन्ति । सहस्रारोऽत्र देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं छण्हं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हय तीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरति । कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवा परिवसति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थणं आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिप्पभा सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया हवंतीति मक्खाय जाव पडिरूवा, वडेंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे पाणयवडेंसए तेणं वडेंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति

वः परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं षण्णां विमानावासशतसहस्राणां त्रिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां त्रिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां यावदाधिपत्यं कुर्वन्विहरति । क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्रानतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतौ उत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभासराशिप्रभौ शेषं यथा सनत्कुमारो यावत्प्रतिरूपौ तत्रानतप्राणतदेवानां चत्वारि विमानावासशतानि भवन्तीति मख्यातम् यावत्प्रतिरूपौ, अवतंसका यथा सौधर्मे नवरं मध्ये प्राणतावतंसकः तेऽवतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा अत्रानतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहव आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति सर्वदेवा यावत्प्रभासमानाः ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतानां यावद्विहरन्ति प्राणतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति, यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिड्ढिया जाव पन्नासेमाणा तेण तत्थ साण२ विमाणावाससयाण जाव विहरति पाणए इत्थ देविदे देवरा या परिवसति जहा सणकुमारे णयर चउरह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जाव विहरति । कहिण भंते ! आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि एत्थण आरणाच्चुयानाम दुवे कप्पा पण्णत्ता पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवि च्छिन्ना अद्धचदसठाणसठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामवि क्खंभेण असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लठा घठा मठा नीरया निम्मला णिप्पका निक्कडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि रूवा एत्थण आरणच्चुयाण देवाण तिन्नि विमाणावाससया हवतीति मक्खाय, तेण विमाणा सव्वरयणाम

मानावासशतानां विंशतिः सामानिकसहस्राणां अशीतिः आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! आरणाच्युतानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त ! आरणाच्युतका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! आनतप्राणतयोः कल्पयोरुपरि सपक्षं सप्र तिदिक् अत्रारणप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतावुत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभासराशिप्रभौ असंख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्कम्भाभ्यां असंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयौ अच्छौ श्लक्ष्णौ लष्टौ घृष्टौ मृष्टौ नीरजसौ निर्मलौ निष्पङ्कौ निष्कण्टकच्छायौ सप्रभौ सश्रीकौ सोद्योतौ प्रासादीयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिरूपौ अत्रारणाच्युतानां देवानां त्रीणि विमाना वासशतानि भवन्तीति मयाख्यातं । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पंका

या अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा तेसिण विमाणाण बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तंजहा अंकवडेंसए फलिहवडेंसए रयणवडेंसए जाव रूववडेंसए मज्झे इत्थ अच्चुयवडेंसए, तेण वडेंसया सव्वरय णामया जाव पडिरूवा, एत्थण आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरति नवर तिण्ह विमाणावाससयाणं दसण्ह सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति, बत्तीसट्ठावीसा बारसअट्ठचउरोसयसहस्सा पन्नायत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि। सत्तविमाणस याइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा—चउरासीइअसीति बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीए।

नि निष्कङ्कच्छायानि सप्रभाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां बहुमध्यदेशभा गे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-अंकावतंसकः स्फटिकावतंसको रत्नावतंसको यावद्रूपावतंसको मध्ये अच्युतावतंसकः ते चावतंसकाः सर्वरत्न मया यावत्प्रतिरूपा अत्रारणाच्युतानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकासंख्येयभागे तत्र बहव आरणाच्युता देवाः प रिवसन्ति यावद्विहरन्ति अच्युतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा प्राणतो यावद्विहरति नवरं त्रयाणां विमानावासशतानां दशानां सामा निकसहस्राणां चत्वारिंशतश्चात्मरक्षदेवसहस्राणां आधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावत्कुर्वन् विहरति द्वात्रिंशदष्टाविंशति द्वादशाष्टौ चतुःशतसहस्राणि। पञ्चाशच्चत्वारिंशत् षट्सहस्राणि सहस्रारे ॥ १ ॥ आनतप्राणतकल्पे चत्वारिंशदारणाच्युतेष्विति। षड्विमानशतसहस्राणि चतुर्ष्वपीत्येषु कल्पेषु ॥

पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्खा चउगुणा । कहिण भंते ! हिठिमगेविज्ज
गदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता ? कहिण भंते ! हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आ
रणच्चुयाण कप्पाण उप्पि जाव उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण ततो गेवेज्जविमाण
पत्थडा पन्नत्ता, पाईणपईणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासि
वन्नाभा सेस जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणावास
सए हवतीति मक्खाय तेण विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा , एत्थण हेठिमगेविज्जगाण देवाण
पज्जत्ताण २ ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परि
वसंति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अ
णिदा अपेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा नाम ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिण भंते ! मज्झिमगाण

---

२ ॥ सामानिकसंग्रहणिगाथा-चतुरशीतिरशीतिर्द्विसप्ततिः सप्ततिश्च षष्टिश्च । पञ्चाशच्चत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशद्दशसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा
आत्मरक्षाः । क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम !
आरणाच्युतकल्पयोरुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदूर्ध्वमुत्पत्यात्र अधस्तनग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्त
रदक्षिणविस्तीर्णानि प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितानि अर्चिर्मालाभासराशिवर्णाभानि शेषं यथा ब्रह्मलोके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राधस्तनग्रैवेयकदेवा
नां एकादशोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि । अत्राधस्तनग्रैवेयकाणां देवानां
पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो अधस्तनग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति सर्वे समर्द्धिकाः सर्वे सम

गेविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाण उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थण मज्झिमगेविज्जगदेवाण सतोगेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवर सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेण विमाणा जाव पडिरूवा एत्थण मज्झिमगेवेज्जाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेवेज्जगाण देवाणं तउ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणाउ सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवर

पुत्रिकाः सर्वे समप्रभाः सर्वे समयशसः सर्वे महानुभावा महासौख्या अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्य मध्यमग्रैवेयकदेवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं सप्तोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवेयकाणां देवानां स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य उपरिमग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथा अधस्तनग्रैवेयका

एगे विमाणावाससए हवतीति मक्खाए, सेस तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए । सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीतीवइत्ता तेयं परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । ते णं विमाणा सव्वरयणामया

मां भवर्ं एवं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । शेषं तथैव भणितव्यं यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! एकादशोत्तरमध-स्तनेषु सप्तोत्तरं तु माध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्र० ? क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पाः त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य (उल्लङ्घ्य) तेभ्योऽपि परं दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पञ्चसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमानाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-विजयवैजयन्तजयन्तो

गेविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खायं, ते णं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थ णं मज्झिमगेवेज्जाणं देवाणं जाव तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहि णं भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! उवरिम गेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थ णं उवरिमगेवेज्जगाणं देवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणाइं सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं

पुत्रिकाः सर्वे समपक्षकाः सर्वे समप्रतिदिशः सर्वे महानुभावा महायशसः अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामतस्ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्य अत्र मध्यमग्रैवेयकदेवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं सप्तोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवेयकाणां देवानां स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य अत्रोपरिमग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथा अधस्तनग्रैवेयका

एगे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, सेसं तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए । सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीतीवइत्ता तेण परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । ते णं विमाणा सव्वरयणामया

भा नवरं एकं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम्, शेषं तथैव भणितव्यं यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! एकादशोत्तरमध-स्तनेषु सप्तोत्तरं तु माध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्र० ? क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पा त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य (उल्लङ्घ्य) तेभ्योऽपि परं दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पञ्चसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमानाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-विजयवैजयन्तोजयन्तो

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खायं, ते णं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगाणं देवाणं जाव तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो ! कहि णं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थ णं उवरिमगेविज्जगाणं देवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पण्णत्ता पाईणपडीणायता सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं

द्युतिकाः सर्वे समयशसः सर्वे समबलाः सर्वे महानुभावाः महासौख्याः अनिन्द्राः अप्रेष्याः अपुरोहिताः अहमिन्द्रा नामतस्ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्य मध्यमग्रैवेयकदेवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं सप्तोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवेयकाणां देवानां स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येये भागे तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य अत्रोपरिमग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथाऽधस्तनग्रैवेयका

धहुमज्झदेसन्नाए अठजोयणिए खेत्ते अठजोयणाइं बाहल्लेण पन्नत्ते, ततो अणंतर च णं माताए २ पए सपरिहाणीए२ परिहायमाणीर सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स सखेज्जइभागे बाहल्ले ण पण्णत्ता, इसीपब्भाराएणं पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पण्णत्ता, इसीतिवा इसीपब्भाराइवा तणूतिया तणुयरीतिवा सिद्धीतिया सिद्धालएतिवा मुत्तीइया मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूभियातिया लोय पडिबुज्झणाइया सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा वइवा। इसीपब्भाराण पुढवी सेता सखदलविमलसोत्थिय मुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवण्णमई अच्छा सण्हा लण्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इसीपब्भाराएणं सीताए जोयणंमि लोगतो तस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्भागे एत्थणं सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजो

समयाभ्यां परिहीयमाना सर्वेषु चरिमान्तेषु मक्षिकापत्रतोऽप्यतितन्वी अंगुलासंख्येयभाग बाहल्येन प्रज्ञप्ता। ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या द्वादश ना मधेयानि भवन्तीति तद्यथा-ईषदिति वा ईषत्प्राग्भारेति वा तन्वीति वा तनुतरीति वा सिद्धिरिति वा सिद्धालय इति वा मुक्तिरिति वा मुक्ताल य इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रस्तूपिकेति वा लोकाग्रप्रतिवाहिनीति वा सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा इति वा सा चेषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता शङ्खदलविमलसौवस्तिकमृणालदकरजस्तुषारगोक्षीरहारधवला उत्तानकच्छत्रसंस्थानसंस्थिता सर्वार्जुनस्वर्णमयी अच्छा सत्वा लष्टा घृष्टा मृष्टा नीरजा निर्मला निष्पङ्का निष्कङ्कटच्छाया सप्रभा समरीचिका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या उपरि योजने लोकान्तः तस्य च योजनस्य यदुपरितनं गव्यूतं तस्य गव्यूतस्य यदुपरितनं षड्भागं यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका अपर्यवसिता अनेकजा

अच्छा सण्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा
दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ।
तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे समिड्ढिया सव्वे
समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा ते देवगणा पण्णत्ता । स
मणाउसो । कहिं णं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता । कहिं णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स
महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालसजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा नाम पुढवी प०,
पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगजोयणकोडीओ बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं सहं
स्साइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता । ईसीपब्भाराएणं पुढवीए

पराजिताः सर्वार्थसिद्धः । ते विमानाः सर्वरत्नमया अच्छा श्लक्ष्णा घृष्टा मृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कङ्कटच्छायाः सप्रभाः सश्रीका सोद्यो
ताः प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा अत्रानुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि (स्थानेषु)
लोकस्यासंख्येयं भाग तत्र बहवोऽनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति सर्वे समर्द्धिकाः सर्वे समबलाः सर्वे समानुभावा महासौख्या अनिन्द्रा अपुरोहि
ता अप्रेष्या अहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । क भदन्त । सिद्धानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क भदन्त ! सिद्धाः परिवसन्ति ?
गौतम । सर्वार्थस्य महाविमानस्योपरितनायाः स्तूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्ध्वं अबाधया ईषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी प्रज्ञप्ता, पंचचत्वारिंशद्योजन
शतसहस्राणि आयामविष्कम्भाभ्यां एकयोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपञ्चाशद्योजनशते किंचिद्विशेषाधिका
नि परिक्षेपेण प्रज्ञप्ता ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे ऽष्टयोजनिकं क्षेत्रं अष्टौ योजनानि बाहल्येन प्रज्ञप्तं तदनन्तरं मात्रया २ प्रदे

॥ ९ ॥ फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो

ताजरमरणविप्पमुक्का । अन्नोन्नसमोगाढा पुट्ठा सव्वे वि लोयंते ॥ ९ ॥ फुसइ अणंते सिद्धे सव्वपएसेहिं नियमसो सिद्धा । ते वि असंखेज्जगुणा देसपदेसेहिं जे पुट्ठा ॥ १० ॥ असरीरा जीवघणा उवउत्ता दंसणे य नाणे य । सागारमणागारं लक्खणमेयं तु सिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणंती सव्वभावगुणभावे । पासंति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीहिणंताहिं ॥१२॥ न वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं न वि य सव्वदेवाणं । जं सिद्धाणं सुक्खं अव्वाबाहं उवगयाणं ॥ १३ ॥ सुरगणसुहं समत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं । न वि पावइ मुत्तिसुहं णंताहिं वग्गवग्गूहिं ॥ १४ ॥ सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा । सोणंतवग्गभइओ सव्वागासे ण माइज्जा ॥ १५ ॥ जह नाम कोइ मिच्छो नगरगुणे बहुविहे वियाणंतो । न चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए ॥१६॥ इय सिद्धाणं सोक्खं अणोवमं नत्थि तस्स ओवम्मं । किंचि विसेसेणित्तो सारिक्खमिणं सुणह वोच्छं ॥ १७ ॥ जह सव्वकामगुणियं पुरिसो

अवगाहनया सिद्धाः भवत्रिभागेन भवन्ति परिहीनाः । संस्थानमनित्थंस्थं जरामरणविप्रमुक्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रैकः सिद्धस्तत्रानन्ता भवक्षयविमुक्ताः । अन्योन्यसमवगाढाः स्पृष्टाः (लग्नाः) सर्वेऽपि लोकान्ते ॥ ९ ॥ स्पृशत्यनन्तान् सिद्धान् सर्वप्रदेशैर्नियमात् सिद्धाः । तेऽप्यसंख्येयगुणा देशप्रदेशैर्ये स्पृष्टाः ॥ १० ॥ अशरीरा जीवघना उपयुक्ता दर्शने च ज्ञाने । साकारानाकारं लक्षणमेतत्तु सिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्ति सर्वभावगुणभावान् । पश्यन्ति सर्वतः खलु केवलदृष्टिभिरनन्ताभिः ॥ १२ ॥ नैवास्ति मनुष्याणां तत्सौख्यं नास्ति सर्वदेवानाम् । यत्सिद्धानां सौख्यमव्याबाधामुपगतानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखं समस्तं सर्वाद्धापिण्डितमनन्तगुणम् । न प्राप्नोति मुक्तिसुखमनन्तैर्वर्गैर्वर्गितमपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्य सुखराशिः सर्वाद्धापिण्डितो यदि भवत् । सोऽनन्तवर्गभक्तः सर्वाकाशे नो माति तत्सौख्यम् ॥ १५ ॥ म्लेच्छः कश्चिन्नाम यथा विविधानप्यनगरगुणान् । परिकथयितुं न शक्नोति उपमायास्तत्राभावात् ॥ १६ ॥ इति सिद्धानां सौख्यमनुपमं नास्ति तस्यौपम्यम् । किञ्चिद्विशेषतोऽस्य सादृश्यं शृणुत वक्ष्यमाणमिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलीजावपुणभवगभवासवसही एवते समइक्कंता सासयमणागयद्ध कालं चिठंति, तत्थवियते

अवेदा अवेयणाणिम्ममा असगायससारविप्पमुक्का । पदेसनिव्वत्तिसंठाणा ॥१॥ कहिंपडिहयासिद्धा कहिं सिद्धापइठिया । कहियोंदीचइत्ताणं कहंगतूणासिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया । इहयोंदीचइत्ताण तत्थगतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सवा जचरिमभवेहविज्जसठाण । तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइहं भवचयतस्सचरमसमयंमि । आसीयपदेसघण तसठाणताहिं तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥ चत्तारियरयणीउ रयणितिभागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ एगाय होइरयणी अठेवयअंगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नोगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ जंगाहणाएसिद्धा भवतिभागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणित्थत्थ जजरामरणविप्पमुक्काण ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअण

[illegible] निस्सारकलकलीजावपुनर्भवगर्भवसति [illegible] समतिक्रान्ताः शाश्वतमनागताद्धां कालं तिष्ठन्ति, तत्रापि च ते अवेदा अवेदना निर्ममा असङ्गाय। संसारविमुक्ताः प्रदेशनिर्वृत्तसंस्थानाः ॥१॥ [illegible] सिद्धाः [illegible] सिद्धाः प्रतिष्ठिताः । [illegible] ॥ अलोके प्रतिहताः सिद्धा लोकाग्रे च प्रतिष्ठिताः । इहैव बोन्दिं त्यक्त्वा तत्र गत्वा सिध्यन्तु ॥ २ ॥ दीर्घं वा ह्रस्वं वा यच्चरमभवे भवेत्संस्थानं । ततस्त्रि- भागहीना सिद्धानामवगाहना भणिता ॥३॥ [illegible] भवचरमसमये । [illegible] ॥ ४ ॥ त्रीणि शतानि [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] । एषा खलु [illegible] भणिता ॥ ७ ॥

हिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहि या उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दा हिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेण पुर च्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि या पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया , एव चउरिंदियावि , दिसानुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज गुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखे

विशेषाधिकाः , दिगनुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः , दिगनुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिका दक्षिणेन पूर्वेण विशेषाधिकाः पश्चिमेन विशेषाधिका' दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषा धिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषा धिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन द्वीन्द्रियाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रियाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिका।' एवं चतुरिन्द्रिया अपि । दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकाः पूर्वेण पश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः , दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः , दिगनुपा

नोत्तगजोयणकोड । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलनि व्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिट्ठतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरंपर गतत्ति । उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणवि मुक्का । अव्वाबाहसुक्खं अणुहोंतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ बितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तप ज्जत्तसुहुमसण्णीभवत्थियचरिमे । जीवयखेत्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणं उत्तरेणं विसेसाहिया पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चत्थिमेणं विसेसा

यथा सर्वकामगुणितं पुरुषो भुक्त्वा भोजनं कोऽपि । तृष्णाक्षुधाविमुक्तः तिष्ठति यथाऽमृततृप्तः ॥ १८ ॥ इति सर्वकालतृप्ता अतुलं निर्वाणमुपगताः सिद्धाः । शाश्वतमव्याबाधं तिष्ठन्ति सुखिनः सुखं प्राप्ताः ॥ १९ ॥ सिद्धा इति बुद्धा इति पारगता इति परम्परगता इ । उन्मुक्तकर्मकवचा अजरा अमरा असङ्गाश्च ॥ २० ॥ निस्तीर्णसर्वदुःखा जातिजरामरणबन्धनविमुक्ताः । अव्याबाधं सौख्यं अनुभवन्ति शाश्वतं सिद्धाः ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रगणि शिष्यमा नवचन्द्रर्षि विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २ ॥

दिक्गतीन्द्रियकाया योगो वेदः कषायलेश्ये च । सम्यक्त्वज्ञानदर्शन संयतोपयोगाहाराः ॥ १ ॥ भाषकपरीतपर्याप्त सूक्ष्मसंज्ञीभवास्तिचरमाश्च । जीवक्षेत्रबन्धः पुद्गल महादण्डकश्च ॥ २ ॥ दिगनुपातेन (दिशोऽधिकृत्येत्यर्थः) सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका दक्षिणोत्तरेण च विशेषाधिकाः पूर्वेण विशेषाधिकाः पश्चिमेन

उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण संखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा । दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा

नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योद्वितीयायाः शर्कराप्रभपृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेना संख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिकाः, दक्षिणेन विशेषाधिका, उत्तरेण विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण संख्येयगुणाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवाः पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवाः पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

ज्जगुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खेज्जगुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खेज्जगुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखे ज्जगुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज गुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढ विनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असं खेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पंचमा धूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम

तम सर्वस्तोकाः शर्करप्रभपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिका वालुकप्रभापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका धूमप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणा। दिगनुपातेन सर्वस्तोका तमःप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरे ष दक्षिणेनासंख्येयगुणाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका अधःसप्तमपृथ्वीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दाक्षिणात्येभ्यो च सप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्यः षष्ठ्या स्तमायाः पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः। दाक्षिणात्येभ्यस्तमापृथिवीनैरयिकेभ्यः पञ्चम्या धूमप्रभा याः पृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः दाक्षिणात्येभ्यो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यश्चतुर्थ्याः पङ्कप्रभायाः पृ थिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः दाक्षिणात्येभ्यः पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यस्तृतीयाया वालुकाप्रभपृथिवी

उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए
पंकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहि
णिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण अ
संखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्प
भाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो
सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगु
णा । दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छि
मेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहि
णउत्तरेण पुरच्छिमेण संखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी
देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा , दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यो द्वितीयायाः शर्कराप्रभपृथिव्या नैर
यिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या नैरयिकाः
पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिकाः, दक्षिणेन
विशेषाधिकाः, उत्तरेण विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण संख्येयगुणाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिकाः । दिगनुपा
तेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवाः पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः । दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवाः पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

वाणमतरादेवा पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण विसेसाहिया, दिसानुवाण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण, उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसानुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दिसानुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असं

काः उत्तरेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवाः पूर्वपश्चिमेन दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सौधर्मे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा एशाने कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सनत्कुमारे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका ब्रह्मलोके देवाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा लान्तके कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासं

खेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखे० तेण पर यज्जसमोवयन्नगा समणाउसो! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा, पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दार १। एएसिण भंते! नेरइयाण तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय पचगइसमासेण कयरे कयरेहितो अप्पाया यज्जयावा तुल्लावा यिसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असखेज्जगुणा देवा असखेज्जगुणा सिद्धा अण तगुणा तिरिक्खजोणिया अन तगुणा। एएसिण भंते! णेरइयाण तिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेण कयरे कयरेहितो अप्पावा यज्जयावा तुल्लावा यिसेसाहियाया? गोयमा! सव्वत्थोया मणुस्सीत मणुस्सा असखेज्जगुणा। णेरइया असखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीत असखेज्जगुणा

ख्यगुणाः, दिगनुपातेन सवस्तोका देवा सहस्रारे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासङ्ख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सवस्तोका देवा सहस्रारे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासङ्ख्येयगुणाः, तत पर बहुसमोपपन्नकाः श्रमणायुष्मन्। दिगनुपातेन सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वेण सङ्ख्येयगुणाः पश्चिमेन विशेषाधिकाः, द्वारम्। १। एतयां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां देवानां सिद्धानाञ्च पञ्चगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वा? गौतम! सवस्तोका मनुष्या नैरयिका असङ्ख्येयगुणा देवा असङ्ख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणाः तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः। एतेषां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां तिर्यग्योनिकीनां मनुष्याणां मानुषीणां देवानां सिद्धानां चाष्टगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सवस्तोका मानुष्यो मनुष्या असङ्ख्येयगुणाः नैरयिका असङ्ख्येयगुणा तिर्यग्योनिक्योऽसङ्ख्येयगुणा देवा असङ्ख्येयगुणा देव्यः सङ्ख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणा तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः। द्वारम्। २॥ ए

ता । देवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दार २ । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अ० सइंदिया वि० । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे

षां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिन्द्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका त्रीन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणाः सेन्द्रिया विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्या

कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! सइंदियाण पज्जत्ताप ज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्तगा असं०। एएसिण भंते ! बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। एएसिण भंते !

प्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्याप्तकाश्चतुरिन्द्रियाः पञ्चेन्द्रिया पर्याप्तका वि शेषाधिका त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रियाः पर्याप्तकाः सख्येय गुणाः । एतषा भदन्त ! सेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सेन्द्रिया अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सेन्द्रियाः सख्येयगुणाः । एतेषा भदन्त ! एकेन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषा भदन्त ! द्वीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौत म ! सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः, एतेषां भदन्त ! त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तकापर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ सर्वस्तो

ठ । देवा असखेज्जगुणा । देवीउ सखेज्जगुणाउ सिद्धा अणतगुणा तिरिक्खजोणिया अणतगुणा दार २ । एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पचिंदियाण अणिंदियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणतगुणा एगिंदिया अ० सइंदिया वि० । एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पचिंदियाण अपज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाणं तेइंदियाण चउरिंदियाण पचिंदियाण पज्जत्तगाण कयरे

तया भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिन्द्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका त्रीन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणाः सेन्द्रिया विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्या

याण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अकाइ याण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढवि काइया विसेसाहिया , आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणंतगुणा , वणस्सइकाइया अणंतगुणा , सकाइया विसेसाहियावा । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कय रेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा , तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखे ज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

पर्याप्तका विशेषाधिकाः । द्वारम् । ३ । एतषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकानां तेजस्कायिकाना वायुकायिकाना वन स्पतिकायिकाना त्रसकायिकानामकायिकाना कतरे कतरेभ्यो ऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका तेजस्कायिका असंख्येयगुणाः पृथि वीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सकायिका विशेषाधिकाः । एतेषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकानां तेजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि कानामपर्याप्तकानां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका तेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणा पृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणा सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकानां तेजस्कायिकाना वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि

चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पचेंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदिया पज्जत्तगा पचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दार ३ । एएसिणं भंते ! सकाइ

चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! चतुरिन्द्रियाणां पर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्या० कतरे० अल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे० अल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सेन्द्रियाः

याण पुढयिकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अकाइ
याण कयरे कयरेहितो अप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाइया तेउकाइया असखेज्जगुणा, पुढवि
काइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणतगुणा,
वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढयिकाइयाण
आउकाइयाण तेउकाइयाण याउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कय
रेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखे
ज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया
अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

पर्याप्तका विशेषाधिकाः । द्वारम् । ५ । एतषां भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकाना वन
स्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामकायिकाना कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका तेजस्कायिका असंख्येयगुणा। पृथि
वीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सकायिका
विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि
कानामपर्याप्तकानां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका तेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका
अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणाः सकायिका अपर्याप्तका
विशेषाधिका । एतेषा भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकानां तेजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायि

एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण श्राउकाइयाण तेउकाइयाणं वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा श्रसंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया श्राउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता श्रणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया श्रपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! पुढविकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया श्रपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। एएसिण भंते ! श्राउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा श्राउकाइया श्रप

कानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका त्रसकायिकाः पर्याप्ताः तेजस्कायिकाः पर्या० असंख्येयगुणा पृथिवीका
यिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः सकायिका पर्याप्त
का विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकाः सकायिका पर्याप्त
काः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ भ्यो अल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोकाः सकायिका अपर्याप्त
कायिका अपर्या० पर्या० संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोकाः पृथिवी
अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका अप्कायिका
[illegible] गौतम । सर्वस्तोका तेजस्का

ज्जत्तगा, श्राउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! तेउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया श्रपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा एएसिण भंते ! वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ काइया श्रपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज त्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! तसकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा ४ गोय मा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्ज० । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण श्राउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखे ज्जगुणा, तेउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा पुढविकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, श्राउकाइया श्र

यिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः । एतषा भदन्त ! वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तो का वायुकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः । एतषा भदन्त ! वनस्पतिकायिकाना पर्या० २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सवस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः । एतषा भदन्त ! त्रसकायिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सवस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सकायिकाना पृथिवीकायिकानामप्कायिकानां तेजस्का यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुकावा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाणं वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! पुढविकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। एएसिण भंते ! आउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

कायानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका त्रसकायिकाः पर्याप्तका तेजस्कायिकाः पर्या० असंख्येयगुणा पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अनन्तगुणा सकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः। एतयां सदस्त। सकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकाः सकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तका संख्येयगुणाः। एतेषा सदस्त। पृथिवीकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतर २ भ्यो अल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका अपर्या० पर्या० संख्येयगुणाः। एतयां सदस्त। पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः। एतेषां सदस्त। तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम । सर्वस्तोका तेजस्का

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण भंते । तेउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा एएसिण भंते! वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पाया ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वाउ काइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज त्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते । तसकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ गोय मा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्ज० । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखे ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अ

यिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तका सङ्ख्येयगुणाः । एतपा भदन्त । वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तो का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः । एतपा भदन्त । वनस्पतिकायिकाना पर्या० २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सङ्ख्यगुणा । एतेषां भदन्त । त्रसकायिकाना पर्याप्ता २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः । एतपां भदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकानामप्कायिकाना तेजस्का यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना त्रसकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुकावा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि
काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,
अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्त
गा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइ
याण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहितो
अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया
विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंत
गुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहु
मआउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुम

गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा तेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अपर्याप्तका वि
शेषाधिका अप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका तेजस्कायिकाः पर्याप्तका संख्येयगुणाः पृथिवीकायि
काः पर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिका पर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तका वनस्पतिकायिका अनन्त
गुणाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका सकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथि
वीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा
४ ? गौतम । सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !
वणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमनिगोदाण अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !
सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउका०
अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा अ
सखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिण
भंते ! सुहुमपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्ज
त्तगाण सुहुमवाउकाइयापज्जत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्ताण सुहुमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय
रेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तगा वि
सेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहु
मनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसा
हिया दार ३ । एएसिण भंते ! सुहुमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिका
पर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकापर्याप्तानां सूक्ष्मतेजस्कायापर्याप्तकानां सूक्ष्मापर्याप्तवायुकायिकानां सूक्ष्मापर्याप्तवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मापर्या
प्तनिगोदानां कतरे २ भ्योऽल्पावा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्याप्ता तेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अ० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका
अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अ० विशेषाधिका सूक्ष्मनिगोदा अ० असंख्यगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अ० अनन्तगुणा सूक्ष्मा
अप० विशेषाधिका । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायपर्याप्तानां सूक्ष्माप्कायिकपर्या०कानां सूक्ष्मतेजस्कायिकपर्या०कानां सू

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, पुढवि
काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया,
अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्त
गा सखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइ
याण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो
अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया
विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणत
गुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहु
मआउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुम

...तम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा त्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अपर्याप्तका वि
...यिका अप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका तेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पृथिवीकायि
...ः पर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तका वनस्पतिकायिका अनन्त
...ः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका सकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथि
...कायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा
...? गौतम । सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः

सखेज्ज० । एएसिण भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणतगु

संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मनिगोदा अपर्या०काः पर्या०काः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्या०काः संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

थ्यपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो थ्यप्पावा४ ? गोयमा ! सद्युत्योवा सुहुमपुढविकाइया थ्यपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहुमथ्याउकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे२ हितो थ्यप्पावा४ गोयमा ! सद्युत्योवा सुहुमथ्याउकाइया थ्यपज्जत्तया, सुहुमथ्याउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो थ्यप्पावा४ ? गोयमा ! सद्युत्योवा सुहुमतेउकाइया थ्यपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। एएसिण नते! सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे२ हितो थ्यप्पावा ४ ? गोयमा ! सद्युत्योवा सुहुमवाउकाइया थ्यपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

क्ष्मवायुकायिकपर्या०कानां सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्या०कानां सूक्ष्मनिगोदप०कानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्का यिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः प० विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदाः प० असंख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः प० अनन्तगुणाः सूक्ष्माः पर्या०काः विशेषाधिकाः । द्वारम् । ४ ॥ एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां पर्या०पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्या०काः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्या०काः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माप्कायानामपर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्या०काः सं ख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मतेजस्कायपर्या०अप०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्या०काः संख्येयगु णाः । एतेषां सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्या०का वायुकायिकाः पर्याप्ताः

सखेज्ज० । एएसिण भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो अप्पाया४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणतगु

संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्या०का संख्येयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मनिगोदा अपर्या०काः पर्या०काः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्या०काः संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिण भंते! सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

र्मवायुकायिकपर्याप्तकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्याप्तकानां सूक्ष्मनिगोदप०कानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदाः प० असंख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः प० अनन्तगुणाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः । द्वारम् । ४ ॥ एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्तकाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मतेजस्कायपर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्याप्तका वायुकायिकाः पर्याप्तकाः

सखेज्ज० । एएसिण भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम आउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणतगु

संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्म

णा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे२ हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बादरनिगोया असंखेज्जगुणा , बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा , बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि

निगोदा अप० असंख्यगुणाः सूक्ष्मनिगोदाः पर्या० संख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अप०का अनन्तगुणाः सूक्ष्मा अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्म वनस्पतिकायिकाः पर्या० संख्यगुणाः सूक्ष्माः पर्या०का विशेषाधिकाः । एतयोः भदन्त । बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिका ना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा बादरनिगोदा असंख्यगुणा बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा बादराप्कायिका असंख्यगुणा बादरवायुकायिका असंख्यगुणा बादरवन स्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । बादरपर्याप्तानां बादरापर्या०पृथिवीकायिकानां बादरापर्या० अप्कायिकानां

गोदा अपज्जत्तगाण बादरतसकाइयाअपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि सेसाहियावा ? गोयमा । सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज गुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअप ज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिण भंते ! बादरपज्जत्तयाण बादरपुढविकाइयाण पज्जत्तयाण, बादरआउ काइयाण पज्जत्तयाण बादरतेउकाइयपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयापज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयाण पज्ज त्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाण बादरनिगोदपज्जत्तयाण बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया प

बादरापर्या० तेजस्कायिकानां बादरापर्या० वायुकायिकानां बादरापर्या०वनस्पतिकायिकानां बादरापर्या० प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकानां बादरनि गोदानामपर्या०कानां बादरापर्या० त्रसकायिकानां कतरे २ अल्पाऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्या०का बादरतेजस्कायि का अप० असंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अप० असंख्येयगुणा बादरनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा बादराप्कायिका अप० असंख्येयगुणा बादरवायुकायिका अप० असंख्येयगुणा बादरवनस्पतिकायिका अपर्या० अनन्तगुणा बा दरापर्या०का विशेषाधिकाः । २ । एतेषां भ० ! बादरपर्या०कानां बादरपृथिवीकायपर्याप्तकानां पर्याप्तबादराप्कायानां पर्या० बादरतेजस्कायिका नां पर्याप्तबादरवायुकायानां पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तबादरनिगोदानां पर्याप्तबादरत्रस

णा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य कयरे२ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बादरनिगोया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि

निगोदा अप० असंख्यगुणाः सूक्ष्मनिगोदा पर्या० संख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अप०का अनन्तगुणाः सूक्ष्मा अपर्या०का विशेषाधिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्या० संख्येयगुणाः सूक्ष्माः पर्या०का विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा बादरनिगोदा असंख्यगुणा बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा बादराप्कायिका असंख्यगुणा बादरवायुकायिका असंख्यगुणा बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! बादरपर्या०कानां बादरापर्या०पृथिवीकायिकानां बादरापर्या० अप्कायिकानां

बादरतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बाद रवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्ज त्तगा । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते । बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । बादरवणस्सइकाइ या अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरव णस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा । बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ।

यिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्यगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तो का बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे क तरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरवनस्प तिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पति कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्व स्तोका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरनिगो

ज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरा पज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसि णं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा । बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसि णं भंते !

कायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्याप्तबादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा बादराः पर्याप्तका विशेषाधिकाः । ३ । एतेषां भदन्त ! बादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादराः पर्याप्तका अपर्या० असंख्येयगुणाः । एतेषां भद० ! बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०णां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ताः १ बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादराप्कायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादराप्का

बादरतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बाद
रवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्ज
त्तगा । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ ण
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । बादरवणस्सइकाइ
या अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे
कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरव
णस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरनिगोदाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहिंतो
अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा । बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ।

यिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तो
का बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे क
तरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम । सर्वस्तोका बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरवनस्प
तिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पति
कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्व
स्तोकाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । बादरनिगो

एएसिण न्नंते ! यादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो ख्रप्पाया ४ ? गोयमा ! सह्न्योवा यादरतसकाइया पज्जत्तगा । यादरतसकाइया ख्रपज्जत्तगा ख्रसखेज्जगुणा४ । एएसिण न्नते! यादराण वादरपुढविकाइयाण यादरख्राउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण यादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो ख्रप्पाया वज्ञया वा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्युत्थोवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वाद रतसकाइया पज्जत्तया ख्रसखेज्जगुणा २ । यादरतसकाइया ख्रपज्जत्तया ख्रसखिज्जगुणा ३ । यादरपत्तेय वणस्सइकाइया पज्जत्तगा ख्रसखेज्जगुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जत्तगा ख्रसखेज्ज० ५ । वादरपुढविकाइ या पज्जत्तगा ख्रसखेज्जगुणा ६ । वादरख्राउकाइया पज्जत्तगा ख्रसखेज्जगुणा ७ । यादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरनिगोदाः पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असंख्येयगुणाः । एतया भदन्त । बादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । ४ । एतया भदन्त । बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः २ । बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्या०बादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्या०बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्या०बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ ।

त्तगा असंखिज्जगुणा ८। बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइका

इया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १०। बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११। बादरपुढविकाइया

अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३। बादरवाउकाइया

अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसा

हिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९।

बादरा विसेसाहिया २०। एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउ

काइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं

बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १०। अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११। अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगु

णाः १२। अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणाः १३। अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः १४। पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५।

पर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १६। अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १७। अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १८। बादरा विशेषाधि

का १९। एतेषां भदन्त। सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिका

यिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायि

कानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे असंख्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका बादरत्र

सकायिका १। बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः २। प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३। बादरनिगोदा असंख्यगुणा ४। बाद

एएसिणं भंते ! बादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसिणं भंते ! बादराण बादरपुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण बादरनिगोदाण बादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । बादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्ज

दानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरनिगोदाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । ४ । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः २ । बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्या०बादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्या०बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्या०बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ ।

पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९। बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९। बादरा विसेसाहिया २०। एएसिण भंते। सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाण बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवण

स्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८। बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १०। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १८।

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १०। अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११। अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा १२। अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणाः १३। अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४। पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५। पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १६। अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १७। अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १८। बादरा विशेषाधिका १९। एतेषां भदन्त। सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः १। बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः २। प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३। बादरनिगोदा असंख्यगुणा ४। बाद

स्सइकाइयाण यादरनिगोदाणं यादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा? ? गोयमा ! सव्वत्योवा यादरतसकाइया १ । यादरतेउकाइया श्रसस्खेज्जगुणा पत्तेयसरीरयादरयणस्सइकाइया श्रसस्खेज्जगुणा । यादरनिगोदा श्रसस्खिज्जगुणा । यादरपुढयिकाइया श्रसस्खेज्जगुणा ५। यादरश्राउकाइया श्रसस्खेज्जगुणा यादरयाउकाइया श्रसस्खेज्जगुणा । सुज्ञमतेउकाइया श्रसस्खेज्जगुणा । सुज्ञमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुज्ञमश्राउकाइया यिसेसाहिया । सुज्ञमयाउकाइया विसेसाहिया । सुज्ञमनिगोदा श्रसस्खेज्जगुणा । यादरयणस्सइकाइया श्रणतगुणा यादरा विसेसाहिया । सुज्ञमयणस्सइकाइया श्रसस्खेज्जगुणा १५ । सुज्ञमायिसेसाहिया १ । एएसिण भते ! सुज्ञमश्रपज्जयाण सुज्ञमपुढविकाइयाण श्रपज्जत्तगाण सुज्ञम श्राउकाइया श्रपज्जत्तयाण सुज्ञमतेउकाइयाण श्रपज्जत्तयाण सुज्ञमयाउकामा श्रपज्जत्तयाण सुज्ञमयण स्सइकाइयाण श्रपज्जत्तयाण सुज्ञमनिगोदा श्रपज्जत्तयाण यादरा श्रपज्जत्तयाण यादरपुढविकाइया श्रप

रपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः ५। बादराप्कायिका असंख्यगुणाः ६। बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः ७। सूक्ष्मतेजःकायिका असंख्यगुणाः ८। सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९। सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १०। सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः ११। सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः १२। बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १३। बादरा विशेषाधिकाः १४। सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १५। सूक्ष्मा विशेषाधिकाः १६। एतेषां भदन्त। सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानामपर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानां सूक्ष्मवायुकायिकानामपर्याप्तकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां सूक्ष्मनिगोदानामपर्याप्तकानां बादरापर्याप्तकानामपर्याप्तबादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तबादरवायुकायिकानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तप्रत्येकशरीर बादर

ज्जत्तयाण बादरआउकाइयअपज्जत्तयाण बादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयअपज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण बादरनिगोदा अपज्ज त्तयाण बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरत सकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्ज त्तगा असखेज्जगुणा । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखे० ६ । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अस खेज्जगुणा , सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा , बादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तबादरनिगोदानां अपर्याप्तबादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका अपर्याप्तबा दरत्रसकायिका १ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३ । अपर्याप्तबा दरनिगोदा असंख्यगुणाः ४ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा ५ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्यगुणाः ६ । बादरवायुकायिका अप र्याप्तका असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषा धिकाः १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बा दरा अपर्या०का विशेषाधिका अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा अपर्या०का सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेषां भदन्त । सूक्ष्मपर्या०कानां

विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसि णं भंते! सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणं य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया अस० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइ

सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्या०कानां पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०सूक्ष्मनिगोदानां बादरपर्या०कानां पर्या०बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०बादराप्कायिकानां पर्या०बादरतेजस्कायिकानां पर्या०बादरवायुकायिकानां पर्या०बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०बादरनिगोदानां पर्या०बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिकाः पर्या०बादरत्रसकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०बादरनिगोदा असंख्येयगुणाः पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०बादराप्कायिका असंख्येयगुणाः पर्या०बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्म

या पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखगुणा। सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३। एएसिणं भंते! सुहुमाणबादराणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तगा असंखगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमपुढविकाइयाण बादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तया बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमआउकाइयाण बादरआउ

वायुकायिका विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा सूक्ष्माः पर्या०का विशेषाधिकाः ३। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां बादराणांच पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादराः पर्या०का अपर्या०का बादरा असंख्यगुणा सूक्ष्मा अपर्या०का असंख्यगुणा सूक्ष्माः पर्या०काः संख्यगुणा। एतेषां भदन्त! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका संख्यगुणाः। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माप्कायिकानां बादराप्कायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादराप्का

काइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तया बादरआउकाइय अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण बादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमवाउकाइयाण बादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असंखे० । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया असंखगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !

यिका अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्माप्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मतेजस्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिका अपर्या०बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां बादरवायुकायिकानां च पर्या०प० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरवायुकायिका अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अपर्या०बादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा

सम्रुत्योवा यादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया ; यादरवणस्सइकाइया ञ्चपज्जत्तया ञ्चसखिज्जगुणा , सुज्ञम वणस्सइकाइया ञ्चपज्जत्तया ञ्चसखिज्जगुणा । सुज्ञमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा । एएसिण न्नते ! सुहुमनिगोदाण यादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो ञ्चप्पावा४ ? गोयमा ! सम्रुत्योवा याद रनिगोदा पज्जत्तया , यादरनिगोदा ञ्चपज्जत्तया ञ्चसखे० , सुज्ञमनिगोदा ञ्चपज्जत्तया ञ्चसखिज्जगुणा , सुज्ञमनिगोदा पज्जत्तया सखेज्जगुणा ४ । एएसिण न्नते ! सुज्ञमाण सुज्ञमपुढयिकाइयाण सुज्ञमञ्चाउका इयाण सुज्ञमतेउकाइयाण सुज्ञमवाउकाइयाण सुज्ञमवणस्सइकाइयाण सुज्ञमनिगोदाण यादराण बादर पुढविकाइयाण यादरञ्चाउकाइयाण यादरतेउकाइयाण यादरवाउकाइयाण यादरवणस्सइकाइयाण पत्ते यसरीरयादरवणस्सइकाइयाण यादरनिगोदाण यादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे कयरेहितो ञ्चप्पा वा४ ? गोयमा ! सम्रुत्योवा यादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । यादरतसकाइया पज्जत्तया ञ्चसखगुणा २

अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः सङ्ख्येयगुणाः । एतपा भदन्त । सूक्ष्मनिगोदाना वादरनिगोदाना पर्या प्तापर्याप्ताना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकाः पर्या०का वादरनिगोदा अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगो दा असख्यगुणाः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाः सख्यगुणाः । एतपा भदन्त । सूक्ष्माणा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना सूक्ष्माप्कायाना सूक्ष्मतेजस्कायिकाना सूक्ष्म वायुकायिकाना सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादराप्कायिकाना वादरतेजस्कायिकाना वादरवा युकायिकाना वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कत रेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तकाः १ । पर्याप्तवादरत्रसकायिका असख्येयगुणा २ । अपर्याप्तवादरत्रसकायिका

यादरतसकाइया श्चपज्जत्तया श्चसंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीयादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया श्चसंखिज्ज
गुणा ४ । यादरनिगोदा पज्जत्तया श्चसंखिज्जगुणा ५ । यायरपुढविकाइया पज्जत्तया श्चसंखेज्जगेणा ६ ।
यादरश्चाउकाइया पज्जत्तगा श्चसंखिज्जगुणा ७ । यादरवाउकाइया पज्जत्तगा श्चसंखेज्जगुणा ८ । यादरतेउ
काइया श्चपज्जत्तया श्चसंखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीयादरवणस्सइकाइया श्चपज्जत्तया श्चसंखेज्ज० १० ।
यादरनिगोदा श्चपज्जत्तया श्चसंखे० ११ । यादरपुढविकाइया श्चपज्जत्ता श्चसंखे० १२ । यादरश्चाउका
इया श्चपज्जत्तया श्चसंखे० १३ । यादरवाउकाइया श्चपज्जत्ता श्चसंखे० १४ । सुहुमतेउकाइया श्चपज्ज
त्तया श्चसंखेज्जगुणा १५ । सुहुमपुढविकाइया श्चपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुहुमश्चाउकाइया श्चप
ज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुहुमवाउकाइया श्चपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया
संखि० १९ । सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमश्चाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१
सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुहुमनिगोदा श्चपज्जत्तया श्चसंखे० २३ । सुहुमनिगो

असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ११ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः १२ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः १३ । अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधि

दा पज्जत्तया सखि० २४ । यादरयणस्सइकाइया पज्जत्तया अणतगुणा २५ । वादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ यादरयणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७ । वादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८ । वादरा विससाहिया २९ । सुज्ञमयणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखि० ३० । सुज्ञमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुज्ञमयणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखे० ३२ । सुज्ञमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३ । सुज्ञमा यिसेसाहिया ३४ दार ४ । एएसिण भते ! जीवाण सजोगीण मणजोगीण ययजोगीण कायजोगीण अजोगीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा यज्ञयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा मणजोगी ययजोगी अ सखेज्जगुणा अजोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी यिसेसाहिया, दार ५ । एएसिण भते ! जीवाण सवेदगाण इत्थीवेदगाण पुरिसवेदगाण नपुसगयेदगाण अवेदगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४

काः १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकाः संख्येयगुणाः १९ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः २० । पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः २१ पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणाः २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः २४ । पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा २५ । पर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः २६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः २७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिका २८ । बादरा विशेषाधिका २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ३१ । पर्याप्ताः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः संख्येयगुणाः ३२ । पर्याप्ताः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः ३३ । सूक्ष्मा विशेषाधिकाः ३४ द्वारम् । ४ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सयोगिनां मनोयोगिनां वाग्योगिनां काययोगिनां अयोगिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा मनोयोगिनो वाग्योगिनोऽसंख्येयगुणा अयोगिनोऽनन्तगुणाः काययोगिनो अनन्तगुणा सयोगिनो विशेषाधिकाः । द्वारम् । ५ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सवेदकानां स्त्रीवेदकानां

बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज
गुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५ । बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६ ।
बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउ
काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १० ।
बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११ । बादरयाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १२ । बादरआउका
इया अपज्जत्तया असंखे० १३ । बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४ । सुहुमतेउकाइया अपज्ज
त्तया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुहुमआउकाइया अप
ज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया
संखि० १९ । सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१
सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३ । सुहुमनिगो

असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका
असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगु
णाः ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ११ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका
असंख्येयगुणाः १२ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः १३ । अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येय
गुणाः १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधि

सम्मामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्म दिठी अणतगुणा मिच्छदिठीअणतगुणा, दार ९ । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयणाणिण ओहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असं० आभिणियोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केवलनाणी अण० । एएसिण भंते ! जीवाण मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणतगुणा । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणियोहियनाणीण सुयनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा सम्यग्मिथ्यादृष्टिनः सम्यग्दृष्टिनोऽनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोऽनन्तगुणाः, द्वारम् । ९ । एतेषां भदन्त । जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञानिना केवलज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त । मत्यज्ञानिनां जीवानां श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषां भदन्त । जीवानां आभिनिबोधिकज्ञानिनां श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिनां मनःपर्ययज्ञानिनां केवलज्ञानिनां मत्यज्ञानिनां श्रुताज्ञानिनां विभङ्गज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मनःपर्ययज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणाः आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनोऽसंख्येयगुणाः केवलज्ञानिनोऽनन्त

? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा , अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया , दार ६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सकसाईणं कोहकसाइणं माणकसाइणं मायाकसाइणं लोभकसाईणं अकसाईणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई माणकसाइ अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया, दार ७ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाणं अलेसाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्जा० अलेसा अणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नीललेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया , दार ८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं

पुरुषवेदकानां नपुंसकवेदकानामवेदकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकाः जीवाः पुरुषवेदकाः स्त्रीवेदकाः संख्येयगुणाः अवेदका अनन्तगुणाः नपुंसकवेदका अनन्तगुणाः सवेदका विशेषाधिकाः द्वार ६ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सकषायिणां क्रोधकषायिणां मानकषायिणां मायाकषायिणां लोभकषायिणां अकषायिणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः जीवा अकषायिणो मानकषायिणोऽनन्तगुणाः क्रोधकषायिणो विशेषाधिका मायाकषायिणो विशेषाधिका लोभकषायिणो विशेषाधिका सकषायिणो विशेषाधिका द्वारम् । ७ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सलेश्यानां कृष्णलेश्यानां नीललेश्यानां कापोतलेश्यानां तेजोलेश्यानां पद्मलेश्यानां शुक्ललेश्यानां अलेश्यानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवाः शुक्ललेश्याः पद्मलेश्याः संख्येयगुणाः तेजोलेश्याः संख्येयगुणाः अलेश्या अनन्तगुणाः कापोतलेश्या अनन्तगुणा नीललेश्या विशेषाधिका कृष्णलेश्या विशेषाधिकाः । द्वारम् । ८ । एतेषां भदन्त । सम्यग्दृष्टीनां मिथ्यादृष्टीनां सम्यग्मिथ्यादृष्टीनां च कतरे कतरे

सम्मामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्म दिठी अणंतगुणा मिच्छदिठीअणंतगुणा, दार ९ । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण सुयणाणीण ओहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असं० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केवलनाणी अण० । एएसिण भंते ! जीवाण मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणा । एएसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

ल्पोऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवाः सम्यग्मिथ्यादृष्टिः सम्यग्दृष्टिनोऽनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोऽनन्तगुणाः, द्वारम् । ९ । एतेषां भदन्त । जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिनां श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिनां मनःपर्यवज्ञानिनां केवलज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त ! मत्यज्ञानिनां जीवानां श्रुताज्ञानिनां विभङ्गज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषां भदन्त ! जीवानां आभिनिबोधिकज्ञानिनां श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिनां मनःपर्यवज्ञानिनां केवलज्ञानिनां मत्यज्ञानिनां श्रुताज्ञानिनां विभङ्गज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मनःपर्यवज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनो ऽसंख्येयगुणा केवलज्ञानिनोऽनन्त

जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि या विभंगनाणी असंखेज्ज० केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि या, विभंगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणंतगु णा, दार १० । एएसिण भंते ! जीवाण चक्खुदंसणीण अचक्खुदंसणीण ओहिदंसणीण केवलदंसणीणय क यरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंस णी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंतगुणा, दार ११ । एएसिण भंते ! जीवाण संजयाण असंजयाण संज यासंजयाण नोसंजयाण नोअसंजयाण नोसंजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संजयासंजया असंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजता नोअसंजता नोसंजतासंजता अणंतगुणा, असंज ता अणंतगुणा, दार १२ । एएसिण भंते ! जीवाण सागारोवउत्ताण अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

गुणा मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो द्वावपि तुल्यावनन्तगुणौ । द्वारम् । १० । एतेषां भदन्त ! जीवानां चक्षुर्दर्शनिनामचक्षुर्दर्शनिनामवधिदर्शनिनां केवलदर्शनिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अवधिदर्शनिनश्चक्षुर्दर्शनिनोऽसंख्यगुणा केवलदर्शनिनोऽनन्तगुणा अचक्षुर्दर्शनिनोऽनन्तगुणाः । द्वारम् । ११ । एतेषां भदन्त ! जीवानां संयतानां असंयतानां संयतासंयतानां नोसंयतानां नोअसंयतानां नोसंयतासंयतानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः संयताः संयतासंयता असंख्यगुणाः नो संयता नो असंयता नो संयतासंयता अनन्तगुणाः असंयता अनन्तगुणाः । द्वारम् । १२ । एतेषां भदन्त ! जीवानां साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्तानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ताः साकारोपयोगयुक्ताः संख्येयगुणाः । द्वारम् । १३ । एतेषां भदन्त ! जीवानामाहार

श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा श्रणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, दारं १३ । एए सिण नते ! जीवाण श्राहारगाण श्रणाहारगाणय कयरे२ हितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा श्रणाहारगा श्राहारगा श्रसखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण नते ! जीवाण नासगाण श्रनासगाणय कयरे कयरेहितो श्रप्पावा वक्कयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नासगा श्रनासगा श्रणतगुणा, दार १५ । एएसिण नते ! जीवाण परित्ताण श्रपरित्ताण नोपरित्ता नोश्रपरित्ताणय कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोश्रपरित्ता श्रणतगुणा श्रपरित्ता श्रणतगुणा, दार १६ । एएसिण नते ! जीवाण पज्जत्ताण श्रपज्जत्ताण नोपज्जत्ता नोश्रपज्जत्ता णय कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगानोश्रपज्जत्तगा श्रपज्जत्तगा श्रणतगुणा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नते ! सुहुमाण बादराण नोसुहुमाण नोबादराणय कयरे२

कानामनाहारकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सवस्तोका जीवा अनाहारका आहारका असख्यगुणाः । द्वारम् । १४ । एतेषा भद न्त । जीवानां भाषकाणामभाषकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम । सवस्तोका जीवा भाषका अभाषका अ नन्तगुणाः । द्वारम् । १५ । एतेषा भदन्त । जीवाना परीत्तानामपरीत्ताना नो परीत्ताना नो अपरीत्ताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सवस्तोका जीवाः परीत्ता नोपरीत्ता नो अपरीत्ता अनन्तगुणा अपरीत्ता अनन्तगुणाः । द्वारम् । १६ । एतेषा भदन्त ! जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ता नां नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्ताना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा नोपर्याप्तका नो अपर्याप्तका अपर्याप्तका अनन्तगुणाः पर्याप्तकाः सख्यगुणाः । एतेषा भदन्त । सूक्ष्माणा बादराणा नोसूक्ष्माणा नो बादराणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा

हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमा नोबादरा, बादरा अणंतगुणा सुहुमा असंखे
ज्जगुणा, दार १८ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सन्नीणं असन्नीणं नोसन्नीणनोअसन्नीणय कयरे कयरे
हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणंतगुणा, असन्नी अणंतगुणा ।
दार १९ । एएसिणं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धियाणय
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया
अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दार २० । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगास
त्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !
धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व

नो सूक्ष्मा नो बादराः, बादरा अनन्तगुणाः सूक्ष्मा असंख्येयगुणाः । द्वारम् । १८ । एतेषां भदन्त ! जीवानां संज्ञिनां असंज्ञिनां नो संज्ञिना नो
असंज्ञिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः संज्ञिनो नोसंज्ञिनो नो असंज्ञिनो अनन्तगुणाः, असंज्ञिनोऽनन्तगुणाः । द्वारम् । १९ ।
एतेषां भदन्त ! जीवानां भवसिद्धिकानामभवसिद्धिकानां नो भवसिद्धिकनोअभवसिद्धिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका
अभवसिद्धिका नोभवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अनन्तगुणा भवसिद्धिका अनन्तगुणाः । द्वारम् २० । एतेषां भदन्त ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाया
काशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय आकाशा
स्तिकाय एते त्रय तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणोऽद्धासमयो द्रव्यार्थतया
ऽनन्तगुणः । एतेषां भदन्त ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्यो

ठयाए अणन्तगुणे पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वठयाए अणंतगुणे । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाण पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्व त्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे पोग्गलत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणे अद्धासमए पदेसठ याए अणतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठाए अणतगुणा । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदे सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्म त्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा । एएसिण भंते । अधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपदे सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदे सठयाए असखिज्जगुण। एतस्सण भंत ! आगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोव एगे आगासत्थिकाए दव्वठयाए सोचेय पदेसठयाए अनतगुणा , एतस्सण भंते !

ऽल्पा वा ? गौतम । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायौ द्वावप्येतौ तुल्यौ प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकौ जीवास्तिकाय प्रदेशार्थतयानन्तगुणः पुद्गलास्ति कायप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणो ऽद्धासमयः प्रदेशार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयानन्तगुणः । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम सर्वस्तोक एको धर्मास्तिकायः प्रदेशार्थतया स एवानन्तगुणः । अस्य भदन्त ! अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुणः । एतस्य भदन्त । आकाशास्तिकायस्य द्रव्यायप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एक आकाशास्तिकायो

जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा१ ? गोयमा । सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सण न्नते । पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए'ण पुच्छिज्जइ पदसाभावा । एएसिण न्नते । धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा१ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएणं तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाएय एएण दोन्निवितुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणतगुण सोचेव पएसठयाए असंखेज्जगुणे

द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । एतस्य भदन्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । एतस्य भदन्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोक- पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणः । अद्धासमयो नपृच्छ्यते प्रदेशाभावात् । एतषा भदन्त । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतर २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोकाः धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणौ जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणः स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणः स एव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणः । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । द्वारम् २९ । एतषां भदन्त । जीवा

अद्धासमए दव्वठपदेसठयाए अणतगुणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणतगुणा दार २१। एएसिण भंते! जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणतगुणा दार २२ । एएसिण भंते ! जीवाण पोग्गलाण अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपएसाण सव्वपज्जवाण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणतगुणा अद्धासमया अणतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणतगुणा सव्वपज्जया अणतगुणा दार २३ । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा उड्ढलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्ज० अहोलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा

नां चरमाणामचरमाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अचरमाश्चरमा अनन्तगुणा । द्वारम् २२ । एतेषां भदन्त ! जीवानां पुद्गलानामद्धासमयानां सर्वद्रव्याणां सर्वप्रदेशानां सर्वपर्यवाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः पुद्गला अनन्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणाः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः सर्वपर्यवा अनन्तगुणाः । द्वारम् २३ । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके ऽसंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्ये

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०

गुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्यः त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिन्योदेव्य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा

अहोलोए सखिज्जगुणाइं तिरियलोए सखिज्जगुणाइं खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं देवीइं उड्ढलोय उड्ढलोए
तिरियलोए असखेज्जगुणाइं तेलुक्के सखेज्जगुणाइं अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणाइं अहोलोए सखे
ज्जगुणाइं तिरियलोए सखिज्जगुणाइं खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए
असखेज्जगुणाइं तेलुक्के सखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तिरियलोए असखिज्जगुणा
अहोलोए असखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासिणीओ देवीओ उड्ढलोए तिरियलोए असखि०,
तेलुक्के सखेज्जगुणाइं अहोलोए तिरियलोए असखेज्ज०, तिरियलोए असखिज्ज० अहोलोए असखिज्ज०
खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असखिज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्ज०
अहोलोए तिरियलोए असखेज्जगुणा अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थो

अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तरा देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोक
तिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो
का वानव्यन्तर्यो देव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्य
ग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके
असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्कदेव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रै
लोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वैमानिका देवा ऊर्ध्व
लोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानु

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जा० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जा०, तेलुक्के असंखेज्जा० अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जा० तिरियलोए संखेज्जा०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०

गुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्यास्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्यस्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः अधोलोके ऽसंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिन्यो देव्य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा

सब्बत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सब्बत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए

[illegible]गुणा अधोलोके सख्येयगुणा तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके सङ्ख्येयगुणा तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येय

याएं वाणमंतरीओ देवीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाओ तेलुक्के संखिज्जगुणाओ अहोलोए
तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइ
सिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखिज्ज
गुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिणीओ देवीओ
उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ तेलुक्के संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहो
लोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए
तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए
असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ वेमाणिणीओ देवीओ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणाओ अ
होलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसंखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएणं

पातेन सर्वस्तोका वैमानिका देवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येय
गुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्ये
यगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोक
तिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रा
नुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येय
गुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये अ

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणास्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्य

ए असं० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण स
व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व
त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलो
ए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व
त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलो
यतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा
चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्व

गुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोके स
ंख्येयगुणाः तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः, त्रैलोक्ये
असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोक
तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोके तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा [तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रि
या जीवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्
लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अ

स्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो वा पंचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज० अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज०। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

धोलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाश्चतुरिन्द्रिया जीवाः पर्याप्तगा ऊर्ध्व लोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रिया त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणाः ति र्यक्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रियाः अपर्याप्तगा त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्ता ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके असंख्येयगु णाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमाः पृथिवीकायिकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिकाः अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाधोलोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः अप्कायिकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः अप्कायिकाः अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः अप्कायिकाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः अधोलोकतिर्यग्

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे
साहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि
सेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे
साहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,
तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो
का अप्कायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके अस
ख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिकाः अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधि
काः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायि
काः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येय
गुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके
असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः अपर्याप्तका

यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता-
णुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ-
संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेज्जगुणा

ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके
विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पर्याप्ता ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्ये-
यगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लो-
के अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्प-
तिकायिका अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके
असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशे-
षाधिका। तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा। त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा। ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया
उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगु
णा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्ज
त्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखे
ज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के
उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए
संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढ
लोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्ज
गुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहो
लोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगु

कायिकाः त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यग्लो
के ऽसंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके
संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्य
ग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः । द्वारम् २४ । अथवा बंधद्वा । जीवानामायुष्यस्य बंध
कानामबन्धकानां पर्याप्तानां अपर्याप्तानां सुप्तानां जाग्रतां समवहतानामसमवहतानां सातावेदकानामसातावेदकानामिन्द्रियोपयुक्तानां नो इन्द्रियो

यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेज्जगुणा

ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्र

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणा पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा दव्वाइ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइ अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइ उड्ढलोए असंखेज्ज० अहोलोए अणंतगुणाइ तिरियलोए संखिज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा दव्वाइ अहोदिसाए उड्ढदिसाए अणंतगुणाइ उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्चच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असंखेज्जगुणाइ दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणाइ पच्चच्छिमेण विसेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिण भंते। परमाणुपोग्गलाण संखेज्जप

विशेषाधिकाः उत्तरे विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणानि अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकानि ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि अधोलोके अनन्तगुणानि तिर्यग्लोके असंख्येयगुणानि दिशानुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि अधोदिशायां ऊर्ध्वदिशायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्यां दक्षिणपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यान्यसंख्येयगुणानि दक्षिणपूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यानि विशेषाधिकानि । एतस्य प्रश्नः । परमाणु पुद्गलानां संख्येयप्रादेशिकानामसंख्येयप्रादेशिकानामनन्तप्रादेशिकानां च स्कन्धानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ? । गौतम । सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया परमाणु पुद्गला द्रव्यार्थतया ऽनन्तगुणाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिका स्कन्धाः द्रव्यार्थतयाः ऽसंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिका स्क

णा । दार २४ । एएसि णं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सातावेदगाणं असातावेदगाणं इंदियउवउत्ताणं नोइंदियउव उत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स बंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगु णा, समोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया, दार २५ । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो

पर्याप्तानां साकारोपयुक्तानामनाकारोपयुक्तानां कतरे २ अल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? । गौतम ! सर्वस्तोका जीवा आयुषः ब न्धको अपर्याप्तका संख्येयगुणाः सुप्ताः संख्येयगुणा आयतः संख्येयगुणाः समवहता संख्येयगुणाः सातावेदकाः संख्येयगुणाः इन्द्रियोपयु क्ता संख्येयगुणाः अनाकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः नो इन्द्रियोपयुक्ताः संख्येयगुणाः विशेषाधिकाः । असातावेदकाः विशेषाधिकाः असमवहता विशेषाधिकाः जाग्रतो विशेषाधिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका आयुष अबन्धकाः विशेषाधिकाः । द्वारम् २५ ॥ क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पुद्गलाः त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः अधो लोके विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पुद्गलाः ऊर्ध्वदिशायामधोदिशायां विशेषाधिकाः उत्तरपूर्वस्यां दक्षिण पश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या असंख्येयगुणाः । दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या विशेषाधिका पूर्वस्यां असंख्येयगुणाः पश्चिमायां विशेषाधिका

कयरे २ हिंतो अप्पावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वठयाए सखेज्जपएसोवगा
ढा पुग्गला दव्वठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा पदेसठयाए
सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जगुणा अ
सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्ग
ला दव्वठयपदेसठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए सखेज्जगुणा
असंखिज्जपएसोगाढो पोग्गला दव्वठयाए असंखेज्जगुणा तचेव पएसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिंण
भंते ! एगसमयठितीयाण संखिज्जसमयठितीयाण असंखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदे
सठयाए दव्वठपदसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला
दव्वठयाए सखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए

प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकाः एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयगुणाः असंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः द्रव्यप्रदेशार्थ तया सर्वस्तोकाः एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः ते चैव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणाः असंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्ते चैव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः । भगवन् ! एकसमयस्थितिकानां संख्येयसमयस्थितिकानामसंख्येयसमयस्थितिकानां पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यप्रदेशार्थतया कतरे० ? । गौतम ! सर्वस्तोकाः एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकाः एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थिति

देसियाण असखिज्जपदेसियाण अणतपदेदियाणय खधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए कयरे२ हिंतो अप्पावा१ गो० । सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए परमाणुपोग्गला दव्वठयाए अ णतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए असखेज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा पदसठयाए परमाणुपोग्गला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया खधा पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व त्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए तचेव पदेसठयाए अणतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपदेसठयाए अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तचेवय पदेसठयाए सखिज्जगुणा असखिज्ज पएसिया खधा दव्वठयाए असखिज्जगुणा तचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगपदेसो गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदसठयाए दव्वठपदेसठयाए

न्धाः प्रदेशार्थतया परमाणुपुद्गला अनन्तगुणाः सङ्ख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः प्रदेशार्थतया सङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः प्रदेशार्थतया असङ्ख्येयगुणाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया ते चैव प्रदेशार्थतया अनन्तगुणाः परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया अनन्तगुणाः सङ्ख्यातप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया सङ्ख्येयगुणाः तचैव च प्रदेशार्थतया सङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्यातप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया च सङ्ख्येयगुणाः त एव प्रदेशार्थतया असङ्ख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! एकप्रदेशावगाढानां सङ्ख्येयप्रदेशावगाढानामसङ्ख्येयप्रदेशावगाढानां च पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च कतरे० । गौतम ! सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया सङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः

अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ सखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया देवा असखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा सखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा सखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा सखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा सखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा सखिज्जगुणा अहेसत्तमाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा छठीए तमाए पुढवीए नेरइया अस० सहस्सारे कप्पे देवा असखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असखिज्जगुणा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया अस० लतए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा बभलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा माहिंदे देवा असखिज्जगुणा सणकुमारे कप्पे

अथ भदन्त ! सर्वजीवाल्पबहुत्व महादण्डक वर्तयिष्यामि सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या मानुष्यः सख्यातगुणा बादरतेजःकायिका पर्याप्तका असख्येयगुणा अनुत्तरोपपातिको देवा असख्येयगुणा उपरितनग्रैवेयका देवा सख्येयगुणा मध्यमग्रैवेयका देवा सख्येयगुणाः अधस्तनग्रैवेयका देवा सख्येयगुणा अच्युत कल्पे देवाः सख्येयगुणा आरणे कल्प देवा सख्येयगुणाः प्राणते कल्प देवाः सख्येयगुणाः आनते कल्पे देवा सख्येयगुणाः अध सप्तमाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा षष्ठतमायां पृथिव्या नैरयिका अस० सहस्रार कल्प देवा असख्येयगुणा महाशुक्र कल्पे देवा असख्येयगुणाः पञ्चमाया धूमप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणाः लान्तके कल्पे देवा असख्येयगुणाः चतुर्थ्या पङ्कप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा ब्रह्मलोक कल्पे देवा असख्येयगुणाः तृतीयस्यां वालुकप्रभाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा माहेन्द्रे देवा असख्येयगुणाः सनत्कुमार कल्प देवा असख्येयगुणाः द्वितीयस्या शर्करप्रभाया पृथिव्यां नैरयिका असख्येयगुणाः सम्मूर्छिममनुष्या असंख्येयगुणाः ईशाने कल्पे देवा

असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला पएसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला दव्वठपएसठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए संखेज्जगुणा तचेव पदेसठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगगुणकालगाण संखिज्जगुणकालगाण असंखेज्जगुणकालगाण अणतगुणकालगाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एव संखेज्जगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वण्णरस गंधा भाणियव्वा, फासाण कक्खडमउयगरुयलहुयाण जहा एगपदेसोगाढाण भाणिय तहा भाणियव्व अवसेसा फासा जहा वण्णा भाणिया तहा भाणियव्वा दार २६ ॥

॥ ॥ ॥

काः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा तएव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्तएव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । एकगुणकालकानां संख्येयगुणकालकानामसंख्येयगुणकालकानामनन्तगुणकालकानां च पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ? । गौतम । यथा परमाणु पुद्गला तथा भणितव्याः एवं संख्येयगुणकालका अपि एवं शेषा अपि वर्णरसगन्धा भणितव्याः । एवं स्पर्शाना कर्कश मृदुकगुरुकलघुकाना यथैकप्रदेशावगाढानां भणितं तथा भणितव्य [illegible] शेषाः स्पर्शाः । यथा वर्णा भणिता [illegible] भणितव्या द्वारम् । २६ ॥

रिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पदिया पज्जत्तयविसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसेसा। पंचिंदिया अपज्ज त्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्ज त्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज गुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरी रबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढवि काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया अप ज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

विशेषाधिकाः त्रीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषा०। पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तकतया विशेषाधिका। त्रीन्द्रिया अप र्याप्ततया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तकतया विशेषाधिका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरनिगोदाः पर्याप्त का असंख्येयगुणाः बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० बादराप्कायिकाः पर्याप्तका अस० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका असं० बादरतेज कायिकाः अपर्याप्तका असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तका अस० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः सख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्या प्तका अस० बादराप्कायिका अपर्याप्तका अस० बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असख्ये० सूक्ष्मतेजःकायिकाः अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मतेजः कायिका अपर्याप्तका अस० सूक्ष्म पृथिवीकायिका पर्याप्तका विशे० सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका अस० सूक्ष्म

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० चउ

ख्ये० ईशाने कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवाः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः भवनवासि देवा असंख्येयगुणा भवनवासि देव्यः संख्येयगुणाः। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषा असंख्येयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० वानव्यन्तरा देवाः संख्येयगुणाः वानव्यन्तर्यो देव्यः संख्येयगुणाः ज्योतिष्का देवा संख्ये० ज्योतिष्का देव्यः संख्ये० खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसकाः संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसकाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसकाः संख्ये० चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका संख्येयगुणाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तकाः

रिंदिया पज्जत्तया असंखेज्ज० पंदिया पज्जत्तायविसेसाहिया वेइंदिया पज्जत्ता विसेसा । पंचिंदिया अपज्ज
त्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया वेइंदिया
अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्ज
त्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज
गुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरी
रबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढवि
काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अप
ज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

विशेषाधिकाः द्वीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तकया विशेषाधिका । त्रीन्द्रिया अप
र्याप्तकया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तकया विशेषाधिकाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरनिगोदाः पर्याप्त
का असंख्येयगुणाः बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० बादराप्कायिकाः पर्याप्तका असं० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका असं० बादरतेज
स्कायिकाः अपर्याप्तका असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तका असं० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः संख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्या
प्तका असं० बादराप्कायिका अपर्याप्तका असं० बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० सूक्ष्मतेजस्कायिकाः अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका
अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म
पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्जा० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्जा० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्जा० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्जा० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्जा० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्जा० चउ

असं० ईशाने कल्पे देवाः असंख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवाः असंख्येयगुणाः भवनवासिनो देवाः असंख्येयगुणाः भवनवासि देव्यः संख्येयगुणाः । अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः असंख्येयगुणाः खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० वानव्यन्तरा देवाः संख्येयगुणाः वानव्यन्तर्यो देव्यः संख्येयगुणाः ज्योतिष्का देवाः संख्ये० ज्योतिष्का देव्यः संख्ये० खेचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुंसकाः संख्ये० चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तकाः

रिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसेसा । पंचिंदिया अपज्ज
त्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया
अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्ज
त्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज
गुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरी
रबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढवि
काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरताउकाइया अप
ज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

विशेषाधिकाः द्वीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका । त्रीन्द्रिया अप
र्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरनिगोदाः पर्याप्त
का असंख्येयगुणाः बादरपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तका असंख्ये० बादराप्कायिकाः पर्याप्तका असं० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका असं० बादरतेज
कायिकाः अपर्याप्तका असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तका असं० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः असंख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्या
प्तका असं० बादराप्कायिका अपर्याप्तका असं० बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० सूक्ष्मतेजःकायिकाः अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका
अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मतेजःकायिका पर्याप्तका असं० सूक्ष्म
पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म

साहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्ज० सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्त गा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणि गोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडिय सम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंत गुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अप ज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरपज्जत्तया विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्ज त्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुम पज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहिया भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण स्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा वि सेसाहिया ॥ पण्णवणाए भगवईए बज्झवहुअप्पबहु सम्मत्त ॥ ३ ॥ ॥ ॥

निगोदाः पर्याप्तकाः संख्ये० अभवसिद्धिकाः अनन्तगुणाः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टिका अनन्त० सिद्धा अन० बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तगा अनं० बादरपर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरा विशेषाधिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशे० सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्ता संख्ये सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्मा विशेषा० भवसिद्धिका विशेषाधिका निगोदा जीवा विशे० वनस्पति जीवा विशे० एकेन्द्रिया विशे० तिर्यग्योनिका विशे० मिथ्यादृष्टयो विशेष० अविरता विशे० छद्मस्था विशेष० सयोगिनो विशे० संसारस्था विशे० सर्वे जीवा विशेषाधिकाः ॥ प्रज्ञापनाया भगवत्यां श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगणि शिष्य वाचनाचार्य विरचिते बालावबोधानुसारी ... ॥

साहिया सुक्कमश्राउकाइया श्रपज्जत्तया विसेसाहिया सुक्कमश्राउकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्कम तेउकाइया पज्जत्तगा श्रसंखिज्ज० सुक्कमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्कमश्राउकाइया पज्जत्त गा विसेसाहिया सुक्कमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्कमणिगोदा श्रपज्जत्ता श्रसंखे० सुक्कमणि गोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा श्रभवसिद्धिया श्रणंतगुणा पडिवडिय सम्मादिठी श्रणंतगुणा सिद्धा श्रणंत गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा श्रणंतगुणा वादरपज्जत्ता विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया श्रप ज्जत्तया श्रसंखिज्जगुणा वादरपज्जत्तया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुक्कमवणस्सइकाइया श्रपज्ज त्तया श्रसंखेज्जगुणा सुक्कमा श्रपज्जत्तया विसेसाहिया सुक्कमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुक्कम पज्जत्तया विसेसाहिया सुक्कमा विसेसाहिया भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण स्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छादिठी विसेसाहिया श्रविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा वि सेसाहिया ॥ पन्नवणाए भगवईए महादंडयपदं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥

निगोदाः पर्याप्ताः असं० अभवसिद्धिका अनन्तगुणाः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टिका अनन्त० सिद्धा अन० बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्ता अन० बाद रपर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरा विशेषाधिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अ० सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशे० सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्ताः सर्वे सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्मा विशेषा० भवसिद्धिका विशेषाधिका निगोदा जीवा विशे० वनस्पति जीवा विशे० एकेन्द्रिया विशे० ति र्यग्योनिका विशे० मिथ्यादृष्टयो विशेषा० अविरतया विशे० छद्मस्था विशेषा० सयोगिनो विशे० संसारस्था विशे० सर्वे जीवा विशेषाधिकाः ॥ प्रज्ञापनायां भगवत्यां श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगणि [illegible] विरचितो [illegible] ॥